सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 215, नई दिल्ली, रविवार 12 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

"सफल मनुष्य वही है जो सभी के हितों का ध्यान रखता है. स्वार्थी व्यक्ति सिर्फ स्वंय के हितों का ध्यान रखते हैं."

03 पालम यूजीआर बंद होने के कारण एनडीएमसी क्षेत्र में जलापूर्ति प्रभावित रहेगी। 06 दीपावली: प्रकाशों और जीवन के गहरे पाठ 08 झारखंड के मंत्री इरफान के बेटे के 'करामात' पर राचीं उपायुक्त ने लिया संज्ञान

तिलकनगर दिल्ली में दुकानदारों द्वारा पटरी और सड़क पर अवैध कब्जा और कोई बोलने रोकने और अवैध कब्जे को खाली कराने वाला नहीं, आखिर क्यों?

संजय बाटला

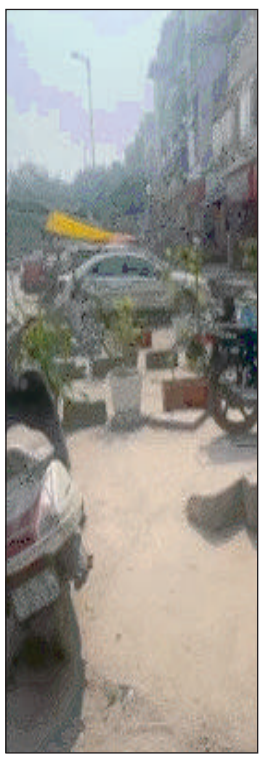

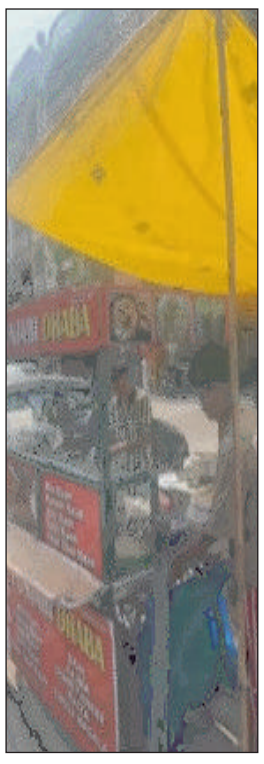

नई दिल्ली। दिल्ली के तिलक नगर थाने की ठीक सामने मुख्य सड़क पर बनी मार्किट के दुकानदारों ने बेख़ौफ़ होकर सरकारी संपत्ति पर अवैध कब्जा कर रखा है जो आम जनता को तो नजर आ रहा है पर पीडब्ल्यूडी, सीपीडब्ल्यूडी, दिल्ली यातायात पुलिस, एमसीडी और दिल्ली पुलिस को नज़र नही आता आखिर क्यों ? कब दिल्ली की जनता को ऐसे अवैध कब्जे से मुक्ति मिलेगी और कौन दिलवाएगा एक बड़ा सवाल ?

यहां लोगों ने अपने दुकान परिसर का सामने कब्जे के लिए लोहे की रस्सियां तक लगा रखी है जैसे उन्होंने इस जगह को खरीद रखा हो। कुछ ने अपनी दुकानों के आगे गमले लगा कर कब्जा कर रखा है और इस सब को देख कर भी सभी विभागों की आंखे है बंद, बड़ा चिंतनीय विषय,

जनता का सरकार और सरकारी एजेंसियों से अनुरोधः- ऐसे अवैध कब्जों से सरकारी संपत्ति का खाली करवाए जिससे जनता को सड़को पर चलने में और अपने वाहनों को सड़क से हटकर लगाने में परेशान नहीं होना पड़े।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
भारत में शिक्षा का अधिकार — कानून क्या कहता है

पिंकी कुंडू

भारत में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, (Right of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009), जिसे संक्षेप में आरटीई एक्ट (RTE Act) कहा जाता है, संसद द्वारा अगस्त 2009 में पारित किया गया और 1 अप्रैल 2010 से लागू हुआ।

यह कानून संविधान के अनुच्छेद 21A पर आधारित है (86वां संविधान संशोधन, 2002) जिसके तहत 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया गया है।

प्रमुख प्रावधान

1. 6 से 14 वर्ष तक के हर बच्चे के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा।

2. निजी स्कूलों में 25% सीटें आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्ल्यूएस) और वंचित समूहों के बच्चों के लिए आरक्षित।

3. केंद्र और राज्य सरकार दोनों की जिम्मेदारी — स्कूलों का ढांचा, शिक्षकों की योग्यता, संसाधन, और शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना।

मुख्य विवाद और वास्तविक स्थिति

1. अल्पसंख्यक स्कूलों की छूट का विवादः- 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने प्रमति एजुकेशनल एंड कल्चरल ट्रस्ट (Pramati Educational & Cultural Trust) मामले में फैसला दिया कि अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान (मदरसों, मिशनरी स्कूलों आदि) को आरटीई की कुछ धाराओं से छूट दी जाएगी। अभी इस फैसले की समीक्षा चल रही है क्योंकि कई विशेषज्ञों का मानना है कि इससे समान शिक्षा का उद्देश्य कमजोर हुआ है।

2. वित्तीय अनियमितता और फंडिंग में देरीः- निजी स्कूलों को सरकार द्वारा मिलने वाली 25% आरक्षित सीटों की राशि समय पर नहीं मिलती या कई बार बहुत कम मिलती है। कई राज्यों ने "प्रति छात्र खर्च" का आंकड़ा वर्षों से अपडेट नहीं किया, जिससे निजी स्कूलों को आर्थिक कठिनाई होती है।

3. आरक्षित सीटों में दाखिले से इनकारः- कई निजी स्कूल 25% सीटों पर ईडब्ल्यूएस बच्चों को प्रवेश देने से मना करते हैं या नियमों में उलझाकर प्रक्रिया कठिन बना देते हैं। कई स्कूल "अल्पसंख्यक" का दर्जा लेकर इस नियम से बचने की कोशिश करते हैं।

4. स्कूलों का ढांचा और गुणवत्ता की कमीः- आरटीई में साफ लिखा है कि स्कूलों में उचित भवन, शौचालय, प्रशिक्षित शिक्षक और आधारभूत सुविधाएं होनी चाहिए।
लेकिन ग्रामीण और गरीब इलाकों में आज भी कई स्कूल इन मानकों को पूरा नहीं करते।

5. राज्य बनाम केंद्र विवादः- कुछ राज्यों ने अपने स्तर पर नियमों में संशोधन कर के RTE की सीमा घटाने की कोशिश की (जैसे महाराष्ट्र में निजी स्कूलों को छूट देने का प्रयास, जिसे हाई कोर्ट ने रोका)। तमिलनाडु में फंड रिलीज़ को लेकर केंद्र और राज्य सरकारों के बीच विवाद हुआ।

6. अदालतों में लंबित मुकदमेः- हर साल हजारों मामले अदालतों में जाते हैं — बच्चों को स्कूल में दाखिला न देना, आरक्षित सीटें खाली रखना, या सरकार द्वारा फंड न देना जैसी समस्याएं।

7. कानून और ज़मीनी हकीकत का फर्कः- कानूनी प्रावधान होना चाहिए वास्तविक स्थिति

1. 6–14 वर्ष तक मुफ्त शिक्षा हर बच्चा स्कूल में लाखों बच्चे अब भी स्कूल से बाहर

2. 25% आरक्षण निजी स्कूलों में आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को प्रवेश प्रवेश से इनकार, प्रक्रिया में देरी, फंडिंग का अभाव

3. शिक्षक और स्कूल इंफ्रास्ट्रक्चर योग्य शिक्षक, साफ-सुथरे स्कूल ग्रामीण इलाकों में बहुत कमी, निरीक्षण कमजोर,

मुख्य कारण जिनसे अंतर आता है

1. कानून बनने के बाद नियम और क्रियान्वयन कमजोर रहते हैं।

2. बजट और संसाधन की कमी – फंडिंग और भुगतान में देरी।

3. निजी स्कूलों की नियंत्रण और जवाबदेही की कमी।

4. भौगोलिक और सामाजिक विविधता – ग्रामीण, जनजातीय, और गरीब इलाकों में पहुंच कठिन।

5. राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी – निगरानी और जवाबदेही कमजोर।

निष्कर्ष: भारत बनाम पड़ोसी देश

भारत ने शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया है — जो दक्षिण एशिया में एक मजबूत कदम है लेकिन "कानून" और "वास्तविकता" के बीच बड़ी खाई है। शिक्षा की गुणवत्ता, समानता और निजी स्कूलों की जवाबदेही अभी भी सबसे बड़ी चुनौतियां हैं।

टोलवा ट्रस्ट (टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत)
tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com
www.tolwa.com

नेहा सिंह: दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रेरणादायी छात्रा, समाजसेवी और युवाओं की सशक्त आवाज़

"युवा ही बदलाव की ताकत हैं, बस उन्हें सही दिशा और विश्वास की ज़रूरत है।" – नेहा सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय की जानी-मानी छात्र नेता और समाजसेवी नेहा सिंह आज युवाओं की आवाज़ और सकारात्मक परिवर्तन का पर्याय बन चुकी हैं। अपने नेतृत्व और समर्पण से उन्होंने छात्र समुदाय और समाज दोनों में एक नई पहचान बनाई है।

नेहा सिंह APNA DU (Community of Delhi University Students), Journey Champs, और Voice for Change Foundation की संस्थापक हैं। इन तीनों संगठनों के माध्यम से वे छात्रों और युवाओं को जोड़ने, अवसर प्रदान करने और आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करने का कार्य कर रही हैं। DU Group की सह-संस्थापक के रूप में नेहा चार सक्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का प्रबंधन करती हैं, जिनके ज़रिए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के हजारों छात्रों को एक मंच पर जोड़ने का कार्य किया है।

नेहा सिंह ने छात्र राजनीति में सक्रिय रहकर अपने साथियों की समस्याओं, अधिकारों और कल्याण के मुद्दों को मजबूती से उठाया है। इसके साथ ही, वे दो गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) के साथ मिलकर समाजसेवा और समुदाय उत्थान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

उनकी सोच स्पष्ट है — "शिक्षा, नेतृत्व और सेवा के माध्यम से ही देश का युवा सशक्त हो सकता है।"

नेहा निरंतर प्रयासरत हैं कि हर छात्र को सही मार्गदर्शन, अवसर और मंच मिले ताकि वे न केवल अपने सपनों को साकार कर सकें, बल्कि समाज में भी योगदान दे सकें।

आज उनकी पहल और दृष्टिकोण से प्रेरित होकर हज़ारों छात्र अपने भीतर के नेता और बदलाव की शक्ति को पहचान रहे हैं।

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ द्वारा 'DTC बचाओ अभियान' छठा दिन

परिवहन विशेष न्यूज

रिपोर्टर पंकज शर्मा, नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन मजदूर संघ का 'DTC बचाओ अभियान' लगातार छठे दिन भी जारी रहा इस अभियान के तहत भारतीय मजदूर संघ के पदाधिकारी और कार्यकर्ता, तथा विधान सभा के विधायकों के अंतर्गत आने वाले DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों ने मिलकर दिल्ली के सभी 70 विधायकों को मांग पत्र देने की कड़ी में आज कोंडली विधानसभा क्षेत्र से विधायक श्री कुलदीप कुमार जी को भी ज्ञापन सौंपा,

ज्ञापन में दी गई मांगों पर विस्तृत चर्चा हुई विधायक कुलदीप कुमार जी ने आने वाले शीतकालीन सत्र में इन मुद्दों को दिल्ली विधानसभा में रखने की बात कही, तथा जो कार्य पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी जी ने दिल्ली चुनाव से पहले कहीं उन्हें पूरा कराने का भी वादा किया, इन मुद्दों को जल्द अगर भारतीय जनता पार्टी की सरकार दूर नहीं करती तो विधायक कुलदीप कुमार जी कांटेक्ट कर्मचारियों के साथ परिवहन मंत्री, तथा दिल्ली की मुख्यमंत्री से इन सभी मुद्दों को जल्द से जल्द दूर कराने का भी वादा किया, इससे कर्मचारियों में काफी उम्मीदों के साथ साथ असमंजस की स्थिति भी बनी हुई है कि उनकी इन समस्याओं का समाधान कब होगा तथा DTC के कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों ने दिल्ली के एक और विधायक **श्री रविकांत उज्जैनवाल जी** तक पहुंचें और उन्हें भी (DTC) दिल्ली परिवहन निगम की गंभीर समस्याओं से अवगत कराकर पत्र सौंपा,

यह अभियान दिल्ली के 70 विधायकों तथा 7 लोकसभा सांसदों को मांग पत्र सौंपे जाने तक चालू रहेगा, अभी तक दिल्ली के लगभग 18 विधायकों तक यह पत्र पहुंच चुके हैं पत्र को लेकर दिल्ली सरकार से DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को बड़ी उम्मीद है कि जल्द उनको जॉब सिक्योरिटी और बेसिक DA ग्रेड PAY प्राप्त होगा तथा दिल्ली की परिवहन व्यवस्था में दिल्ली सरकार की खुद की दिल्ली परिवहन निगम की बसें आयेंगी,

इस अभियान का तहत दिल्ली की जनता की जीवन रेखा डीटीसी बस सेवा को सशक्त बनाना, निगम के कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना तथा दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ करना है,

16/nov/2024 को एक ट्वीट के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र सचदेवा जी ने कहा कि दिल्ली में हमारी सरकार बनते ही एक कमेटी का गठन किया जाएगा जिसमें DTC के सभी कांटेक्ट कर्मचारियों को समान काम समान वेतन दिया जाएगा, सरकार बनने के लगभग 9 महीने बाद भी DTC के कर्मचारियों की समस्या का समाधान ना होने पर उनमें काफ़ी रोष है,

DTC के कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों ने यह कहा कि सरकार अपने मंत्री और विधायकों के लिए डेढ़ लाख रुपए के फोन ले सकती है परंतु कांटेक्ट कर्मचारियों को समान काम का समान वेतन नहीं दे पा रही है, दिल्ली जैसे शहर में आज मात्र 862 रुपए में कोई भी कर्मचारी अपना घर नहीं चला पा रहा है इसलिए उन्हें समान काम समान वेतन व जॉब सिक्योरिटी चाहिए, ऐसे में अगर दिल्ली को चलाने वाली DTC, इलेक्ट्रिक व क्लस्टर बसों में कार्य कर रहे कर्मचारी भारतीय मजदूर संघ जैसे बड़े संगठन के साथ अपनी मांगों को लेकर धरने पर बैठ जाएंगे तो दिल्ली की अर्थव्यवस्था को चलाने वाली मुख्य बिंदु दिल्ली परिवहन निगम एकदम से ठप हो जाएगी, और दिल्ली के लगभग 40 लाख लोगों पर इसका प्रभाव पड़ेगा।

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ प्रदेश कार्यालय अजमेरी गेट दिल्ली 110006

1. अध्यक्षः गूगन सिंह

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

डॉ. राजकुमार यादव का पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु संकट और अवैध पर्यावरणीय विनाश पर विस्फोटक बयान

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। "उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) सभी सम्मानित मिडियाकर्मी/प्रतिनिधि, जागरूक जनता व समस्त समाज के समक्ष आज की सबसे बड़ी विडंबरा की और ध्यानाकर्षण करना चाहती है कि आज, जब हमारी मातृभूमि पर्यावरणीय तबाही की कगार पर खड़ी है, मैं, डॉ. राजकुमार यादव, 'उफ्तत्सा' राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में, इस आपदा के खिलाफ गरजते हुए अपनी आवाज बुलंद करता हूं! पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु संकट अब महज एक चेतावनी नहीं, बल्कि एक युद्ध का ऐलान है—जिसमें वायु, जल और भूमि का लगातार दम घुट रहा है। ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना, सूखा और बाढ़ की बार-बार आने वाली विनाशकारी लहरें, जंगलों की बेधड़क कटाई—ये सब हमारी धरती की चीख हैं! लेकिन इससे भी ज्यादा खतरनाक है रेत और पत्थर की अवैध खनन (जो आज उड़ीसा के राउरकेला जैसे शहर में जारी है) जो नदियों को खोखला कर रही है, बाढ़ को आमंत्रित कर रही है और कृषि भूमि को बंजर बना रही है। साथ ही, फ्लाई ऐश की यत्र-तत्र अनलोडिंग (झारसुगुड़ा बस का आसपास के क्षेत्रों में सर्वाधिक)—जो औद्योगिक कचरे को बिना सोचे-समझे जमीन पर उंडेल रही है, मिट्टी को जहर से भर रही है, जल स्रोतों को दूषित कर रही है और हवा में जहरीले कण फैला रही है। औद्योगिक क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण की स्थिति तो और भी भयावह है—जहां नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, और प्रदूषण फैलाने वाले उद्योग बेखौफ अपनी मनमानी कर रहे हैं।

ट्रक ट्रांसपोर्टर्स के रूप में, हम लाखों सारथी रोजाना इन विनाशकारी दृश्यों से गुजरते हैं: जंगलों की जगह खाली मैदान, अवैध खनन से उखड़ी हुई सड़कें, और फ्लाई ऐश के ढेर जो हवा में उड़कर हमारे फेफड़ों को जला रहे हैं। यह न केवल पर्यावरण का विनाश है, बल्कि हमारी आजीविका और स्वास्थ्य का सीधा हमला है! जंगलों की बेधड़क कटाई से जैव विविधता लुप्त हो रही है, जलवायु असंतुलित हो रही है; अवैध खनन से नदियां सूख रही हैं, भूजल स्तर गिर रहा है; और फ्लाई ऐश की अनियंत्रित अनलोडिंग से मिट्टी बंजर हो रही है, जो कृषि और मानव जीवन को खतरे में डाल रही है। यदि यह सिलसिला जारी रहा, तो हम एक ऐसी दुनिया में जीएंगे जहां सांस लेना मुश्किल, पानी पीना असंभव और जीवन जीना एक सजा बन जाएगा!

अब बस बहुत हुआ! मैं केंद्र और राज्य सरकारों से जोरदार और अटल मांग करता हूं कि तुरंत एक उच्च स्तरीय जांच समिति गठित की जाए। इस समिति में पर्यावरण विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, कानून प्रवर्तक, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रभावित समुदायों के प्रतिनिधि शामिल हों, जो निम्नलिखित पर गहन जांच करें - जंगलों की बेधड़क कटाई और उसके जलवायु प्रभाव।

रेत और पत्थर की अवैध खनन की स्थिति, जो पर्यावरणीय संतुलन को बिगाड़ रही है।

फ्लाई ऐश की यत्र-तत्र अनलोडिंग और उसके कारण होने वाले भूमि, जल तथा वायु प्रदूषण।

वायु, जल, भूमि प्रदूषण, ग्लेशियर पिघलना, सूखा-बाढ़ की घटनाएं तथा औद्योगिक क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण की असफलता।

समिति को 6 महीने के अंदर अपनी विस्तृत अध्ययन रिपोर्ट प्रस्तुत करने का सख्त निर्देश दिया जाए, जिसमें अवैध गतिविधियों पर रोक लगाने की ठोस सिफारिशें, दोषियों पर कार्रवाई की योजना और पर्यावरण पुनर्स्थापना की रणनीति शामिल हो। यह मांग ₹उफ्तत्सा₹ मोर्चा की ओर से लाखों ट्रक ड्राइवरों, परिवहन कर्मियों और आम नागरिकों की सामूहिक पुकार है, जो इस विनाश के प्रत्यक्ष साक्षी हैं। हम चुप नहीं रहेंगे—यदि सरकारें नहीं जागीं, तो हम राष्ट्रव्यापी आंदोलन के माध्यम से इस लड़ाई को सड़कों पर उतारेंगे!

समय कम है, लेकिन इरादा मजबूत है। आएं साथ मिलकर हम एक स्वच्छ, हरा-भरा और न्यायपूर्ण भारत का निर्माण करेंगे—जहां पर्यावरण की रक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता हो!

जो इतिहास में कभी नहीं हुआ उसका नाम है : रत्नत्रय

"वॉइस ऑफ़ जिनशासन" कहे जाने वाले इंदौर नगर के युवा लेखक और वक्ता स्काय किंग आकाश जैन एवं आकाशवाणी उद्घोषक अनुराग जैन के हृदय भूमि में जिनशासन यानी शाश्वत श्रमण संस्कृति की प्रभावना के लिए एक ऐसा बीज प्रस्फुटित हुआ जो "रत्नत्रय रूपी विराट वृक्ष" बन कर अब सारी दुनिया में जिनशासन के मौलिक सिद्धांत रूपी मधुर फलों और विश्व मैत्री रूप की छांव को बाँटने हेतु तैयार है। इस रत्नत्रय टीम के मैनेजर सी.एस. पलाश जैन ने बताया की यह सिर्फ एक कार्यक्रम विशेष नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण विश्व के कौने कौने में जा कर नृत्य - संवाद - संगीत के माध्यम से जैन-धर्म की वैश्विक प्रभावना का एक मंच है। रत्नत्रय शो के स्काय किंग आकाश जैन इसे एक क्रांति कहते हैं, उनके लिए यह जिनशासन को राजनैतिक एवं सामाजिक मजबूती देने वाले भविष्य का केंद्र बिंदु है। पहला शो पूर्ण होते ही सारे भारत वर्ष से अभी तक अनेक संवाद व संदेश रत्नत्रय टीम को प्राप्त हो चुके हैं, हर कोई अपने शहर में इसे आयोजित कराने का सपना बुन रहा है। हमें इस बात की प्रसन्नता हैं इतने बड़े बड़े देश के नामचीन कलाकार हमारे पार्श्वनाथ भगवान की चरण छांव में रह कर पल्लवित हुए हैं। आकाश जैन नसिया जी वाले पारसनाथ भगवान को अपना इष्टदेव मानते हैं और वे इस कार्यक्रम की

सफलता का श्रेय भी प्रभु पार्श्वनाथ की अतुल्य छांव को ही देते हैं। एंकर अनुराग जैन इस शो के विशेष अतिथि हैं, जो नसिया वाले पारस बाबा के परम भक्तों में से एक हैं।

रत्नत्रय : का यह कार्यक्रम 07 अक्टूबर 2025 को आरोन में जो हुआ था । उसे एक शब्द में सिर्फ "नियति जनित चमत्कार" कहा जा सकता है, एक तरफ़ गुरु समर्पण की मिसाल आरोन मध्यप्रदेश और दूसरी तरफ़ हिम्मत ना हारने की पर्याय रत्नत्रय टीम। लगातार बारिश, कार्यक्रम के रद्द हो जाने का डर, पर इसके ऊपर श्रोताओं ज़िद और कलाकारों का धैर्य। आचार्य भगवंत को समर्पित इस शाम ने "परीक्षाओं के जिस गुलदस्ते" से हमारा स्वागत किया, हमने भी "डटे रहने की उस मुस्कुराहट" के साथ उसे स्वीकार किया। 08 बार बारिश आई और गई, दर्शक कुर्सियों की छत बना कर, मंच के नीचे छिपकर, पास के विद्यालय में रूक कर, इंतज़ार करते रहे, पर अपने गुरु को समर्पित इस "महोत्सव" को छोड़कर जाने को तैयार ना हुये, पूज्य महातपस्वी मुनिश्री 108 दुर्लभसागर जी मुनिराज की साधनापूर्ण आशीष सन्निधि में आरोन ने जो पहले कभी ना हो सका, एक ऐसा खुदरंग इतिहास रचा है। इसे शब्दों में बयाँ कर पाना संभव नहीं, पर आरोन में जो हुआ है वह किसी असंभव से कम नहीं। आरोन समाज ने हमें हौसला दिया इसके लिए हमारी पूरी टीम आप सभी के प्रेम का आभार व्यक्त करती है।

कुछ ही समय में देश के महानगरों में "रत्नत्रय" का भव्य मंचन देखने को मिलेगा। आप इस महा महोत्सव की सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। रत्नत्रय : जिनशासन का सांस्कृतिक प्रतिबिंब है, जिसका मूल मंत्र है "वर्धातां जिनशासनं "।

धर्म और समाज को दिशा दिखाने के लिए यहां कार्यक्रम मील का पत्थर साबित होगा।

बिस्तर में मूत्र त्याग....

अक्सर कुछ बच्चे सोते समय बिस्तर पर पेशाब कर देते हैं,जिसके कारण उनके माता-पिता परेशान रहते हैं। इस तकलीफ से पीड़ित बच्चों को कहीं बाहर ले जाने में भी उनको परेशानी होती है। बारिश के दिनों में तो यह बहुत ही ज्यादा तकलीफदेय होता है। कई बार माता-पिता इसके लिए बच्चों को सजा देते हैं। सबके सामने अपमानित करते हैं ताकि बच्चे बिस्तर गीला न करें, लेकिन इन सब से बच्चे के मन में हीनभावना आ जाती है, और उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है। माता-पिता स्वयं दूसरों के सामने शर्मिंदा होते हैं लेकिन इसमें न तो शर्मिंदा होने की जरुरत है न ही बच्चे को सजा देने की ,क्योंकि बच्चा ये सब जान कर नहीं करता है।

सोने से पूर्व ठण्डे पानी से हाथ पैर धुलायें।

सोंठ, काली मिर्च, पीपर, इलायची, एवं सेंधा नमक प्रत्येक का 1-1 ग्राम का मिश्रण 5 से 10 ग्राम शहद के साथ देने से अथवा काले तिल एवं खसखस समान मात्रा में मिलाकर 1-1 चम्मच चबाकर खिलाने एवं पानी पिलाने से लाभ होता है। पेट के कृमि की चिकित्सा भी करें। और काला जीरा लेकर पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण में इतनी ही मिश्री पीसकर मिला लें। यह 2-2 ग्राम चूर्ण रोजाना पानी के साथ खाने से बच्चे का बिस्तर में पेशाब करना बंद हो जाता है।

आंवले को बहुत अच्छी तरह से बारीक पीसकर कपड़े में छानकर चूर्ण बना लें। यह 3-3 ग्राम चूर्ण रोजाना शहद में मिलाकर बच्चों को सुबह-शाम चटाने से बच्चे बिस्तर में पेशाब करना बंद कर देते हैं।

रोजाना 5 मुनक्का खाने से बच्चे का बिस्तर में पेशाब करने का रोग दूर होता है।

सोते समय बच्चों को शहद खिलाने से बच्चों के नींद में पेशाब निकल जाने का रोग समाप्त हो जाता है।

कुछ बच्चे रात में सोते समय बिस्तर में ही मूत्र (पेशाब) कर देते हैं। यह एक बीमारी होती है। सोते समय शहद का सेवन करते रहने से बच्चों का निद्रावस्था में मूत्र (पेशाब) निकल जाने का रोग दूर हो जाता है।

बच्चों को अखरोट खिलाने से बच्चों की रात को सोते समय बिस्तर पर पेशाब करने की आदत खत्म हो जाती है।

लगभग 120 ग्राम राई के चूर्ण को पानी के साथ बच्चे को खिलाने से बिस्तर पर पेशाब करने का रोग खत्म हो जाता है।

अश्वगंधा और जटामांसी को बराबर मात्रा में लेकर पानी में डालकर काफी देर उबालकर काढ़ा बना लें। इस काढ़े को छानकर बच्चे को 3 से 4 दिनों तक पिलाने से बिस्तर में पेशाब करने का रोग समाप्त हो जाता है।

जामुन की गुठलियों को छाया में सुखाकर पीसकर बारीक चूर्ण बना लें। इस 2-2 ग्राम चूर्ण को दिन में 2 बार पानी के साथ खाने से बच्चे बिस्तर पर पेशाब करना बंद कर देते हैं।

10 से 20 मिलीलीटर गोरखमुण्डी (मुण्डी) के पंचांग का रस सुबह-शाम बच्चे को पिलाने से मूत्राशय बिल्कुल साफ हो जाता है और बार-बार पेशाब करने का रोग भी बंद हो जाता है।

लगभग 50 ग्राम सिंघाड़े की गिरी को बारीक पीसकर इसका चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के अन्दर 50 ग्राम खांड मिलाकर यह चूर्ण 1 चम्मच सुबह-शाम बच्चे को पानी से देने से बिस्तर में पेशाब करने के रोग में लाभ होता है।

बबूल की कच्ची फलियों को छाया में सुखाकर, घी में भूनकर उसमें मिश्री मिलाकर 4-4 ग्राम सुबह और शाम गर्म दूध के साथ पीने से बिस्तर पर पेशाब करने का रोग ठीक हो जाता है।

2 मुनक्का के बीज निकालकर उसमें एक-एक कालीमिर्च डालकर बच्चों को दो मुनक्के रात को सोने से पहले 2 हफ्तों तक लगातार खिलाने से बच्चों की बिस्तर पर पेशाब करने की बीमारी दूर हो जाती है।

50 ग्राम कुलंजन को पीसकर शहद में मिलाकर 1 चम्मच सुबह-शाम बच्चे को चटाने से बच्चे के बिस्तर में पेशाब करने का रोग मिट जाता है।

250 मिलीलीटर दूध में 1 छुहारा डालकर उबाल लें। जब दूध अच्छी तरह से उबल जाये और उसके अन्दर का छुहारा फूल जाये तो इस दूध को ठंडा करके छुहारे को चबाकर खिलाने के बाद ऊपर से बच्चे को दूध पिला दें। ऐसा रोजाना करने से कुछ दिनों में ही बच्चों का बिस्तर पर पेशाब करना बंद हो जाता है।

बच्चे को रात को सोते समय पीठ के बल सुलाने की बजाय करवट लेकर सुलाना चाहिए।

यदि बच्चे बिस्तर में पेशाब करते हों तो प्रतिदिन रात को सोते समय 2 छुहारे खाने चाहिए।

सोने से पूर्व एक ग्राम अजवायन का चूर्ण कुछ दिनों तक नियमित रूप से खिलाने से बच्चों का बिस्तर पर पेशाब करने का रोग ठीक हो जाता है।

प्रायः कुछ बच्चों को बिस्तर में पेशाब करने की शिकायत हो जाती है। ऐसे बाल रोगियों को 2 अखरोट और 20 किशमिश प्रतिदिन दो सप्ताह तक सेवन करने से यह शिकायत दूर हो जाती है।

बिस्तर पर पेशाब या बार-बार पेशाब आने पर दो छुहारे दिन में दो बार और सोते समय दो छुहारे दूध के साथ खाने से लाभ होता है।

शहद में शंखपुष्पी के पंचांग का आधा चम्मच चूर्ण मिलाकर आधे कप दूध से सुबह-शाम रोज 6-8 सप्ताह सेवन करना चाहिए।

अतीस का चूर्ण एक ग्राम और बायविडंग चूर्ण दो ग्राम मिलाकर, इसकी एक मात्रा दिन में तीन बार सेवन कराने से रोग में आराम मिलेगा।

तिल और गुड़ को एक साथ मिलाकर बच्चे को खिलाने से बच्चे का बिस्तर पर पेशाब करने का रोग समाप्त हो जाता है। तिल और गुड़ के साथ अजवायन का चूर्ण मिलाकर खिलाने से भी लाभ होता है।

विश्व गठिया दिवस आज

हर साल 12 अक्टूबर को पूरी दुनिया में विश्व गठिया दिवस यानी वर्ल्ड अर्थराइटिस डे मनाया जाता है। यह दिन उन लाखों लोगों के बारे में सोचने का मौका देता है। जो हर रोज़ जोड़ के दर्द, सूजन और चलने-फिरने की तकलीफ से जूझ रहे हैं। गठिया सिर्फ एक बीमारी नहीं है, बल्कि यह कई अलग-अलग तरह की बीमारियों का ग्रुप है जो शरीर के जोड़ और आसपास के हिस्सों को प्रभावित करता है।

विश्व गठिया दिवस का मकसद

==========

इस दिन का मकसद है-लोगों को इस बीमारी के बारे में जानकारी देना, इसके साथ जी रहे लोगों के लिए समझदारी और सहारा बढ़ाना और इलाज की सुविधा को और बेहतर बनाना।

क्यों मनाया जाता है विश्व गठिया दिवस ?

==========

1. जानकारी बढ़ाना

कई लोग गठिया को केवल उम्र बढ़ने से जोड़ते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि यह बीमारी बच्चों, युवाओं और किसी भी उम्र के व्यक्ति को हो सकती है। यह दिन लोगों को सही जानकारी देने और पुरानी धारणाओं को बदलने का अवसर देता है।

2. समझ और अपनापन बढ़ाना

गठिया से पीड़ित लोग अक्सर दर्द और परेशानी को सहते हुए भी खुलकर अपनी स्थिति नहीं बता पाते। इस दिन हम सभी को यह समझना होता है कि उनका जीवन आसान नहीं है, और उन्हें सहानुभूति की ज़रूरत है, न कि तानों की।

3. इलाज और मदद की पहुंच

आज भी बहुत से लोग इलाज से वंचित रह जाते हैं, क्योंकि या तो उन्हें सही जानकारी नहीं मिलती या सही डॉक्टर तक पहुंचना मुश्किल होता है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि सभी को समय पर इलाज और सहारा मिलना चाहिए।

विश्व गठिया दिवस का महत्व

==========

विश्व गठिया दिवस सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि एक मौका है-इस बीमारी को गंभीरता से समझने, लोगों को सही जानकारी देने और यह वादा करने का कि हम किसी को दर्द में अकेला नहीं छोड़ेंगे। अगर हम समय रहते समझदारी दिखाएं, तो जीवन की रफ्तार को दर्द के आगे हारने से बचा सकते हैं।

गठिया के लक्षण

गठिया के प्रकार के आधार पर लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन आमतौर पर प्रभावित जोड़ों में दर्द, सूजन, अकड़न और गति की कम सीमा शामिल होती है।

गठिया का कारण

गठिया कई कारकों के कारण हो सकता है, जिसमें जिनेटिक, उम्र, चोट और ऑटोइम्यून प्रतिक्रियाएं शामिल हैं।

भूत-प्रेत : क्या सचमुच मौजूद हैं या यह केवल कल्पना की उड़ान?

उमेश कुमार साहू

मनुष्य सदियों से अदृश्य शक्तियों के रहस्य में उलझा हुआ है। आकाश, धरती और ब्रह्मांड के रहस्यों को जानने की उसकी जिज्ञासा जितनी गहरी है, उतनी ही गहरी उसकी रुचि भूत-प्रेत और अलौकिक शक्तियों में भी रही है। चाहे वह भारत का ग्रामीण इलाका हो या किसी विकसित देश का आधुनिक नगर, ₹भूत-प्रेत₹ का किस्सा हर जगह किसी न किसी रूप में सुनाई देता है। सवाल उठता है कि क्या ये सिर्फ़ लोककथाएँ और अंधविश्वास हैं या वास्तव में हमारे आसपास कुछ अदृश्य शक्तियाँ मौजूद हैं?

भूत-प्रेत की अवधारणा का उद्भव

भूत-प्रेत की अवधारणा मानव सभ्यता जितनी पुरानी है। प्राचीन काल में जब विज्ञान इतना विकसित नहीं हुआ था, तब प्राकृतिक घटनाओं को भी लोग अलौकिक मानते थे। बिजली कड़कना, तूफान आना या किसी की असामयिक मृत्यु। इन सबको लोग आत्माओं के क्रोध का परिणाम मानते थे। भारत के वेदों और पुराणों में भी ₹प्रेत₹ और ₹पिशाच₹ का उल्लेख मिलता है। माना जाता था कि असमय मृत्यु, अधूरी इच्छाओं या गलत कर्मों के कारण आत्माएँ शांति नहीं पातीं और प्रेत बनकर धरती पर भटकती हैं।

दुनिया भर में भूत-प्रेत की मान्यताएँ

भूतों का विचार केवल भारत तक सीमित नहीं है। चीन में इन्हें ₹हंग लिंग₹, जापान में ₹यूरी₹, यूरोप में ₹घोस्ट₹ और अरब देशों में ₹जिन्न₹ कहा जाता है। यूरोप के महल और किलों में भूत-प्रेत की कहानियाँ आज भी पर्यटकों को रोमांचित करती हैं। वहीं जापान की फिल्मों और कहानियों में सफेद कपड़े पहने लम्बे बालों वाली ₹भूतनी₹ का चित्रण आम है।

भारत में भी अनेक स्थान भूतहा कहे जाते हैं। राजस्थान का ₹भानगढ़ किला₹, दिल्ली का ₹जमाली-कमाली मस्जिद₹, और पश्चिम बंगाल का ₹डाउ हिल₹ ऐसी ही जगहों में गिने जाते हैं जहाँ लोगों ने अजीबो-गरीब अनुभव होने का दावा किया है।

भूत-प्रेत और विज्ञान

विज्ञान भूत-प्रेत की अवधारणा को अलग नज़रिये से देखता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि भूत दिखने या महसूस होने की घटनाएँ अक्सर मनोवैज्ञानिक और भौतिक कारणों से जुड़ी होती हैं।

अंधेरे में मस्तिष्क अक्सर भ्रम पैदा करता है।

डर की स्थिति में व्यक्ति सामान्य आवाज़ों को भी अलौकिक समझ लेता है।

नींद में आने वाली ₹स्लीप पैरालिसिस₹ अवस्था में लोग छाया या आत्मा जैसी आकृति देखने लगते हैं।

कई पुराने भवनों में विद्युत-चुम्बकीय तरंगें भी इंसान के दिमाग पर असर डालती हैं और व्यक्ति को ऐसा लगता है मानो कोई अदृश्य शक्ति मौजूद हो।

इसके बावजूद, विज्ञान आज तक यह पूरी तरह सिद्ध नहीं कर पाया कि आत्मा और परलोक जैसी धारणाएँ केवल कल्पना हैं। यही कारण है कि रहस्य और रोमांच आज भी कायम है।

भूत-प्रेत की कहानियाँ और समाज

भारत के गाँवों में अब भी रात को सुनाई देने वाली अजीब आवाज़ों को लोग ₹चुड़ैल₹ या ₹प्रेत₹ मानते हैं। किसी पेड़ के नीचे बैठी औरत, या श्मशान के पास दिखने वाला साया लोगों को भयभीत कर देता है। ऐसी मान्यताएँ समाज में कई तरह की लोककथाओं का रूप ले चुकी हैं। दादी-नानी की कहानियों में "डायन", 'पिशाचिनी' और 'वेताल' की कथाएँ बच्चों को डराती भी हैं और रोमांचित भी।

लोककथाओं में भूतों को केवल डरावना ही नहीं, बल्कि कभी-कभी मददगार रूप में भी दिखाया गया है। जैसे कि लोककथाओं में 'भूत' अपने प्रियजन को चेतावनी देने या दुश्मन से बचाने भी आते हैं।

भुतहा स्थानों का आकर्षण

आजकल 'भुतहा जगहों' का आकर्षण युवाओं और पर्यटकों के लिए रोमांचक अनुभव बन गया है। भानगढ़ किले को ही लीजिए। सरकारी आदेश से सूर्यास्त के बाद यहाँ प्रवेश वर्जित है। बावजूद इसके, लोग दिन में ही वहाँ घूमने जाते हैं और डरावनी अनुभूतियों की कहानियाँ सुनाते हैं। इसी तरह, विदेशों में 'घोस्ट टूरिज़्म' एक बड़ा व्यवसाय बन चुका है। कई लोग जानबूझकर भुतहा होटलों या घरों में ठहरते हैं ताकि अलौकिक अनुभव कर सकें।

भूत-प्रेत और आधुनिक मनोरंजन

सिनेमा और साहित्य ने भूत-प्रेत की छवि को और गहराई से जनमानस में बैठाया है। हॉलीवुड की 'द कॉन्ज्यूरिंग', 'द रिंग', 'इन्सीडियस' जैसी फिल्में विश्वभर में हिट हुईं। वहीं बॉलीवुड की 'भूत', 'राज़' और 'स्त्री' जैसी फ़िल्में लोगों को डराने के साथ-साथ मनोरंजन भी करती हैं। डर और रोमांच का यह मेल आज भी लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय है।

आस्था बनाम अंधविश्वास

जहाँ एक ओर भूत-प्रेत की कहानियाँ लोगों के जीवन का हिस्सा हैं, वहीं दूसरी ओर यह अंधविश्वास को भी जन्म देती हैं। कई बार किसी बीमारी, मानसिक समस्या या दुर्घटना को ₹भूत-प्रेत का साया₹ मानकर लोग झाड़-फूंक और तांत्रिकों के चक्कर में पड़ जाते हैं। इसका खामियाज़ा गरीब और अशिक्षित वर्ग को ज़्यादा भुगतना पड़ता है जबकि असलियत में अधिकांश समस्याएँ मानसिक स्वास्थ्य, तनाव या शारीरिक रोग से जुड़ी होती हैं।

रहस्य अब भी जीवित है

भूत-प्रेत की दुनिया रोमांच और रहस्य से भरी है। विज्ञान ने कई सवालों का उत्तर दिया है लेकिन कई रहस्य अब भी अनसुलझे हैं। शायद यही कारण है कि इंसान की कल्पना और डर दोनों मिलकर इस विषय को जीवित रखते हैं।

भूत-प्रेत पर विश्वास करना या न करना व्यक्ति की अपनी सोच है पर इतना तय है कि इनकी कहानियाँ हमारी संस्कृति, साहित्य और लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं। हो सकता है, भविष्य का विज्ञान इन रहस्यों से परदा हटा दे लेकिन तब तक भूत-प्रेत का रहस्य लोगों की जिज्ञासा और रोमांच को हमेशा ज़िंदा रखेगा।

भारतवर्ष विश्व का सिरमौर

डॉ. नीरज भारद्वाज

भारतवर्ष विश्व का सिरमौर है,
भारतवर्ष का कण-कण पवित्र कर
देने वाला है। कोई कहीं से भी आया,
उसको भारतवर्ष ने शरण और ज्ञान दिया है।
संस्कारों की अमृतधारा भारतवर्ष में बहती
रही है और भविष्य में भी बहती रहेगी। यहां
शरीर के रिश्ते नहीं बल्कि मानसिक चेतना
और आध्यात्मिक चेतना के रिश्ते बनते हैं।
विचार करें तो शरीर को यह धरा धाम
छोड़कर जाना होता है और जब आप किसी के
मन-मस्तिष्क की चेतना और उसकी
अध्यात्म शक्ति बन जाते हैं तो वह युगों तक
एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलता-बहता
रहता है।
भारतवर्ष में इतने संस्कार हैं कि इस पर
जितनी चर्चा की जाए, उतनी ही कम है। बच्चे
के पैदा होने से पूर्व ही हमारी सामाजिक
व्यवस्थाओं में एक से एक सुंदर संस्कार हैं।
इसलिए हमारी भूमि में विद्वानों अर्थात ज्ञानियों
की कोई कमी नहीं है। लोकाचार और
शास्त्राचार दोनों एक साथ चलते हैं।
नामकरण संस्कार से लेकर अंतिम संस्कार
तक की हर परिधि में पला-बढ़ा यह मानव
रूपी जीव चलता फिरता संस्कारों का एक
कलश है जिसमें दिनों-दिन अमृत बढ़ता जाता
है, वृद्धावस्था तक यह ज्ञान कलश लबालब
भर जाता है। मानव जीवन में भगवान का
भजन और स्वयं की मुक्ति का मार्ग छिपा हुआ
है।
बच्चे के पैदा होने पर नामकरण संस्कार वेद
मंत्रों के उच्चारण के साथ, ग्रह, नक्षत्र, राशि,
तिथि, समय आदि का योग देखकर नामकरण
संस्कार होता है। इसी आधार पर जीवन का
ताना-बनता चला जाता है। इसी के आधार पर
उसके जीवनसाथी का मिलन होता है। मुंडन
संस्कार और फिर गुरुकुल ज्ञान परंपरा
संस्कार, वर्तमान में शिक्षा अर्थात विद्यालय
जाने का संस्कार जहां गुरु से ज्ञान प्राप्त
करना, उनकी आज्ञा का पालन करना, ज्ञान
अर्जन के साथ ही समाज की उन्नति में अपना
कार्य करना। गुरु अर्थात शिक्षक ज्ञान के सभी
पक्षों पर अपने शिष्य को तैयार कर उसे
समाज सेवा में उतार देते हैं। विद्यालयों के
बाहर लिखा मिलता है- शिक्षार्थ आइए,सेवार्थ
जाइए। आप शिक्षा ग्रहण कर राष्ट्र की सेवा में
जाएं, ऐसा संस्कार भारत की भूमि पर ही दिया
जाता है। विद्यालय में विद्यार्थियों को सभी गुणों
से पूर्ण कर गुरुजी विद्यार्थी को सेवा के लिए
समाज में भेजते हैं।
भारतीय समाज में परिवार की परंपरा विश्व
की सबसे सुंदर संस्कार व्यवस्था है।
पाणिग्रहण संस्कार कर्म, शक्ति, काम, मोक्ष
आदि सभीका संयोग है। माता-पिता की सेवा,
संतान का लालन-पालन अपनी पीढ़ियों के
लिए सही संस्कार और व्यवहार देना घर के
बड़े बूढ़ों का कर्तव्य रहा है। उनका सामाजिक
ज्ञान पुस्तक के ज्ञान से न होकर वास्तविक
व्यवहार के साथ जुड़ा हुआ है। दादा-दादी,
चाचा- चाचा, ताऊ-ताई, माता-पिता और
उनके बच्चे सभी एक छत के नीचे रह रहे होते
हैं। ऐसा पारिवारिक संस्कार विश्व के किसी
भी देश में ना तो हुआ है और ना आने वाले युगों
में होगा। इन सभी संस्कारों की जननी भारत
भूमि है।
भारतीय समाज में हर स्थिति और हर क्षण
संस्कारों का मेल है। हमारे तीज-त्यौहार, ऋतु
चक्र का परिवर्तन दिन-रात, पूजा-पाठ सभी
हमारे संस्कारों के अंग हैं। हम दिन के हर एक
पहर और घड़ी में संस्कारों को देखकर कार्य
करने वाले हैं। हमारी संत परंपरा संस्कारों का
ज्ञान बढ़ाने का कार्य करती रही है। साधु-संत-
महात्मा ज्ञान का प्रचार कर अध्यात्म चेतना
को बल देते हैं। संस्कारों को पुनः जीवित कर
देते हैं। किसी को निराश नहीं होने देते।
भारत भूमि संस्कारों का पुंज है। यहां हर क्षण
संस्कारों से कार्य होता हैं। संस्कारों की अमृत
धारा हर एक व्यक्ति में बहती है। गाय को रोटी
देकर हाथ जोड़ लेना, हमारे संस्कार ही तो हैं।
हमारे संस्कारों और ज्ञान परंपरा में पेड़-पौधे,
जीव-जंतु, नदी-पर्वत आदि हैं। इस देश की
पवित्र मिट्टी बहुत बड़ा कार्य करती है, भारत
भूमि को प्रणाम। माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः
का भाव हमेशा हमारे अंदर चलता रहता है।

डीटीसी की सीएनजी बस में लगी भीषण आग, ड्राइवर की सूझबूझ से सवारियों की बची जान

दिल्ली के मोरी गेट इलाके में तीस हजारी सर्कल पर एक डीटीसी सीएनजी बस में आग लग गई। बस चालक की सूझबूझ से बड़ा हादसा टल गया, उसने तुरंत बस को रोककर यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला। दमकल की गाड़ियों ने एक घंटे में आग पर काबू पाया। माना जा रहा है कि सीएनजी किट में ब्लास्ट के कारण आग लगी। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मोरी गेट इलाके में तीस हजारी सर्कल पर शुक्रवार सुबह एक डीटीसी की सीएनजी बस में अचानक आग लग गई। घटना के बाद आसपास अफरा-तफरी मच गई।

जैसे ही इंजन से धुआं निकलना शुरू हुआ तो बस चालक ने सूझबूझ दिखाते हुए बस को रोक दिया। घटना के दौरान बस में चार से पांच सवारी बैठी थी, जिन्हें ड्राइवर ने तुरंत बाहर निकाला।

बस चालक और कंडक्टर ने पहले खुद ही आग पर काबू पाने का प्रयास किया। बात नहीं बनी तो मामले की सूचना पुलिस व दमकल विभाग को दी गई। खबर मिलते ही नजदीकी दमकल स्टेशन से दमकल की तीन गाड़ियां वहां पहुंचीं।

तब तक आग ने बस को चपेट में ले लिया था। करीब एक घंटे बाद आग पर काबू पाया गया। माना जा रहा है कि पहले सीएनजी किट में ब्लॉस्ट हुआ, उसके बाद बस में आग लगी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दमकल विभाग के अनुसार, शुक्रवार सुबह करीब 11:15 बजे सूचना मिली कि तीस हजारी सर्कल मोरी गेट इलाके के पास बस में आग लग गई है। खबर मिलते ही दमकल की तीन गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और करीब एक घंटे के भीतर आग पर काबू पाया। वहीं, घटना में किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

त्योहारों का सेल्फ़ी ड्रामा : (त्योहार अब दिल से नहीं, डिस्प्ले से मनाए जाते हैं)

हम अब त्योहारों से ज़्यादा अपनी तस्वीरें मना रहे हैं।)

अब त्योहार पूजा, मिलन और आत्मिक उल्लास का नहीं, बल्कि 'कंटेंट' का मौसम बन गए हैं। दीपक की लौ से ज़्यादा रोशनी अब मोबाइल की फ्लैश में दिखती है। भक्ति, व्रत और परंपराएँ अब फ़िल्टर और फ्रेम में सिमट गई हैं। लोग 'सेल्फ़ी विद गणेश', 'करवा चौथ वाइब्स' और 'भाई दूज मोमेंट्स' जैसे टैग से उत्सव मनाते हैं। सच्ची आस्था और दिखावे के बीच की यह डिजिटल खाई हमारी आत्मा को धीरे-धीरे खोखला कर रही है। यह सवाल अब ज़रूरी है — क्या हम त्योहार मना रहे हैं या दिखा रहे हैं?

--- डॉ. प्रियंका सौरभ

त्योहार हमारे समाज की आत्मा होते हैं — वह समय जब इंसान ईश्वर, प्रकृति और अपने संबंधों के प्रति आभार व्यक्त करता है। लेकिन अब हर त्योहार के साथ एक नया किरदार जुड़ गया है — मोबाइल कैमरा। जैसे ही दीपक जलता है, आरती की थाली घूमती है या राखी बंधती है, पहला सवाल यही होता है — "फोटो ली क्या?"। पहले पूजा पूरी होती थी, फिर प्रसाद बाँटा जाता था; अब पहले स्टोरी लगती है, फिर पूजा होती है। यह वही भारत है जहाँ कभी 'मन का उत्सव' मनाया जाता था, आज वही 'मीडिया का उत्सव' बन गया है।

दीपावली अब दीपों की नहीं, सजावट की पोस्टों की रात है। घरों की सफ़ाई से ज़्यादा लोग कैमरे का कोण सुधारने में व्यस्त रहते हैं। माता लक्ष्मी की प्रतिमा की पूजा से पहले "बूमरैंग" बनता है, और पटाखों से पहले "कैप्शन" तय होता है — #दीवाली_की_वाइब्स #परिवार_का_प्यार। ऐसा लगता है मानो हर व्यक्ति का त्योहार सोशल मीडिया पर दिखना चाहिए, वरना वह अधूरा है। यह डिजिटल प्रतिस्पर्धा अब भक्ति से ज़्यादा 'लाइक' का खेल बन चुकी है।

करवा चौथ जैसे व्रतों का जो भाव था — प्रेम, समर्पण और आशीर्वाद — वह अब फोटो खिंचवाने और छूट वाले ऑफ़र में बँट गया है। "सेल्फ़ी विद सासू माँ", "उपवास वाला चेहरा" और "चाँद के साथ तस्वीर" जैसी प्रवृत्तियाँ अब त्योहार की नई पहचान हैं। पहले चाँद देखने का रोमांच था, अब 'क्लिक करने' का जुनून है। एक जमाना था जब महिलाएँ साड़ी पहनती थीं पूजा के भाव से; आज वही साड़ी ब्रांड को टैग करने का साधन बन गई है। त्योहार अब प्रेम का नहीं, प्रदर्शन का पर्व बन गया है।

होली भी अब रंगों का नहीं, रंगीन दिखावे का खेल है। पहले जो चेहरे रंगों में डूबे होते थे, अब वे फ़िल्टर में धुल चुके हैं। लोग अब एक-दूसरे को रंग लगाने से ज़्यादा डरते हैं कि "कपड़े खराब हो जाएँगे, फोटो में अच्छा नहीं लगूँगा।"

"सेल्फ़ी विद गुलाल" में रंग तो हैं, पर अपनापन नहीं। यह होली अब मन की नहीं, मेकअप की होली बन गई है।

ईद, क्रिसमस, नवरात्र — हर धर्म का उत्सव अब एक ही रंग में रंग गया है — डिजिटल दिखावे का रंग। मस्जिद या गिरजाघर के सामने मुस्कुराती तस्वीरें, थाली में सजे पकवानों के फोटो, और शीर्षक — "प्यार और शांति बाँट रहे हैं।" पर क्या सचमुच प्यार और शांति फैल रही है, या बस दिखावा? त्योहार अब इंसान को जोड़ने की बजाय, तुलना और प्रतिस्पर्धा का कारण बनते जा रहे हैं। "उसकी लाइटिंग ज़्यादा सुंदर", "उसका मंडप बड़ा", "उसके पास महँगी सजावट"— यह सब उस आत्मीयता को निगल गया है जो कभी परिवारों की पहचान थी।

यह सेल्फ़ी नाटक इतना गहरा हो चुका है कि अब भक्ति का भी अभिनय होता है। मंदिर में जाते ही लोग पहले फोन निकालते हैं, फिर हाथ जोड़ते हैं। आरती लाइव होती है, पर मन ऑफ़लाइन। दान सोशल मीडिया पर दिखाया जाता है, ताकि दूसरों को पता चले कि 'हम भी नेक हैं'। भक्ति निजी नहीं रही, सार्वजनिक प्रदर्शन बन गई है। आस्था अब आत्मा से नहीं, प्रसारण से चलती है।

मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें तो यह "डिजिटल आस्था" एक गहरी बेचैनी का परिणाम है। इंसान अब अपने हर अनुभव का प्रमाण सोशल मीडिया से चाहता है। उसे लगता है कि अगर कोई चीज़ कैमरे में नहीं आई तो वह हुई ही नहीं। यही कारण है कि अब त्योहारों में मुस्कान असली नहीं, अभ्यास की हुई होती है। बच्चे तक कैमरे के सामने "हैप्पी दिवाली" बोलना सीख चुके हैं। रिश्तों की गर्माहट अब कैमरे की ठंड में जम गई है।

त्योहारों का असली अर्थ था — रुकना, साँस लेना, जुड़ना।

अब अर्थ बदल गया है — सजना, पोस्ट करना, भूल जाना।

लोगों को यह भी याद नहीं रहता कि त्योहार का मूल कारण क्या था — बस इतना याद रहता है कि किस दिन क्या पोस्ट करना है। यह 'सेल्फ़ी संस्कृति' धीरे-धीरे उस आध्यात्मिक गहराई को खा रही है जो भारतीय समाज की पहचान थी।

अब त्यौहार आत्मा का नहीं, 'छवि' का दर्पण बन गए हैं।

बाज़ार ने भी इस प्रवृत्ति को भुनाने में देर नहीं लगाई।

हर त्यौहार से पहले 'सेल्फ़ी पृष्ठभूमि', 'फोटो मंच', 'डिजिटल सजावट' और 'त्योहार संग्रह' की बाढ़ आ जाती है।

पूजा की थाली से ज़्यादा महत्त्व अब पैकेजिंग का हो गया है। त्योहार अब आध्यात्मिक नहीं, ब्रांडेड अवसर बन चुके हैं। दीपावली अब "ऑनलाइन खरीदारी पर्व" है, नवरात्र "गरबा नाइट्स प्रायोजित कार्यक्रम" है, और होली "कलर ब्लास्ट आयोजन" बन चुकी है। जहाँ पहले त्योहार आत्मा को शुद्ध करते थे, अब वह जेब को खाली कर देते हैं।

सोशल मीडिया पर दिखावे की इस होड़ ने समाज में एक अजीब-सी भावनात्मक दूरी पैदा कर दी है। लोगों को लगता है कि उन्होंने दूसरों की फोटो देखकर उनसे जुड़ाव बना लिया — जबकि असल में वह जुड़ाव एक भ्रम है। त्योहार जो कभी सबको साथ लाते थे, अब लोगों को अकेला कर रहे हैं। हर कोई अपने फोन में बंद है, दूसरे की मौजूदगी सिर्फ स्क्रीन पर है। "परिवार की फोटो" तो पूरी है, लेकिन परिवार बिखरा हुआ है।

यह सब लिखते हुए एक प्रश्न चुभता है — क्या हम ईश्वर से जुड़ रहे हैं या नेटवर्क सिग्नल से? क्या हमें खुशी मिल रही है या बस 'प्रतिक्रिया'? कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारे त्योहार अब आत्मा से नहीं, कैमरे की चमक से रोशन हो रहे हैं?

त्योहारों का असली अर्थ तब लौटेगा जब हम कैमरा नीचे रखकर, किसी के चेहरे पर सच्ची मुस्कान देखेंगे।

जब दीया सिर्फ़ फोटो के लिए नहीं, अंधेरे के लिए जलाया जाएगा। जब करवा चौथ पर फोटो नहीं, साथ बैठकर एक-दूसरे की आँखों में सुकून ढूँढा जाएगा। जब होली पर रंग लगाते वक्त डर नहीं, अपनापन होगा। त्योहार तब लौटेंगे, जब हम दिखाना बंद करेंगे — और महसूस करना शुरू करेंगे।

त्योहारों का यह सेल्फ़ी ड्रामा तभी खत्म होगा जब इंसान अपने अंदर झाँककर यह कह सके — "मुझे किसी की लाइक नहीं चाहिए, मुझे बस अपने अपनों की सच्ची मुस्कान चाहिए।"

दिल्ली औषधि नियंत्रण विभाग ने भी जारी किया कफ सिरप के लिए आदेश

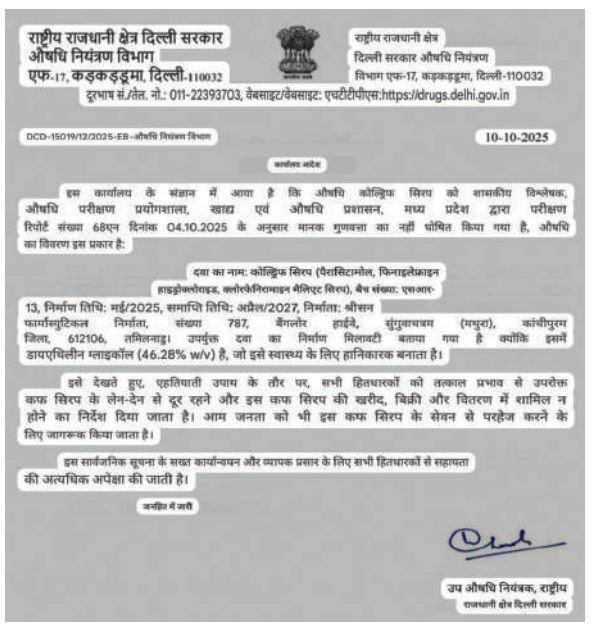

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
औषधि नियंत्रण विभाग
एफ.17, कड़कड़डूमा, दिल्ली-110032
दूरभाष सं./तेल. नो.: 011-22393703, वेबसाइट/वेबसाइट: एचटीटीपीएस:https://drugs.delhi.gov.in

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार औषधि नियंत्रण
विभाग एफ-17, कड़कड़डूमा, दिल्ली-110032

DCD-15019/12/2025-EB-औषधि नियंत्रण विभाग

10-10-2025

कार्यालय आदेश

इस कार्यालय के संज्ञान में आया है कि औषधि कोल्ड्रिफ सिरप को शासकीय विश्लेषक, औषधि परीक्षण प्रयोगशाला, खाद्य एवं औषधि प्रशासन, मध्य प्रदेश द्वारा परीक्षण रिपोर्ट संख्या 68एन दिनांक 04.10.2025 के अनुसार मानक गुणवत्ता का नहीं घोषित किया गया है, औषधि का विवरण इस प्रकार है:

दवा का नाम: कोल्ड्रिफ सिरप (पैरासिटामोल, फिनाइलेफ्राइन हाइड्रोक्लोराइड, क्लोरफेनिरामाइन मैलिएट सिरप), बैच संख्या: एसआर-13, निर्माण तिथि: मई/2025, समाप्ति तिथि: अप्रैल/2027, निर्माता: श्रीसन फार्मास्युटिकल निर्माता, संख्या 787, बैंगलौर हाईवे, सुंगुवाचत्रम (मधुरा), कांचीपुरम जिला, 612106, तमिलनाडु। उपर्युक्त दवा का निर्माण मिलावटी बताया गया है क्योंकि इसमें डायएथिलीन ग्लाइकॉल (46.28% w/v) है, जो इसे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बनाता है।

इसे देखते हुए, एहतियाती उपाय के तौर पर, सभी हितधारकों को तत्काल प्रभाव से उपरोक्त कफ सिरप के लेन-देन से दूर रहने और इस कफ सिरप की खरीद, बिक्री और वितरण में शामिल न होने का निर्देश दिया जाता है। आम जनता को भी इस कफ सिरप के सेवन से परहेज करने के लिए जागरूक किया जाता है।

इस सार्वजनिक सूचना के सख्त कार्यान्वयन और व्यापक प्रसार के लिए सभी हितधारकों से सहायता की अत्यधिक अपेक्षा की जाती है।

जनहित में जारी

उप औषधि नियंत्रक, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

पीएम धन-धान्य कृषि योजना से ग्रामीण महिलाएँ होंगी सशक्त, ट्रेनिंग से लेकर तकनीक और बाजार तक सीधी पहुँच: आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मोदी सरकार का बड़ा कदम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार (11 अक्टूबर 2025) नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) में विशेष कृषि कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने देशभर के किसानों से संवाद किया और कई नई योजनाओं की शुरुआत की । इन योजनाओं का उद्देश्य फसल विविधीकरण, भंडारण क्षमता बढ़ाना, सिंचाई सुविधाओं में सुधार और दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करना है। इसके अलावा प्रधानमंत्री कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन और खाद्य प्रसंस्करण से जुड़ी 5,450 करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाओं का उद्घाटन और 815 करोड़ रुपए की नई परियोजनाओं की आधारशिला रखेंगे।

शाहदरा स्थित बुद्धा पार्क का सौंदर्यीकरण कार्य शीघ्र प्रारंभ...

भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह के अनुरोध पर मुख्यमंत्री स्तर पर हुई पहल के बाद प्रक्रिया अंतिम चरण में

आगरा। कालिंद्री विहार स्थित शाहदरा क्षेत्र के बुद्धा पार्क (पूर्व डलाबघर) के सौंदर्यीकरण को लेकर क्षेत्रवासियों की लंबे समय से चली आ रही मांग अब साकार होने जा रही है। नगर निगम द्वारा पार्क के सौंदर्यीकरण हेतु प्रस्ताव स्वीकृत किया जा चुका है और कार्य प्रारंभ कराने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है।

भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने बताया कि बुद्धा पार्क के जीर्णोद्धार व सौंदर्यीकरण के संबंध में 3 अगस्त 2025 को लखनऊ में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से एक प्रतिनिधि मंडल के साथ भेंट कर अनुरोध किया गया था, उपेंद्र सिंह के नेतृत्व में मुख्य रूप से प्रतिनिधि मंडल में अनिल कुमार, नेत्रपाल सिंह, लोकेश कुमार, तेज कपूर उपस्थित रहे थे, इसके बाद पुन 12 सितंबर को मुख्यमंत्री के विशेष कार्य अधिकारी से उनके लखनऊ स्तिथ कार्यालय में भेंट कर जल्द से जल्द पार्क के सौंदरीकरण और निर्माण का अनुरोध किया गया था,

जिस पर उन्होंने तत्काल संबंधित अधिकारियों से वार्ता की थी और बाद में उपेन्द्र सिंह, नेत्रपाल सिंह ने नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल जी को सभी तथ्यों से अवगत कराया था जिस पर उन्होंने बताया था कि जल्द से जल्द टेंडर उठ जाएगा और कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा, इसी क्रम में नगर निगम के अवर अभियंता ललित अग्रवाल ने जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत की। जांच में यह स्पष्ट किया गया कि शाहदरा स्थित बुद्धा पार्क (जिसे स्थानीय लोग डलाबघर के नाम से भी जानते हैं) के सौंदर्यीकरण हेतु प्रस्ताव अनुमोदित है और कार्य प्रारंभ की दिशा में प्रशासन सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।

स्थानीय नागरिकों में हर्ष

क्षेत्र के नागरिकों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, भाजपा नेता उपेंद्र सिंह तथा नगर निगम प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया है। उनका कहना है कि वर्षों से उपेक्षित पड़े इस पार्क के सौंदर्यीकरण से न केवल क्षेत्र का वातावरण स्वच्छ और आकर्षक बनेगा, बल्कि बच्चों, बुजुर्गों और युवाओं को एक बेहतर सार्वजनिक स्थल भी उपलब्ध होगा।

उपेंद्र सिंह ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रदेश में विकास की गति अभूतपूर्व है। आगरा शहर में भी पार्क, सड़क, पेयजल और सौंदर्यीकरण कार्यों में तेजी से प्रगति हो रही है। बुद्धा पार्क का यह सौंदर्यीकरण कार्य क्षेत्र के नागरिकों के लिए बड़ी सौगात साबित होगा।

प्रख्यात साहित्यकार विकास मिश्र हुए "गोमती रत्न सम्मान 2025" से अलंकृत

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

दिल्ली। प्रख्यात साहित्यकार विकास मिश्र को कथा कुंज साहित्य परिषद, दिल्ली के द्वारा मोहम्मदी (लखीमपुर खीरी) उत्तर प्रदेश में आयोजित कवि सम्मेलन एवं सम्मान समारोह में 'गोमती रत्न सम्मान-2025' से अलंकृत किया गया।उन्हें यह सम्मान कथा कुंज साहित्य परिषद, दिल्ली के संस्थापक व कार्यक्रम के संयोजक गोविंद गुप्ता, ब्रांड एंबेसडर नीमा पंत, मुख्य अतिथि के रूप में पधारे विधायक एवं दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री लोकेंद्र प्रताप सिंह, पूर्व कृषि राज्य मंत्री कृष्णा राज, नगर पालिका परिषद चेयरमैन संदीप मेहरोत्रा एवं संदीप शुक्ला आदि ने संयुक्त रूप से प्रशस्ति-पत्र, स्मृति चिन्ह अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके दिया।

ज्ञात हो कि प्रख्यात साहित्यकार विकास मिश्र मूलतः नटोली कलां (सुल्तानपुर) के निवासी हैं।वे वर्तमान में श्री वेंकटेश्वर कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) में कार्यरत हैं।

कथा कुंज साहित्य सेवा परिषद, नई दिल्ली के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और प्रख्यात साहित्यकार, 'यूपी रत्न' डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी ने विकास मिश्र को 'गोमती साहित्य सम्मान 2025' से अलंकृत होने पर हर्ष व्यक्त किया है। साथ ही प्रभु से उनके उज्ज्वल, स्वस्थ, दीर्घ और समृद्ध जीवन की कामना की है।

पालम यूजीआर बंद होने के कारण एनडीएमसी क्षेत्र में जलापूर्ति प्रभावित रहेगी।

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। पालम अंडरग्राउंड वाटर पंप में क्षतिग्रस्त पाइपलाइन सुधार कार्य के साथ-साथ 33 इंच के फ्लो मीटर बदलने का कार्य कल 12.10.2025 को सुबह 9:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक निर्धारित किया गया है।

अतः, मोतीबाग, नेताजी नगर, पूर्व और पश्चिम किदवई नगर अंडरग्राउंड वाटर पंपों को दोपहर की जलापूर्ति, पूर्ण रूप से बंद होने के कारण पालम से नहीं हो पाएगी।

एनडीएमसी के जिन क्षेत्रों में शाम की आपूर्ति प्रभावित रहेगी , उनमें शामिल है : संपूर्ण मोतीबाग, नेताजी नगर क्षेत्र, एआरडी कॉम्प्लेक्स, आरके पुरम स्थित लाल बिल्डिंग, डब्ल्यूटीसी नरौजी नगर, फैक्ट्री रोड स्थित एसआईसी केंद्र, पूर्व और पश्चिम किदवई नगर।

एनडीएमसी क्षेत्र निवासियों से अनुरोध है कि वे पानी का उपयोग सोच-समझकर करें। असुविधा के लिए खेद है। एनडीएमसी क्षेत्र के बूस्टर पंपों के संचालन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, आप गोविंद सिंह मीणा, जेई, एनडीएमसी (बूस्टर पंप) से 9785574041 पर संपर्क कर सकते हैं। / जय प्रकाश, जेई (जल आपूर्ति) 9958779781.

एनडीएमसी क्षेत्र में पानी के टैंकर सेवाओं के लिए, एनडीएमसी नियंत्रण कक्ष से 011-23743642/1533 पर संपर्क करें। अमित कुमार, जेई, एनडीएमसी 7982114805, नवल किशोर मीणा (जल आपूर्ति नियंत्रण कक्ष प्रभारी): 9717844584, सी.एल. मीणा, ईई (डब्ल्यूएस): 9891330200.

फोर्टिस नोएडा में करवा चौथ पर पति द्वारा पत्नी को खास तोहफा जीवनरक्षा के लिए डोनेट की अपनी किडनी

मुख्य संवाददाता

नोएडा: करवा चौथ के मांगलिक अवसर को प्यार और हिम्मत का बेहद खास त्योहार बनाते हुए, एक पति ने अपनी बीमार पत्नी को किडनी दान कर जीवन का सही मायने में उत्सव मनाया है। 50 वर्षीय पवन रावत ने अपनी 47-वर्षीय पत्नी मनीषा रावत को फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा में किडनी डोनेट कर उपवास और पूजा-अर्चना के इस त्योहार को जीवनसाथी के प्रति समर्पण और जीवन की उम्मीद दिलाने वाले अवसर में बदल डाला।

2021 में रावत को क्रोनिक किडनी डिज़ीज़ (सीकेडी) से ग्रस्त होने की पुष्टि हुई थी – यह एक दीर्घकालिक कंडीशन होती है जिसमें हमारे गुर्दे (किडनी) शरीर में ब्लड से अपशिष्ट/कचरा पदार्थों को फिल्टर करने की क्षमता धीरे-धीरे खो देते हैं। लगातार इलाज के बावजूद, मनीषा की हालत बिगड़ती जा रही थी और इस साल अप्रैल में उनकी किडनी फेल हो गई, जिसके चलते उन्हें लगातार डायलसिस पर रखने की जरूरत पड़ी। तब मनीषा ने अगले दो महीने वैकल्पिक थेरेपी को चुना ताकि उनकी हालत में कुछ सुधार हो सके, लेकिन उनकी सेहत और बिगड़ती चली गई।

इस साल जुलाई में उन्हें बेहद गंभीर हालत में फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा में भर्ती कराया गया जहां जांच के बाद पता चला कि वह गंभीर रूप से फ्लूड ओवरलोड, हार्ट फंक्शन में कमजोरी और अत्यधिक थकान से ग्रस्त थीं। उपचार के दौरान, उन्हें दो बार कार्डियाक अरेस्ट भी हुआ लेकिन फोर्टिस की मेडिकल टीम ने दोनों बार उनकी जान बचा ली।

उनकी हालत को स्थिर करने के बाद, डॉक्टरों ने सूचित किया कि उनके लंबे जीवन के लिए किडनी ट्रांसप्लांट एकमात्र विकल्प है। हालांकि उनकी 68-वर्षीय मां ने अपनी किडनी डोनेट करने की इच्छा जताई लेकिन उनकी अधिक उम्र और स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियों के मद्देनज़र डॉक्टरों ने उन्हें मेडिकल आधार पर अनुपयुक्त (अनफिट) घोषित कर दिया। जब अन्य रिश्तेदारों ने भी गुर्दा दान करने से इंकार कर दिया तो रावत ने बिना किसी संकोच के कहा, "अपनी पत्नी का जीवन बचाना मेरा कर्तव्य है, और इस बार मैं अपने शरीर का एक हिस्सा देकर अपने इस कर्तव्य को निभाऊंगा।"

नेफ्रोलॉजिस्ट, यूरोलॉजिस्ट और एनेस्थीसियोलॉजिस्टी की एक मल्टीडिसीप्लीनरी टीम के नेतृत्व में ट्रांसप्लांट सर्जरी 10 अक्टूबर को हुई। हालांकि यह प्रक्रिया करीब 3 घंटे चली और तकनीकी रूप से रूटीन थी, लेकिन रावत की नाजुक हालत और उनके कमजोर कार्डियाक फंक्शन के मद्देनज़र यह हाइ-रिस्क सर्जरी थी।

अनुजा पोरवाल, डायरेक्टर – नेफ्रोलॉजी एंड रीनल ट्रांसप्लांट, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा ने कहा, "जब रावत इलाज के लिए हमारे अस्पताल में आयी थीं, तो उनकी हालत काफी गंभीर थी। डायलसिस से उन्हें कोई मदद नहीं मिल रही थी, और उन्हें दो बार कार्डियाक अरेस्ट भी हो चुके थे। ऐसे में ट्रांसप्लांट का विकल्प ही उनके जीवन के लिए उम्मीद की किरण था। यह मामला इस वजह से उल्लेखनीय बन गया कि उनके पति ने डोनेशन का फैसला किया, जो कि भारत में काफी दुर्लभ है और यहां ज्यादातर डोनर्स महिलाएं ही होती हैं।"

डॉ पीयूष वार्ष्णेय, डायरेक्टर – यूरोलॉजी एंड रीनल ट्रांसप्लांट, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा ने कहा, " रावत की नाजुक स्थिति के चलते, यह हाइ-रिस्क सर्जरी थी। लेकिन उनके पति की हिम्मत और अपनी जीवनसंगिनी के प्रति उनका प्रेम पूरी टीम के लिए प्रेरणा बना। इस मामले से एक बार फिर यह साबित हो गया है कि मेडिसिन केवल स्किल ही नहीं है बल्कि दयाभाव, टाइमिंग और असाधारण मानवीय जज़्बे को भी अपने में समेटे हुए है।"

इस सर्जरी के बाद, डोनर और रेसिपिएंट दोनों ही स्वास्थ्यलाभ कर रहे हैं। डॉक्टरों का कहना है कि श्रीमती रावत इलाज के बाद पॉजिटिव तरीके से रिस्पॉन्ड कर रही हैं और रिकवरी के बाद वह लगभग नॉर्मल लाइफ जीने में समर्थ होंगी।

एक ऐसे दिन जबकि अनगिनत संख्या में पत्नियां अपने पतियों की लंबी उम्र के लिए उपवास रखती हैं, फोर्टिस नोएडा एक पति द्वारा अपनी पत्नी को बेहद खास उपहार का साक्षी बना – यह था जीवन का उपहार। यह मामला अंगदान के जीवनरक्षक प्रभाव का रिमाइंडर है, यह समय पर मेडिकल इंटरवेंशन के महत्व को रेखांकित करता है, और उस दयाभाव को परिभाषित करता है जो आधुनिक चिकित्सा का आधार है।

पलवल के किसान बिजली वितरण निगम के लाल फीता शाही से परेशान

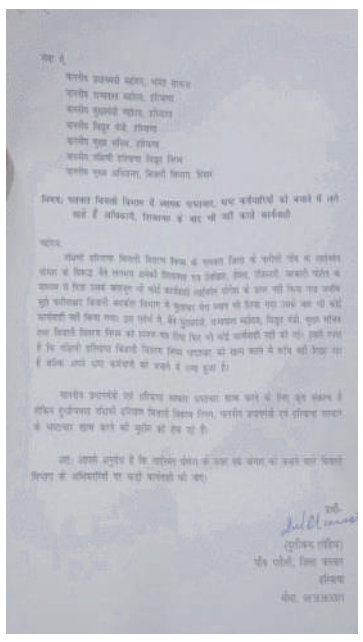

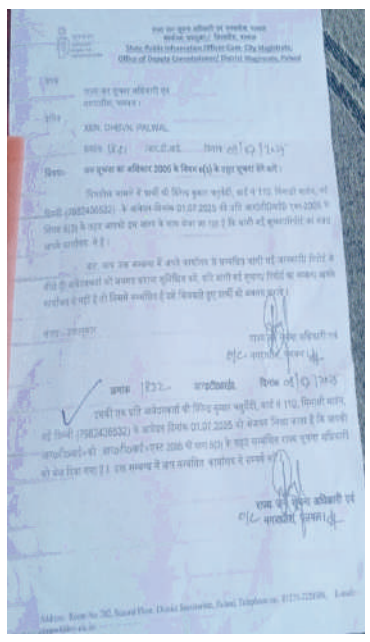

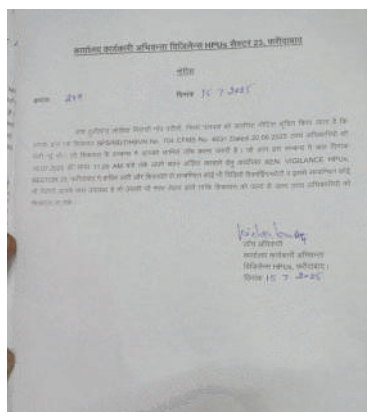

परिवहन विशेष न्यूज

दक्षिणी हरियाणा बिजली वितरण निगम के पलवल सब-डिवीजन के पारौली गांव के लाइन मैन योगेश के द्वारा नियमित बिजली आपूर्ति के लिए उपभोक्ताओं से सरेआम रिश्वत के मांग किया जाता है यदि किसी ने रिश्वत नहीं दिया तो उसको बेवजह परेशान किया जाता है पारौली गांव में गौशाला चलाने वाले बिजली विभाग के लाइमैन योगेश से तंग आ चुके दुलीचंद लोहिया ने बताया यौगेश दस हजार रूपए मासिक मांग करता था नहीं देने पर उसने बिजली कटौती से लेकर अनाप शनाप बिल भेजकर मुझे परेशान करना शुरू किया जब मैं बिजली वितरण निगम पलवल सब-डिवीजन के एस डी ओ,एई जेइ और एकसीयन तक इसका शिक़ायत किया फिर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई तब हरियाणा के राजपाल, मुख्यमंत्री, विधुत मंत्री, मुख्य सचिव मुख्य अभियंता को अनेकों पत्र स्पीड पोस्ट,इमेल और ग्रिवेंनश के द्वारा शिकायत किया फिर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई है भुक्तभोगी दुलीचंद लोहिया ने बताया बीसन बार पलवल में अधिकारीयों से मिला लेकिन मेरे समस्या के समाधान के बजाय मुझे बिजली वितरण निगम के अधिकारीयों के द्वारा परेशान किया जा जा रहा है एक तरफ मुख्यमंत्री नयाव सिंह सैनी किसानों और गौशाला चलाने वाले को सुविधा देने के घोषणा करते हैं दूसरे तरफ बिजली वितरण निगम पलवल सब-डिवीजन के अधिकारी अपने भ्रष्ट लाइन मैन योगेश के उपर कारवाई करने के बजाय बचा रहे हैं इस से पारौली गांव के आलावा अगल बगल के गांवों में बिजली वितरण निगम के विरुद्ध लोगों में गुस्सा है , लोहिया ने बताया हरियाणा सरकार का 8 घंटे किसानों को रोज बिजली देने के आदेश है उसके बावजूद किसानों के बिजली खेती जंगल वाली लाइट के आपूर्ति नहीं कर रहा है बिजली वितरण निगम।

हाय री डीएपी... पुलिस के सामने ही दबंगों ने छीन ली किसान की डीएपी

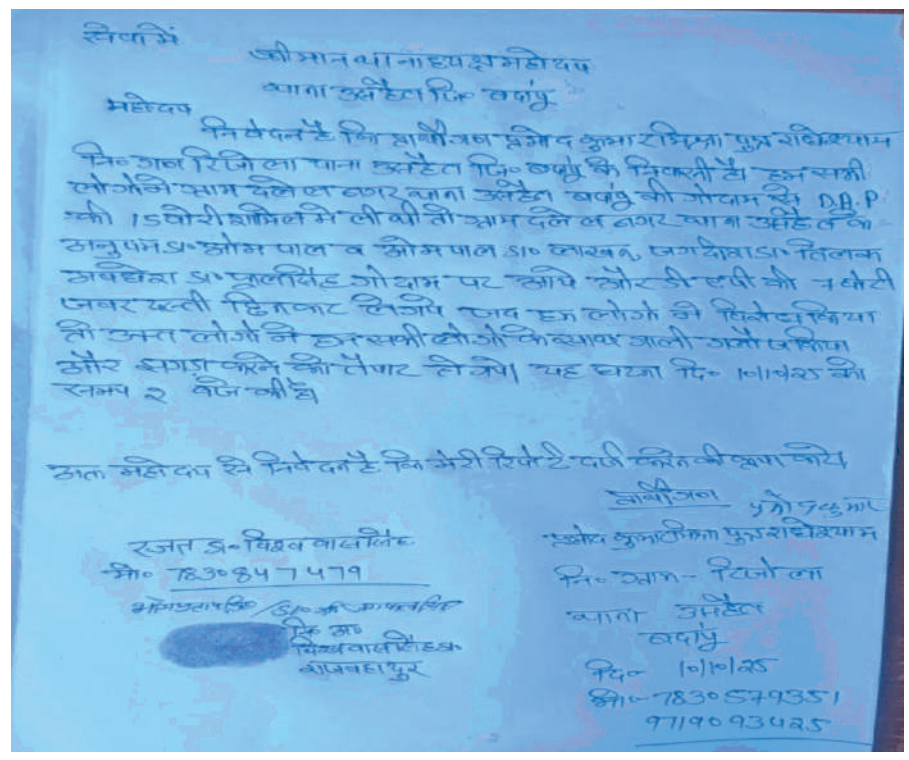

परिवहन विशेष न्यूज

मामला बदायूं जिले का जहां का एक वायरल वीडियो इंटरनेट पर जम कर अपनी धाक जमाए है जिस में किसान ने घंटों लाइन में लग कर सहकारी समिति से डीएपी. खाद खरीदी और वहां पुलिस की मौजूदगी में कुछ दबंगों ने खाद किसान से छीन कर अपने साथ ले जाने की कोशिश करने लगे जहां पर पुलिस अपनी आंखों के सामने यह सब होते देखते रहे जिससे जिले भर में पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे है।

महिला सशक्तिकरण का इससे नायाब उदाहरण और दूसरा कोई हो ही नहीं सकता....

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं : ख़ासकर तब जब पूरे उत्तर प्रदेश में पूरा पुलिस प्रशासन महिला सशक्तिकरण फेस 6 को लेकर प्रतिदिन बड़े-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन कर महिलाओं को जागरुक कर रहा है.... ! जहां एक और महिला सशक्तिकरण को लेकर बड़े-बड़े बातें की जा रही है वहीं दूसरी ओर यह घटना साफ दर्शा रही है कि आखिर धरातल पर महिला सशक्तिकरण की हालत क्या है....

अगर इस पूरे घटनाक्रम को देखें तो बदायूं में महिला सशक्तिकरण अभियान की पोल खोल नजर आ रही है....

पूरा घटनाक्रम आज दिन का ही है....

दोपहर 2:54 पर धरैरा प्रधान सलिल कुमार का मेरे पास फोन आता है... की जल्दी आ जाइए एक महिला जिसके हाथ पैर टूटे हुए हैं बुरी तरह पीटा गया है. महिला सड़क किनारे खेत में पड़ी हुई है... डायल 112 पुलिस को सूचना दे दी गई है आप जल्दी चले आइए.... !

मैंने कहा आज मेरे पास बाइक नहीं है साइकिल से ही आ रहा हूं क्योंकि घटनाक्रम मेरे पास से लगभग दो से ढाई किलोमीटर दूर था.....

मैं घर से साइकिल से निकला रास्ते में मेरा मित्र बाइक से आ रहा था मैं साइकिल वहीं खड़ी की और बाइक से घटनास्थल की ओर चल दिया....

मुझे पहुंचने में लगभग 10 मिनट का समय लगा होगा... ! तब तक प्रधान जी ने महिला को खेत से उठाकर सड़क किनारे रखवा दिया....

तब तक पुलिस नहीं पहुंची थी और राहगीरों की वहां पर भीड़ मौजूद थी गंभीर रूप से घायल

महिला की दो पुत्रवधू भी वहां पहुंच चुकी थी जब महिला से पूछा तो यह जानकारी मिली कि वह थाना उघैती में पति के विरुद्ध तहरीर देकर गांव वापस लौट रही थी तभी उनके पति ने उन पर डंडा और धारदार हथियार से हमला बोल दिया.... !

उसके बाद पहुंची इस्लामनगर थाना क्षेत्र की डायल 112 चीता बाइक पुलिस....

3:04 मिनट पर मैंने थाना प्रभारी उघैती को फोन पर पूरी घटनाक्रम के बारे में सूचना दी....

3:22 पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची..... !

प्रभारी निरीक्षक द्वारा बताया गया कि इस महिला का पति भी सुबह थाने में तहरीर दे गया था और उसने इस महिला और अपनी बेटे रिंकू पर मारपीट करने का आरोप लगाया है....

लेकिन जानकारी में पता चला कि महिला का बेटा रिंकू तो पिछले 15 से 20 दिनों पहले ही गांव छोड़कर मजदूरी करने बाहर गया हुआ है....

खैर छोड़िए अब बात करते हैं एंबुलेंस की....

इंतजार में तब तक लगभग 30 मिनट और व्यतीत हो गए लेकिन एंबुलेंस नहीं पहुंची....

दरोगा जी रणधीर सिंह अन्य पुलिस कर्मियों के मन में भी दया का भाव आया सरकारी गाड़ी में ही महिला को ले जाने की बात की... मैंने और दरोगा जी वह अन्य दो लोगों ने महिला को उठाकर गाड़ी में रखने की एक बार कोशिश की लेकिन सफल नहीं हो पाए क्योंकि चोट ज्यादा थी.... ! बाकी पुलिसकर्मियों को क्या मतलब था की कोई उसे महिला को हाथ लगा था जिसका पैर टूटा था और पूरे शरीर में चोटें थीं....

पुनः 5 मिनट और प्रतिष्ठा की गई एंबुलेंस की लेकिन नहीं आ पाई....

आखिर फिर एक बार कोशिश कर उसे गंभीर रूप से चोटिल महिला को जिसके पर भी टूटा हुआ था अन्य पूरे शरीर पर भी चोट के निशान थे ! मैंने कहा भी सब पुलिस को तो यह ट्रेनिंग दी जाती है कि किस तरह घायल को उठाना है हम लोग क्या जाने लेकिन पुलिस तो पुलिस ठहरी.... लेकिन दरोगा जी की तारीफ करनी पड़ेगी....

देखने वाला हर कोई व्यक्ति हैरान था कि आखिर कितना बड़ा हैवान होगा वह व्यक्ति जिसने इतनी बेरहमी से इस वृद्ध महिला को पीटा है.... !

तो कुछ लोग यह भी कह रहे थे कि काश महिला की शिकायत को पुलिस ने गंभीरता से लिया होता....तो शायद रास्ते में यह इतनी बड़ी घटना नहीं होती....

हो सकता है यहां पर मैं गलत हूं क्योंकि हर पीड़िता के साथ पुलिस थोड़े ही ना उसके घर तक जाएगी छोड़ने...

अच्छा हुआ कि महिला जीवित थी नहीं तो जिस तरीके से महिला की पिटाई लगाई गई थी कि बचना मुश्किल था....

महिला जिस तरह कराहती हुई पानी मांग रही थी उसे देखकर हर किसी की आंखों में उसे पल आंसू थे... !

वहां खड़े लोग कभी लोग पुलिस को दोष दे रहे थे... तो कभी एंबुलेंस को....

तो कभी शासन की व्यवस्थाओं को.... !

लेकिन मैं तो सिर्फ यही कहूंगा की धरातल पर जो महिला सशक्तिकरण का नया उदाहरण पुलिस प्रशासन द्वारा पेश किया गया है वह अकल्पनीय और अद्वितीय है.... !

अब यह तो नहीं कह सकता की गलती किसकी....

लेकिन यह फिर भी कहूंगा कि गलती हमेशा कमजोर की ही होती है.... !

श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के द्वारा मण्डल का 14वां वार्षिकोत्सव 14 अक्तूबर को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। अक्रूर ग्राम स्थित श्रीपंचमुखी हनुमान मंदिर में श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के द्वारा मण्डल का 14वां वार्षिकोत्सव 14 अक्तूबर 2025 को अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि वार्षिकोत्सव का शुभारंभ 14 अक्तूबर 2025 को प्रातः 09 बजे से श्रीहनुमानजी महाराज के पूजन-अर्चन के साथ होगा।तत्पश्चात संगीतमय सुन्दरकाण्ड का सामूहिक पाठ किया जाएगा।इसके अलावा कई प्रख्यात सन्तों, विद्वानों व धर्माचार्यों के आशीर्वचन होंगे।

उन्होंने बताया है कि कार्यक्रम में श्रीहनुमानजी महाराज का संकीर्तन नृत्य व सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा आदि के भी कार्यक्रम सम्पन्न होंगे।

श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के संरक्षक पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, अध्यक्ष अशोक व्यास रामायणी एवं कोषाध्यक्ष आचार्य विपिन बापू ने समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं से इस महोत्सव में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ ने जिला शिक्षा पदाधिकारी, अररिया को सौंपा ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

अररिया। प्रधान शिक्षक प्रकोष्ठ, परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ, बिहार के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार एवं प्रदेश सचिव चन्दन कुमार ने शुक्रवार को जिला शिक्षा पदाधिकारी, अररिया से मुलाकात कर प्रधान शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक का वेतन अविलम्ब भुगतान किए जाने की मांग की। इस अवसर पर दोनों संघीय प्रतिनिधि ने बताया कि प्रधान शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक की नियुक्ति के उपरांत अबतक वेतन का भुगतान नहीं हो सका है, जिससे शिक्षकों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन के माध्यम से निम्नलिखित प्रमुख मांगें रखी गईं—

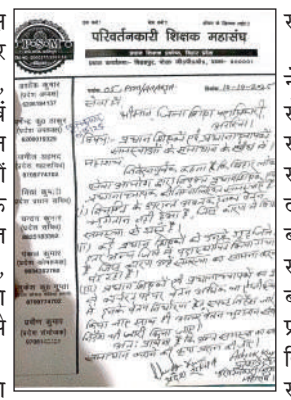

1. प्रधान शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक का लंबित वेतन शीघ्र भुगतान किया जाए।

2. गृह जिला से बाहर पदस्थापित प्रधान शिक्षकों को पुनः उनके गृह जिले में समायोजित किया जाए।

3. वेतन निर्धारण एवं अंतर वेतन भुगतान से संबंधित स्पष्ट निर्देश जारी किए जाएं।

जिला शिक्षा पदाधिकारी, अररिया ने प्रतिनिधिमंडल की बातों को गंभीरता से सुनते हुए आश्वासन दिया कि मांग संख्या एक (वेतन भुगतान) को जिला स्तर पर शीघ्र निपटाया जाएगा। बाकी दोनों मांगों को राज्य स्तर का विषय बताते हुए उन्होंने कहा कि इसपर राज्य सरकार से दिशा-निर्देश प्राप्त होने के बाद ही आगे की कार्रवाई संभव है। प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार ने कहा कि महासंघ शिक्षकों की समस्याओं के समाधान हेतु निरंतर प्रशासनिक स्तर पर प्रयासरत है और तब तक प्रयास जारी रहेगा जब तक हर शिक्षक को उसका हक नहीं मिल जाता।

क्रोध का विकराल रूप जुनून है, जो जीव पर सवार होकर जघन्य से जघन्य अपराध करा देता है

क्रोध से उत्पन्न हुए अपराधों के औचित्य को सिद्ध करने के लिए क्रोधी व्यक्ति कुतर्क कर दूसरे को ही दोषी सिद्ध करता है -

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीय संस्कृति, सभ्यता के बारे में हमने साहित्य और इतिहास के माध्यम से और भारत माता की गोद में रहकर पारिवारिक संस्कृति,मान सम्मान,रीति-रिवाजों से इसे प्रत्यक्ष महसूस भी कर रहे हैं। परंतु हमारे बड़े बुजुर्गों के माध्यम से हमने कई बार सतयुग का नाम सुने हैं, जिसका वर्णन वे स्वर्गलोक़ के तुल्य करते हैं। याने इतनी सुखशांति, अपराध मुक्ति, इमानदारी,शांति सरोवर तुल्य, कोई चालाकी चतुराई गलतफहमी या कुटिलता या भ्रष्टाचार नहीं, बस एक ऐसा युग कि कोई अगर कुछ दिन, माह के लिए बाहर गांव जाए तो अपने घरों को ताला तक लगाने की ज़रूरत नहीं !अब कल्पना कीजिए कि अपराध बोध मुक्त युग !मेरा मानना है कि हमारी पूर्व की पीढ़ियों ने ऐसा युग जिए होंगे तब यह बोध आगे की पीढ़ियों में आया,जिसे सतयुग के नाम से जरूर जाना जाता है।

साथियों बात अगर हम वर्तमान युग पर बड़े बुजुर्गों में चर्चा की करें तो इस इसे कलयुग नाम देते हैं, याने सभी प्रकार के अपराध बोध से युक्त संसार। हर तरह की बेईमानी, भ्रष्टाचार कुटिलता से भरा हुआ युग !आज भी बुजुर्गों का मानना है कि वह सतयुग फिर आएगा,याने आज की तकनीकी भाषा में अपराध मुक्त, भ्रष्टाचार बेईमानी कुटिलता मुक्त पारदर्शिता और अनेकता में एकता वाले भारत की परिकल्पना का युग।

साथियों बात अगर हम अपराध, भ्रष्टाचार, बेईमानी, कुटिलता से भरे जग की करें तो मेरा मानना है कि इसका मुख्य प्रवेश द्वार क्रोध, उत्तेजित स्वभाव व लालच है जिसमें आपराधिक बोध प्रवृत्ति का जन्म होता है और व्यक्ति क्रोध में हिंसा, अपराध, लालच, भ्रष्टाचार, बेईमानी और कुटिलता के अमानवीय कृति और अन्य गलत कार्यों की ओर मुड़ जाता है और आगे बढ़ते ही चले जाता है जब जीवन के असली महत्व का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्रोध की अभिव्यक्ति हमारे अंदर की कुंठा, हिंसा व द्वेष के कारण भी हो सकती है। वर्तमान काल में अपराधों के बढ़ने का एक प्रमुख कारण भीषण क्रोध ही है। क्रोध से उत्पन्न हुए अपराधों के औचित्य को सिद्ध करने के लिए क्रोधी व्यक्ति कुतर्क कर दूसरे को ही दोषी सिद्ध करता है। एक दोष को दूर करने के लिए अनेक कुतर्क पेश करता है। क्रोध में व्यक्ति आपा खो देता है। क्रोध में अंततः बुद्धि निस्तेज हो जाती है और विवेक नष्ट हो जाता है। क्रोध का विकराल रूप जुनून है। आदमी पर जुनून सवार होने पर वह जघन्य से जघन्य अपराध कर बैठता है। जुनून की हालत में उसे मानवीय गुणों का न बोध रह पाता है और न ही ज्ञान। क्रोध मानव का सबसे बड़ा शत्रु है, बहुत बड़ा अभिशाप है।

साथियों बात अगर हम शांत, परोपकारी स्वभाव ही जीवन का मूल मंत्र की करें तोअभिभावकों, शिक्षकों को बच्चों को यह शिक्षा देना है और हम बड़ों को यह स्वतः

संज्ञान लेना है कि माचिस की तीली बनने की बजाय शांत सरोवर बनना होगा, जिसमें कोई अंगारा भी फेंके तो स्वयं ही बुझ जाए, बस ! यह भाव अगर हम मनीषियों के हृदय में समाहित हो जाए तो यह विश्व फिर सतयुग का रूप धारण करेगा जहां किसी तरह का कोई अपराध बोध या गलत काम का भाव नहीं होगा। सभी मनीषी जीव परोपकारी भाव से युक्त होंगे भाईचारा, प्रेम, सद्भाव की बारिश होगी जहां बिना ताले घरबार छोड़ कहीं भी जाने के भाव जागृत होंगे और हमारे बुजुर्गों का सतयुग रूपी सपना साकार होगा।

साथियों बात अगर हम स्वयं को माचिस की तीली याने क्रोधित होने पर विपरीत परिणामों की करें तो, क्रोध मनुष्य को बर्बाद कर देता है और उसे अच्छे बुरे का पता नही चलने देता, जिस कारण मनुष्य का इससे नुक्सान होता है। क्रोध मनुष्य का प्रथम शत्रु होता है। क्रोधी व्यक्ति आवेश में दूसरे का इतना बुरा नहीं जितना स्वयं का करता है। क्रोध व्यक्ति की बुद्धि को समाप्त करके मन को काला बना देता है।

साथियों बात अगर हम क्रोध को नियंत्रित कर समाप्त करने की तकनीकी की करें तोइलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अनुसार क्रोध के नकारात्मक प्रभाव पूरे इतिहास में देखे गए हैं। प्राचीन दार्शनिकों, धर्मपरायण व्यक्तियों और आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतीत होने वाले अनियंत्रित क्रोध का मुकाबला करने की सलाह दी गई है। आधुनिक समय में, क्रोध को नियंत्रित करने की अवधारणा को मनोवैज्ञानिकों के शोध के आधार पर क्रोध प्रबंधनकार्यक्रमों में अनुवादित किया गया है क्रोध प्रबंधन क्रोध की रोकथाम और नियंत्रण के लिए एक मनो-चिकित्सीय कार्यक्रम है। इसे क्रोध को सफलतापूर्वक तैनात करने के रूप में वर्णित किया गया है। क्रोध अक्सर हताशा का परिणाम होता है, या किसी ऐसी चीज से अवरुद्ध या विफल होने का अनुभव होता है जिसे विषय महत्वपूर्ण लगता है। अपनी भावनाओं को समझना क्रोध से निपटने का तरीका सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकता है। जिन बच्चों ने अपनी नकारात्मक भावनाओं को क्रोध डायरी में लिखा था, उन्होंने वास्तव में अपनी भावनात्मक समझ में सुधार किया, जिससे बदले में कम आक्रामकता हुई। जब अपनी भावनाओं से निपटने की बात आती है, तो बच्चे ऐसे उदाहरणों के प्रत्यक्ष उदाहरण देखकर सबसे अच्छा सीखने की क्षमता दिखाते हैं, जिनके कारण कुछ निश्चित स्तर पर गुस्सा आया। उनके क्रोधित होने के कारणों को देखकर, वे भविष्य में उन कार्यों से बचने की कोशिश कर सकते हैं या उस भावना के लिए तैयार हो सकते हैं जो वे अनुभव करते हैं यदि वे खुद को कुछ ऐसा करते हुए पाते हैं जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर उन्हें गुस्सा आता है, इसके साथ ही एकांत में जाकर ध्यान के माध्यम से क्रोध के विकारों को नष्ट करने का प्रयास करें तो ऋणात्मक ऊर्जा को मोड़कर हम सकारात्मक ऊर्जा से विवेक सम्मत निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि क्रोध का विकराल रूप जुनून है, जो जीव पर सवार होकर जघन्य से जघन्य अपराध करा देता है।क्रोध में व्यक्ति आपा खो देता है-एक दोष को दूर करने के लिए अनेक कुतर्क पेश करता हैक्रोध से उत्पन्न हुए अपराधों के औचित्य को सिद्ध करने के लिए क्रोधी व्यक्ति कुतर्क कर दूसरे को ही दोषी सिद्ध करता है

बदायूं पुलिस का अजीबो गरीब कारनामा सामने आया, पशु प्रेमी दीपेश दिवाकर को बदायूं पुलिस के X हैंडल पर ब्लॉक कर दिया गया, जहाँ एक तरफ सरकार की नीति के हिसाब X हैंडल पर शिकायतों का संज्ञान लेने को कहा गया है, वही एक ओर पुलिस ने शिकायत करने की वजह से शिकायतकर्ता के अकाउंट को अपनी ओर से ब्लॉक कर दिया।

बदलाव एवं विकास की राह ताकता बिहार चुनाव

ललित गर्ग

विकास पर जोर के बावजूद बिहार की राजनीति में जाति एक निर्णायक कारक है। हर पार्टी की चुनावी रणनीति समुदाय आधारित लामबंदी से गहराई से प्रभावित है। दोनों प्रमुख गठबंधन एनडीए ओर महागबंधन सीट बंटवारे की बातचीत में उलझे हैं।

बिहार में चुनावी रणभेरी बज चुकी है। मतदान की तिथियों की घोषणा के साथ ही लोकतंत्र का यह महायज्ञ आरंभ हो चुका है, जिसमें करोड़ों मतदाता दो चरणों में दिनांक 6 और 11 नवंबर को अपने मत के माध्यम से राज्य की दिशा और दशा दोनों तय करेंगे। इस बार का चुनाव सिर्फ सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि विचार और व्यवस्था परिवर्तन का चुनाव है। बिहार लंबे समय से जिस पिछड़ेपन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और अराजकता की बेड़ियों में जकड़ा रहा है, उससे मुक्ति का यह अवसर है। 14 नवंबर को मतगणना के साथ बिहार में नई सरकार की तस्वीर सामने होगी, लेकिन राज्य में सियासत जिस तरह आकार ले रही है, मतदान तक कई उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। बिहार के राजनीतिक इतिहास पर नजर डालें तो यह धरती कभी बुद्ध की करुणा और चाणक्य की नीति की जननी रही है, लेकिन आज वही बिहार कानून व्यवस्था की विफलताओं, जातिवाद की जंजीरों और विकासहीनता की विवशताओं से जूझ रहा है। सड़कें टूटी हैं, शिक्षा व्यवस्था जर्जर है, चिकित्सा तंत्र कमजोर है, और रोजगार की तलाश में हर साल लाखों युवा अपनी मातृभूमि छोड़ने को विवश हैं। ऐसे में यह चुनाव एक सामाजिक जागृति का अवसर भी है, जब मतदाता केवल चेहरे नहीं, चरित्र और चिंतन को वोट देंगे।

राजनीतिक दल अपनी-अपनी घोषणाओं, वादों और दृष्टि-पत्रों के साथ मैदान में हैं। कोई "नया बिहार" बनाने का नारा दे रहा है, तो कोई "विकसित बिहार" का। लेकिन सवाल यह है कि क्या घोषणाओं से बिहार का भाग्य बदलेगा, या फिर यह चुनाव भी परंपरागत नारों और जातीय समीकरणों के हवाले हो जाएगा? यह समय है कि जनता दलों से नहीं, दिशा से जुड़ाव करे; नारे से नहीं, नैतिकता से संवाद करे। पिछले दो दशकों से नीतीश कुमार बिहार का चेहरा बने हुए हैं और यह चुनाव भी अलग होता नहीं दिख रहा। मूल सवाल यही है कि क्या नीतीश को एक और मौका जनता देगी? राज्य में एनडीए ने उन्हें आगे कर रखा है और महागठबंधन से सीधी टक्कर मिल रही है। 2005 से नीतीश कुमार बीच के कुछ समय को छोड़ कर सत्ता पर काबिज हैं। इस दौरान उन्होंने 9 बार शपथ ली और कई बार पाला बदला। गठबंधन के साथी बदलते रहने और कम सीटों के बावजूद मुख्यमंत्री वही बने। इसके पीछे उनकी अपनी 'सुशासन बाबू' की छवि भी है, लेकिन अब इसे चुनौती मिल रही है। पहली बार नीतीश सरकार को भ्रष्टाचार के आरोपों में घेरने की कोशिश हो रही है। वहीं, कानून-व्यवस्था का मामला भी चिंता बढ़ाने वाला है। हाल के महीनों में पटना में व्यवसायी गोपाल खेमका और हॉस्पिटल में घुसकर गैंगस्टर की हत्या ने सरकार की परेशानी बढ़ाई। नीतीश और भाजपा ने लालू-राबड़ी यादव के कार्यकाल को हर चुनाव में जंगलराज की तरह पेश किया, पर अब सवाल विपक्षी दल पूछ रहे हैं। यह चुनाव ऐसे अनेक सवालों के घेरे में हैं।

विकास पर जोर के बावजूद बिहार की राजनीति में जाति एक निर्णायक कारक है। हर पार्टी की चुनावी रणनीति समुदाय आधारित लामबंदी से गहराई से प्रभावित है। दोनों प्रमुख गठबंधन एनडीए ओर महागबंधन सीट बंटवारे की बातचीत में उलझे हैं। 243 विधानसभा सीटों में से गठबंधन में से किस पार्टी को कितनी सीटें मिलेंगी और किसे कोन-सी सीट मिलेगी, यह विवाद का विषय है। पिछले विधानसभा चुनाव में एनडीए और महागठबंधन के बीच सीधा मुकाबला हुआ था- इस बार समीकरण में प्रशांत किशोर की जन सुराज भी है, जो भ्रष्टाचार ओर पलायन का मुद्दा उठाए हुए हैं। कुछ और भी नये राजनीतिक दल मैंदान में हैं। बिहार की सबसे बड़ी चुनौती कानून व्यवस्था और प्रशासनिक सुदृढ़ता की है। आए दिन होने वाली अपराध घटनाएं और अराजकता ने राज्य की छवि को धूमिल किया है। एक ऐसा शासन चाहिए जो भयमुक्त समाज दे सके, जहां नागरिक सुरक्षित महसूस करें, जहां अपराध पर अंकुश हो और न्याय त्वरित मिले। विकास तभी संभव है जब विश्वास का माहौल बने।

बिहार की राजनीति में इस बार कई नए दल और कई पुराने चेहरे नए दल के साथ दिखाई देने वाले हैं। प्रशांत किशोर की पार्टी 'जनसुराज', तेजप्रताप यादव की पार्टी जनशक्ति जनता दल, उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा और पशुपति पारस की राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी पहली बार बिहार विधानसभा के चुनाव में नजर आने वाली है। ऐसे में सभी दल चुनावी जंग में ताल ठोकने को तैयार है। मगर देखने वाली बात ये होगी कि कौन सी पार्टी अपना कितना दम दिखा पाती है? क्या प्रशांत किशार की पार्टी उनके दावे के अनुसार प्रदर्शन करती है या फुस्स साबित होती है, वहीं, तेजप्रताप यादव अपनी पार्टी बनाकर तेजस्वी यादव को कितना झटका देते है। यह सब अब चुनाव के परिणाम पर तय होगा। साथ ही यह भी तय होगा कि कौन सी पार्टी अपना अस्तित्व बचा पाती है कौन नहीं? यह चुनाव बिहार की आत्मा को झकझोरने वाला क्षण है। यहां की जनता अब सिर्फ रोटी-कपड़ा-मकान नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, और सम्मानजनक जीवन चाहती है। यह चुनाव इस आकांक्षा का प्रतीक है। जो भी दल इस वास्तविकता को समझेगा, वही बिहार का भविष्य गढ़ पाएगा।

आज बिहार के मतदाता अधिक सजग एवं विवेकशील हैं। वे जानते हैं कि सत्ता परिवर्तन से अधिक जरूरी है संस्कृति परिवर्तन, राजनीतिक शुचिता और प्रशासनिक जवाबदेही। यह चुनाव केवल विधानसभा की सीटें तय नहीं करेगा, बल्कि यह तय करेगा कि क्या बिहार अपनी पुरानी परछाइयों से निकलकर प्रकाश की ओर बढ़ पाएगा। क्योंकि बिहार में पिछड़ेपन, भ्रष्टाचार, अराजकता की चर्चा होती रहती है, इसलिये यह स्वाभाविक है कि राज्य का विकास, कानून व्यवस्था एवं रोजगार का मुद्दा भी पक्ष-विपक्ष के बीच एक प्रमुख चुनावी मुद्दा होगा। हालांकि पिछली सरकारों के दौर में बिहार बदहाली के दौर से काफी निकल चुका है और विगत दो दशक में यहां की स्थितियां काफी बदली है। इस बार बिहार चुनाव बदला-बदला होगा, इसकी आहट उन घोषणाओं से भी मिलती है, जो नीतीश सरकार ने की हैं। महिलाओं, दिव्यांगों और बुजुर्गों के लिए पहली बार इस पैमाने पर ऐलान किए गए हैं। वहीं आरजेडी और कांग्रेस ने पूछा है कि इसके लिए पैसा कहां से आएगा? जनता वादों पर भरोसा करती है या बदलाव संग जाती है, जवाब मिलने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।

वैसे, बिहार चुनाव का इतना ज्यादा महत्व कोई नई बात नहीं है। विगत दो दशक से एक विशेष क्रम बना हुआ है। लोकसभा चुनाव के अगले साल बिहार विधानसभा के चुनाव होते हैं। केंद्र में जो पार्टी विपक्षी गठबंधन में रहती है, वह बिहार विधानसभा चुनाव में अपना पूरा जोर लगा देती है, जिससे चुनाव कुछ ज्यादा रोचक एवं उत्तेजक बन जाता है। सियासी स्थिति का आकलन करें, तो बिहार में लगभग बीस साल शासन के बावजूद जनता दल यूनाइटेड या नीतीश कुमार की ताकत को कोई भी खारिज नहीं कर रहा है। भाजपा पूरी मजबूती से नीतीश कुमार के साथ खड़ी है, ताकि सत्ता बनी रहे। दूसरी ओर, राष्ट्रीय जनता दल के नेतृत्व वाला महागठबंधन अभी नहीं, तो कभी नहीं वाले अंदाज में जोर लगा रहा है। लोकतंत्र की इस परीक्षा में बिहार एक नई इबारत लिख सकता है-एक ऐसा बिहार जो शिक्षित हो, संगठित हो, और सजग हो। जहां राजनीति सेवा का माध्यम बने, संघर्ष का नहीं; जहां सत्ता संवेदना की भाषा बोले, स्वार्थ की नहीं। बिहार का यह जनादेश वास्तव में इतिहास रच सकता है-यदि जनता "जाति" नहीं, "न्याय" को चुने; "वादा" नहीं, "विश्वास" को चुने। यह चुनाव बिहार के भाग्य परिवर्तन की कुंजी बन सकता है-बशर्ते हम सब मिलकर कहें- "अब की बार, सुशासन और सुधार।"

बसपा ने फिर दिखाई ताकत, मायावती के सियासी दांव से सपा को 'तनाव'

मृत्युंजय दीक्षित

बसपा रैली में बहिन मायावती के भतीजे आकाश आनंद की लॉन्चिंग के साथ-साथ मायावती के सबसे करीबी माने जाने वाले नेता सतीशचंद्र मिश्रा के बेटे कपिल मिश्रा की भी लॉन्चिंग हो गई है। मायावती ने उनके कामकाज की प्रशंसा भी की।

उत्तर प्रदेश में आगामी पंचायत चुनाव से लेकर वर्ष 2027 के विधानसभा चुनावों तक की चहल-पहल दिखने लगी है। इसी क्रम में बसपा सुप्रीमो बहिन मायावती ने मान्यवर कांशीराम की पुण्यतिथि के अवसर पर शक्ति प्रदर्शन करते हुए कई राजनैतिक संदेश दिए। बहिन मायावती ने अपनी जनसभा में एक ओर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सराहना करके राजनैतिक विश्लेषकों को हैरान किया तो दूसरी ओर अगले विधानसभा चुनावों में बिना किसी गठबंधन के उतरने की घोषणा भी कर दी है। बसपा के शक्ति प्रदर्शन को देखकर अनुमान लगाया जा रहा है कि आगामी विधानसभा चुनावों में बसपा की बढती ताकत से समाजवादी पार्टी को नुकसान होने जा रहा है। बहिन मायावती ने न केवल यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्रशंसा की अपितु यह भी कहा कि यदि आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी जुमला न साबित हुआ तो वह पूरी तरह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ खड़ी होंगी।

बहिन मायावती अपनी 2007 की रणनीति को अपनाते हुए पुनः सामाजिक न्याय को आधार बनाकर ही चुनावी मैदान में उतरेंगी ऐसा संकेत उनकी रैली से मिलता है। उन्होंने अपनी रैली मे भीड़ जुटा कर यह संदेश दे दिया है कि उनका कोर वोटबैंक जाटव व दलित अभी भी उनके साथ है, भले ही इस समय उनके पास विधानसभा में केवल एक विधायक और मात्र 9 प्रतिशत वोट है। बहिन मायावती अपनी रैली में भाजपा के प्रति नरम व सपा तथा कांग्रेस के प्रति गरम दिखाई पड़ीं। उन्होंने अपनी रैली में कांग्रेस व सपा पर जमकर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस संविधान पर नाटकबाजी कर रही है। कांग्रेस ने देश पर आपातकाल लगाकर बाबा साहब के बनाए संविधान का अपमान किया था। कांग्रेस ने बाबा साहब का कभी भी सम्मान नहीं किया।उन्होंने केंद्र सरकार में रहने पर उन्हें आयकर और सीबीआई की जांच में फंसाने की कोशिश की ताकि डा. आंबेडकर और कांशीराम के कारवां को रोका जा सके। अब उसी कांग्रेस के लोग संविधान की प्रति हाथ में लेकर नाटकबाजी कर रहे हैं। सपा पर तीखा हमला बोलते हुए बहिन मायावती ने कहा कि सपा की सराकर में दलितों व पिछड़ों का सर्वाधिक उत्पीड़न हुआ। उन्होंने सपा सरकार की अराजकता पर हमला किया।

बसपा रैली में बहिन मायावती के भतीजे आकाश आनंद की लॉन्चिंग के साथ-साथ मायावती के सबसे करीबी माने जाने वाले नेता सतीशचंद्र मिश्रा के बेटे कपिल मिश्रा की भी लॉन्चिंग हो गई है। मायावती ने उनके कामकाज की प्रशंसा भी की। जातीय समीकरण साधने के लिए सतीशचंद्र मिश्र के अलावा उमाशंकर सिंह को भी मंच पर जगह दी गई। प्रशंसनीय बात है कि इस रैली की तैयारी बहिन मायावती और उनके कार्यकर्ता बहुत ही शांत व अनुशासित तरीके से कर रहे थे। बसपा व बहिन मायावती अपने वोटर्स के मध्य बहुत समझदारी के साथ संपर्क बनाती हैं और यही कारण है कि उनका वोटबैंक काफी सीमा तक सुरक्षित रहा है; यद्यपि 2017 के बाद जाटव मतदाता में सेंघ लग चुकी है जिसे फिर से भरोसा दिलाकर वापस लाना बहिन जी के लिए एक कठिन चुनौती है। लंबे समय से बहिन जी का नाम तथा आवाज़ केंद्रीय राजनीति से दूर रहने के कारण दलित राजनीति में चंद्रशेखर "रावण" जैसे लोगों का उभार हुआ है जो बसपा के परम्परागत वोटबैक पर दावा ठोंक रहे हैं।

बसपा सुप्रीमो ने भले ही जोर देकर कहा है कि आगामी चुनावों में प्रदेश में बसपा की सरकार बनाने के लिए पूरी ताकत लगा दी जाएगी किंतु यह फिलहाल संभव नहीं प्रतीत हो रहा हें क्योकि बसपा का जो राजनैतिक समीकरण हे उस आधार पर उन्हें सत्ता प्राप्त करने के लिए कम कम के कम 30 प्रतिशत मतों की आवश्यकता होगी और वह अभी मात्र 9 प्रतिशत ही है। प्रदेश की वर्तमान परिस्थितियों में बसपा कार्यकर्ताओं की धरातल पर कड़ी मेहनत के बाद यह मत प्रतिशत 15-20 पहुँच सकता है। बहिन जी ने खुले मंच से जिस प्रकार से योगी जी की प्रशंसा की वह बसपा के लिए नुकसानदायक भी हो सकता है क्योंकि संभव है इससे प्रदेश का मुस्लिम मतदाता सपा गठबंधन के साथ जाना पसंद करे।

वर्ल्ड कप या जीवन: मोरक्को की सड़कों पर सवाल

मोरक्को की रातों में अब खून की गंध तैरती है। अगादिर का हसन-२ अस्पताल, जहाँ आठ माताओं की साँसें सिस्टम की विफलता में थम गईं, अब चीखों का गढ़ बन चुका है। ये चीखें सिर्फ दर्द की नहीं, बल्कि उस आक्रोश की हैं, जो ३.७ करोड़ लोगों के देश में बेरोजगारी, भुखमरी और जर्जर अस्पतालों की सड़ांध से उपजा है। जेन जेड—वो पीढ़ी, जिसे दुनिया स्क्रीन पर झूमता नौजवान कहती थी—अब सड़कों पर है, आग उगलती हुई। उनके नारे हवा को चीर रहे हैं: "वर्ल्ड कप नहीं, ज़िंदगी चाहिए!" यह विरोध नहीं, एक ज्वालामुखी है, जो टिकटॉक और डिस्कॉर्ड की चिंगारियों से भड़क उठा। किताबों की जगह पत्थर थामे ये युवा पूछ रहे हैं: "जब अस्पतालों में बिस्तर नहीं, तो स्टेडियमों पर अरबों क्यों?"

मोरक्को—जहाँ माराकेश की रंग-बिरंगी गलियाँ पर्यटकों को मंत्रमुग्ध करती हैं, जहाँ कासाब्लांका की चमकती इमारतें आधुनिकता की कहानी कहती हैं, और एटलस स्टूडियोज़ 'अफ्रीका का हॉलीवुड' बनकर चमकता है—आज अपने ही बच्चों के गुस्से की आग में झुलस रहा है। राजा मोहम्मद VI की प्रतीकात्मक सत्ता और प्रधानमंत्री अजीज अखन्नौच की सरकार के सामने एक सवाल तलवार-सा खड़ा है: 16 अरब डॉलर (लगभग 13.4 लाख करोड़ रुपये) का खज़ाना, जो २०३० फीफा वर्ल्ड कप और और अफ्रीका कप ऑफ नेशंस (AFCON) २०२५ के लिए स्टेडियमों, हाई-स्पीड रेल और आलीशान होटलों पर लुटाया जा रहा है, वह उन अस्पतालों में क्यों नहीं, जहाँ ऑक्सीजन की कमी माताओं को निगल रही है? उन स्कूलों में क्यों नहीं, जहाँ शिक्षक और किताबें गुमनाम हैं?

आर्थिक रफ्तार ३% पर ठहर गई, जबकि सरकार का सपना ६% का था। बेरोज़गारी १२.८% है, लेकिन युवाओं में यह ३५.८% की भयावह ऊँचाई छू रही है। स्नातकों में 19% बेरोजगार—वो नौजवान, जिनकी डिग्रियाँ तो डेस्क पर सज गईं, मगर नौकरियाँ हवा में उड़ गईं। स्वास्थ्य व्यवस्था बदहाल है—1430 लोगों पर एक डॉक्टर, जो वैश्विक औसत (590 पर एक) से ढाई गुना कम है। सितंबर २०२५ में हसन-२ अस्पताल में प्रसव के दौरान आठ माताओं की मौत ने इस जख्म को कुरेद दिया। अब इसे 'डेथ हॉस्पिटल' कहते हैं—एक ऐसा नाम, जो मोरक्को की स्वास्थ्य व्यवस्था की क्रूर सच्चाई को उजागर करता है।

मोरक्को की सड़कों पर अब आग की लपटें और आक्रोश की चिंगारियाँ नाच रही हैं। जेन जेड २१२—मोरक्को के टेलीफोन कोड २१२ से जन्मा यह नाम—एक बगावत की पहचान बन चुका है। बिना किसी नेता का यह विद्रोह 18 सितंबर को डिस्कॉर्ड के एक छोटे से सर्वर से फूटा, जहाँ 1000 नौजवानों की आवाज़ २ अक्टूबर तक 1.5 लाख की हुंकार बन गई। टिकटॉक पर वायरल वीडियो, डिस्कॉर्ड पर गुप्त चैट रूम्स—यहीं से रैलियों का शंखनाद हुआ। रबात के कामगार इलाकों से शुरू हुआ यह तूफान अब कासाब्लांका, अगादिर, ओउज्दा, टैंजियर और माराकेश को अपनी चपेट में ले चुका है। बैंकों में आग, दुकानों और गाड़ियों में तोड़फोड़, माराकेश में एक पुलिस स्टेशन राख का ढेर। अगादिर में पुलिस की गोलियों ने तीन युवा जिंदगियाँ छीन लीं। गृह मंत्रालय की ठंडी गिनती कहती है: 1000 से ज़्यादा गिरफ्तार, 354 घायल—70% नाबालिग। २६० पुलिसकर्मी, २० प्रदर्शनकारी चोटिल। 40 पुलिस वाहन, २० निजी गाड़ियाँ जलकर खाक।

प्रदर्शनकारी चीख-चीखकर कह रहे हैं: "स्वास्थ्य पहले, फुटबॉल बाद में!" "स्टेडियम चमक रहे हैं, अस्पताल कहाँ मर गए?" फुटबॉल अल्ट्रास और रैपर ईल ग्रांडे टोटो ने इस आग में घी डाला। स्टार गोलकीपर यासीन बौनू की गिरफ्तारी ने इसे और भड़का दिया। AFCON २०२५ को गर्मियों से दिसंबर में खिसकाया गया, क्योंकि फीफा क्लब वर्ल्ड कप की चमक ज़्यादा थी। लेकिन 16 अरब डॉलर का खर्च—तीन नए स्टेडियम, छह का विस्तार—क्या यह जायज़ है, जब माताएँ ऑक्सीजन के लिए तड़प रही हैं? प्रदर्शनकारी चिल्ला रहे हैं: "वर्ल्ड कप का बहिष्कार करो, जैसे ब्राजील ने २०१४ में किया!"

युवा सरकार को भ्रष्टाचार का आइना दिखा रहे हैं। रॉयल फैमिली का निवेश फंड अल मदा, जो वर्ल्ड कप से मुनाफे की उम्मीद में लपलपाता है, निशाने पर है। माँगें साफ हैं: सरकार इस्तीफा दे, कैबिनेट भंग हो, राजा मोहम्मद VI नई शुरुआत करें। एमनेस्टी इंटरनेशनल और अमध ने पुलिस की बर्बरता और मनमानी गिरफ्तारियों पर लानत भेजी है। प्रधानमंत्री अखन्नौच ने 'संवाद' का ढोंग रचा, मगर युवा गरज रहे हैं: "वादे नहीं, कार्रवाई चाहिए!" जेन जेड २१२ का राजा को खुला पत्र गूंज रहा है: भ्रष्ट पार्टियाँ हटाओ, गिरफ्तारों को रिहा करो, स्वास्थ्य और शिक्षा पर खर्च बढ़ाओ।

यह आग सिर्फ मोरक्को की नहीं, वैश्विक जेन जेड के विद्रोह की लपट है। नेपाल में युवाओं ने पिछले महीने प्रधानमंत्री को घुटनों पर ला दिया। मेडागास्कर में राष्ट्रपति ने सरकार भंग की। इंडोनेशिया, फिलीपींस, पेरू, बांग्लादेश, श्रीलंका—हर जगह जेन जेड सड़कों पर है, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और असमानता के खिलाफ जंग छेड़े हुए। बांग्लादेश में २०२४ में शेख हसीना का तख्त पलटा, श्रीलंका में राजपक्षे शासन धूल में मिला। मोरक्को में भी यही लहर है। टिकटॉक पर एक वीडियो—एक युवा की आँखों में आँसू, आवाज़ में सवाल: "मेरी माँ मर गई, क्योंकि ऑक्सीजन नहीं थी। वर्ल्ड कप से क्या होगा?" २० लाख बार देखा गया यह वीडियो आग की तरह फैला। डिस्कॉर्ड पर रणनीतियाँ बनीं, और सड़कों पर भीड़ उमड़ पड़ी। मोरक्को की सड़कों पर अब सिर्फ आग नहीं, बल्कि एक उफनता समंदर उमड़ रहा है। हिंसा की लपटें भड़क रही हैं—दो से पाँच मौतें, सैकड़ों घायल। पुलिस का बर्बर बल—गोलियाँ, आँसू गैस—युवाओं के गुस्से को और भड़का रहा है। फिर भी, इन नौजवानों के सीने में आशा का दीया टिमटिमा रहा है। वे 'वन पीस' मंगा के झंडे लहरा रहे हैं—जापानी कॉमिक का वह प्रतीक, जहाँ समुद्री डाकू सत्ता के ज़ुल्मों से टकराते हैं। यह झंडा चीखता है: ये बच्चे 'परजीवी' नहीं, मोरक्को का भविष्य हैं।

सरकार के सामने रास्ता साफ है, मगर काँटों से भरा। २०३० वर्ल्ड कप चमकता अवसर हो सकता है, पर युवाओं के लिए यह बोझ बन चुका है। अगर इसे थोपा गया, तो यह अभिशाप होगा। अस्पतालों में बिस्तर, स्कूलों में शिक्षक, युवाओं के लिए नौकरियाँ—ये माँगें नहीं, हक हैं। राजा मोहम्मद VI, जिन्हें जेन जेड २१२ 'नई शुरुआत' की उम्मीद से देख रहा है, अब चौराहे पर खड़े हैं। युवाओं का संदेश गूंज रहा है: "हमारी आवाज़ को कुचला नहीं जा सकता!" डिजिटल स्क्रीनों से सड़कों तक उतरे ये बच्चे अब रुकने वाले नहीं। सवाल यही है: क्या मोरक्को बदलाव की राह अपनाएगा, या दमन की अंधेरी गली में भटकेगा? यह आग सिर्फ सड़कों पर नहीं; हर उस युवा के दिल में धधक रही है, जो स्टेडियमों की चकाचौंध के पीछे टूटे अस्पतालों की हकीकत देखता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

(एक गोली, पंद्रह नाम और सन्नाटा)
जाति, जलन और जान: नौकरशाही का काला चेहरा

"फाइलों से फायर तक : अफसरशाही के भीतर सड़ता भेदभाव"
(जातिगत अपमान, साइड पोस्टिंग और मानसिक उत्पीड़न — एक अफसर की चुप्पी जो अब चीख बन गई।)
हरियाणा के सीनियर आईपीएस अफसर वाई पूरन कुमार की आत्महत्या ने प्रशासनिक जगत को झकझोर दिया है। उनके सुसाइड नोट में 15 आईएएस-आईपीएस अफसरों के नाम दर्ज हैं, जिन पर जातिगत अपमान और मानसिक उत्पीड़न के आरोप हैं। चंडीगढ़ पुलिस ने डीजीपी शत्रुजीत कपूर और रोहतक एसपी नरेंद्र बिजारणिया समेत 14 अधिकारियों पर एफआईआर नंबर 156 दर्ज की है। यह हरियाणा के इतिहास में पहला मौका है जब इतने सीनियर अफसरों पर एक साथ एससी/एसटी एक्ट और भारत न्याय संहिता की धाराओं के तहत मुकदमा चला है। यह मामला नौकरशाही के भीतर छिपे जातिगत भेदभाव पर गहरी चोट है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा की प्रशासनिक मशीनरी में 7 अक्टूबर की सुबह एक ऐसी गूंज उठी, जिसने नौकरशाही के चेहरे से शालीनता का मुखौटा उतार फेंका। सीनियर आईपीएस अफसर वाई पूरन कुमार ने चंडीगढ़ के सेक्टर-11 स्थित अपने सरकारी आवास पर खुद को गोली मार ली। पर यह आत्महत्या नहीं, व्यवस्था के भीतर पल रहे जातिगत भेदभाव, सत्ता संघर्ष और संस्थागत उत्पीड़न का परिणाम थी। अब चंडीगढ़ पुलिस ने जो एफआईआर दर्ज की है, उसने इस सन्नाटे को कानून के दस्तक में बदल दिया है।

एफआईआर नंबर 156, जिसमें डीजीपी शत्रुजीत कपूर, रोहतक एसपी नरेंद्र बिजारणिया सहित 14 अफसर आरोपी बनाए गए हैं, भारतीय प्रशासनिक इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना है। भारत न्याय संहिता की धारा 108, 3(5) और एससी/एसटी एक्ट की धारा 3(1)(r) के तहत दर्ज यह मामला इस सच्चाई की गवाही देता है कि नौकरशाही की ऊँची दीवारों के भीतर भी जाति आज भी उतनी ही जीवित है जितनी गांवों की गलियों में।

पूरन कुमार के सुसाइड नोट में 15 आईएएस-आईपीएस अफसरों के नाम दर्ज हैं। हर नाम एक आरोप है, और हर आरोप यह सवाल है कि क्या एक सविधानिक पद पर बैठा अधिकारी भी इस देश में अपनी जाति की जंजीरों से मुक्त नहीं हो सकता? उन्होंने लिखा कि उन्हें लगातार "साइड पोस्टिंग" दी जाती रही, उनकी योग्यता को दबाया गया, और उन्हें जातिगत तंज और धमकियों से मानसिक रूप से तोड़ा गया।

पूरन कुमार का कैरियर रिकॉर्ड इस बात की पुष्टि करता है। मेहनत और ईमानदारी से उन्होंने पुलिस सेवा में पहचान बनाई, पर उन्हें बार-बार "कम प्रभावी" पदों पर भेजा गया — कभी आईजी होमगार्ड, कभी आईजी टेलीकम्युनिकेशन। जब अप्रैल 2025 में उन्हें रोहतक रेंज का आईजी बनाया गया, तब उन्होंने यह सोचा होगा कि अब मेहनत का फल मिला है। लेकिन मात्र पांच महीने बाद ही उन्हें सुनारिया पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज भेज दिया गया — और वहीं से उनकी मानसिक गिरावट की शुरुआत हुई।

यह कहानी सिर्फ एक अफसर की नहीं है, बल्कि पूरे सिस्टम की वह बीमार रग है जो 'योग्यता' के सामने 'पहचान' को रखती है। हमारे समाज में आरक्षण भले अवसर देता हो, लेकिन व्यवस्था अक्सर उसे स्वीकार नहीं करती। वह दलित अफसर को 'काबिल अधिकारी' की जगह 'आरक्षण वाला अफसर' कहकर छोटा करती है। पूरन कुमार की मौत ने यह दिखा दिया कि जाति का भूत सिर्फ समाज में नहीं, बल्कि सत्ता के गलियारों में भी घूमता है।

पूरन कुमार की पत्नी आईएएस अमनीत पी. कुमार ने दो अलग-अलग प्रतिवेदन दिए — एक में केवल डीजीपी और एसपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की, और दूसरे में सभी 15 अफसरों की गिरफ्तारी की। यह एक अधिकारी की नहीं, बल्कि एक संवेदनशील पत्नी और सहकर्मी की लड़ाई है जो व्यवस्था से इंसाफ मांग रही है। उन्होंने कहा कि "यह सिर्फ एक सुसाइड नहीं, बल्कि एक सिस्टमेटिक मर्डर है।"

एफआईआर दर्ज होने के बाद राज्य के एससी समुदाय से जुड़े कई आईएएस, आईपीएस और एचसीएस अफसर पूरन परिवार के समर्थन में खुलकर सामने आए हैं। यह अपने आप में ऐतिहासिक है, क्योंकि आमतौर पर नौकरशाही के भीतर एक 'मौन संस्कृति' चलती है — जहां अधिकारी अपने साथी पर टिप्पणी करने से भी कतराते हैं। लेकिन इस बार सन्नाटा टूटा है। अफसर कह रहे हैं कि पूरन कुमार का मामला एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि उस मानसिकता की हत्या है जो समानता और सम्मान की उम्मीद करती थी।

मुख्यमंत्री नायब सैनी ने परिवार से मुलाकात की और निष्पक्ष जांच का भरोसा दिया है। पर सवाल यह है कि क्या यह भरोसा न्याय में बदलेगा? क्या राज्य सरकार इतनी हिम्मत दिखा पाएगी कि डीजीपी जैसे शीर्ष अधिकारी को छुट्टी पर भेजे और एसपी को हटाए? या यह भी किसी और "आंतरिक जांच" की तरह फाइलों में गुम हो जाएगा?

हरियाणा की ब्यूरोक्रेसी में वर्षों से यह चर्चा होती रही है कि जातिगत गुटबाजी अफसरों की नियुक्तियों, ट्रांसफरों और प्रमोशनों को प्रभावित करती है। "कौन किसका है" — यह बात यहां पद से बड़ी हो जाती है। और जब इस गुटबाजी में जाति का तड़का लग जाता है, तो योग्यता, सत्यनिष्ठा और संवेदनशीलता सब हाशिये पर चली जाती हैं।

पूरन कुमार की मौत इस झूठी प्रतिष्ठा वाली मशीनरी पर एक नैतिक प्रश्नचिह्न है। यह घटना सिर्फ एक आत्महत्या नहीं, बल्कि एक सिस्टम की आत्मा की हत्या है — जो अपने अफसरों को मानसिक और जातिगत रूप से इतना तोड़ देती है कि वे जीवन से हार मान लेते हैं।

इस घटना के बाद यह उम्मीद की जा सकती है कि अब नौकरशाही के भीतर जातिगत भेदभाव पर खुली चर्चा शुरू होगी। लेकिन डर यह भी है कि यह मामला किसी प्रशासनिक औपचारिकता में तब्दील कर दिया जाएगा — जैसे हर बार होता है। जांच कमेटी बनेगी, बयान होंगे, और अंत में रिपोर्ट यह कहेगी कि "व्यक्तिगत कारणों से आत्महत्या थी।"

पूरन कुमार का लिखा हर शब्द आज भी सवाल बनकर हवा में तैर रहा है —

> "जब न्याय देने वाले ही अन्याय करने लगें, तो शिकायत किससे करें?"

एक संवेदनशील अफसर ने अपनी जान देकर यह दिखा दिया कि जाति का दर्द कुर्सी की ऊंचाई से नहीं मिटता। आज यह जिम्मेदारी सिर्फ सरकार की नहीं, बल्कि समाज की भी है कि वह यह स्वीकार करे — जातिवाद अब सिर्फ राजनीति नहीं, प्रशासन की आत्मा में भी जहर की तरह घुल चुका है।

पूरन कुमार चले गए, पर उनके सुसाइड नोट ने यह साफ कर दिया है कि अब नौकरशाही की चुप्पी भी एक अपराध है। उनकी मौत व्यवस्था से यह मांग करती है कि वह सिर्फ दोषियों को नहीं, बल्कि अपनी सोच को भी कटघरे में खड़ा करे। क्योंकि जब तक सिस्टम खुद को नहीं बदलेगा, तब तक हर पूरन कुमार के भीतर कोई न कोई गोली तनी रहेगी।

(नौकरशाही में एक्सटेंशन संस्कृति)

देश की नौकरशाही में एक्सटेंशन संस्कृति गंभीर समस्या बन चुकी है। वरिष्ठ अधिकारी सत्ता और राजनीतिक हाजिरी के आधार पर पदों पर टिके रहते हैं। हरियाणा के डीजीपी शत्रुजीत कपूर का मामला और आईपीएस पूरन कुमार की आत्महत्या यह दर्शाती है कि सच बोलने और ईमानदारी बनाए रखने की कोशिशें दबाई जा रही हैं। अफसरों के बीच गुटबाज़ी, भय और निष्पक्षता की कमी प्रशासनिक तंत्र को कमजोर कर रही है। यदि पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित नहीं की गई, तो प्रशासन केवल राजनीतिक हुकूमत का दास बनेगा और जनता का भरोसा टूट जाएगा।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

देश की नौकरशाही में एक्सटेंशन संस्कृति आज एक गंभीर समस्या बन चुकी है। वरिष्ठ अधिकारी अपनी सेवा अवधि के बाद भी सत्ता के निकटता और राजनीतिक हाजिरी के आधार पर पदों पर टिके रहते हैं। इससे न केवल प्रशासनिक निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं बल्कि यह संदेश भी जाता है कि योग्यता और दक्षता से अधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक सुख-संबंध और सत्ता के साथ सामंजस्य है। हरियाणा के डीजीपी शत्रुजीत कपूर का मामला, आईपीएस पूरन कुमार की दुखद आत्महत्या, और अफसरशाही के भीतर बढ़ती गुटबाज़ी इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि सच बोलने और ईमानदारी बनाए रखने की कोशिशें धीरे-धीरे दबाई जा रही हैं।

आज देश में कई वरिष्ठ अधिकारी अपने निर्धारित सेवा अवधि के बाद भी एक्सटेंशन पर बने हुए हैं। कुछ लोग इसे अनुभव का लाभ मानते हैं, तो कुछ इसे राजनीतिक सुविधा का परिणाम। वास्तविकता यह है कि एक्सटेंशन अब सम्मान नहीं बल्कि सत्ता के निकट रहने का प्रमाण बन चुका है। यदि कोई अफसर शासन की इच्छाओं के अनुरूप काम करता है तो उसके लिए नियमों की दीवारें लचीली हो जाती हैं, और यदि वह अपनी ईमानदारी और निष्पक्षता के साथ काम करता है तो उसे किनारे कर दिया जाता है।

हरियाणा में डीजीपी शत्रुजीत कपूर का मामला इस प्रवृत्ति का जीवंत उदाहरण है। जुलाई में सरकार ने घोषणा की कि वे 31 अक्टूबर 2026 तक अपने पद पर बने रहेंगे, यानी रिटायरमेंट तक। इस फैसले ने केवल आईपीएस बिरादरी में असंतोष नहीं फैलाया बल्कि यह सवाल भी खड़ा किया कि क्या किसी राज्य में इतनी लंबी अवधि के लिए राजनीतिक सुविधा अनुसार पद तय होना न्यायसंगत है।

आईपीएस पूरन कुमार का मामला इस संवेदनहीनता का काला अध्याय है। वह अधिकारी जिसने वर्षों से अपने साथ हुए भेदभाव, उत्पीड़न और अपमान के खिलाफ आवाज उठाई, अंततः सिस्टम की कठोरता के कारण टूट गया। उनकी आत्महत्या केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं है, बल्कि यह इस बात की गवाही है कि सच बोलने वाला अफसर आज सबसे असुरक्षित प्राणी बन चुका है। पोस्टमार्टम में देरी, अधिकारियों की चुप्पी और सत्ता का मौन इस सामूहिक अपराध को और स्पष्ट करता है। जब संस्थाएं व्यक्ति से बड़ी नहीं बल्कि व्यक्ति या सत्ता से बंधक बन जाएँ तो सच बोलने वाले की रक्षा करना असंभव हो जाता है।

हरियाणा पुलिस के भीतर आईपीएस अफसरों का एक गुट डीजीपी के खिलाफ मुखर है, जबकि दूसरा गुट सत्ता के साथ खड़ा है। यह विभाजन केवल पुलिस बल की कार्यक्षमता को कमजोर नहीं करता, बल्कि यह संदेश भी देता है कि सत्य और साहस अब गुटबाज़ी और व्यक्तिगत स्वार्थ के जाल में फँस चुके हैं। डीजीपी का कथित बयान कि "मैं छुट्टी पर जाऊँगा, तो मेरे लौटने तक किसी स्थायी डीजीपी की नियुक्ति न हो" प्रशासनिक अनुशासन के बजाय व्यक्तिगत सत्ता की अभिव्यक्ति है। सवाल यह नहीं कि वे कितने कुशल अधिकारी हैं, बल्कि यह है कि क्या किसी व्यक्ति को संस्थागत निर्णयों को इस तरह शर्तों में बाँधने की अनुमति होनी चाहिए।

हर लोकतंत्र की आत्मा उसकी स्वतंत्र नौकरशाही होती है। लेकिन जब नौकरशाही सत्ता की छाया में पलने लगे, तो वह लोकसेवा नहीं, राजसेवा बन जाती है। अफसरों के बीच यह धारणा मजबूत हो रही है कि सच बोलने से करियर खतरे में पड़ सकता है, जबकि हां में हां मिलाने से एक्सटेंशन और पोस्टिंग सुरक्षित रहती है। यह प्रवृत्ति केवल हरियाणा में नहीं, बल्कि लगभग हर राज्य में दिखने लगी है, जहां फाइलें अब नियमों से नहीं, बल्कि रिश्तों और राजनीतिक हाजिरी से चलती हैं।

पूरन कुमार जैसे मामलों में केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि संस्थागत सुधार की आवश्यकता है। एक्सटेंशन की नीति पारदर्शी होनी चाहिए और केवल असाधारण परिस्थितियों में ही विस्तार दिया जाना चाहिए। मानसिक उत्पीड़न और भेदभाव की शिकायतों पर स्वतंत्र जांच व्यवस्था होनी चाहिए। वरिष्ठ अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित हो, ताकि पद केवल शक्ति का प्रतीक न रहे, बल्कि उत्तरदायित्व का दायरा भी बने। राजनीतिक और प्रशासनिक संतुलन को पुनः परिभाषित किया जाए, ताकि अधिकारी भयमुक्त होकर अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

पूरन कुमार की दुखद मौत एक चेतावनी है कि यदि सच्चाई और ईमानदारी के लिए खड़ा होना जोखिम भरा हो जाए, तो प्रशासनिक प्रणाली का मूल उद्देश्य खतरे में पड़ जाता है। एक्सटेंशन पर टिके अधिकारी और चुपचाप देखती संस्थाएं इस बात का प्रतीक हैं कि सत्ता ने प्रशासनिक तंत्र को धीरे-धीरे अपने अधीन कर लिया है।

देश के नागरिकों को यह समझना चाहिए कि नौकरशाही की मजबूती व्यक्ति के साहस से नहीं, बल्कि संस्थाओं की पारदर्शिता और जवाबदेही से आती है। जब कोई अधिकारी अपनी नौकरी, सम्मान और अंततः जीवन तक गंवा देता है, तो यह केवल उसकी हार नहीं, बल्कि शासन की नैतिक पराजय है। अब सवाल यह नहीं कि कौन डीजीपी रहेगा, बल्कि यह है कि क्या कोई ऐसा अधिकारी बचेगा जो सच के लिए खड़ा हो सके। यदि ऐसे लोग नहीं बचे, तो देश में केवल राजनीतिक हुकूमत बचेगी और प्रशासनिक व्यवस्था समाप्त हो जाएगी।

हरियाणा का यह मामला पूरे देश के लिए आईना है। यह हमें याद दिलाता है कि सत्ता के दबाव और राजनीतिक स्वार्थ के बीच सच बोलने वाले अफसरों का अस्तित्व किस हद तक संकट में है। अगर प्रशासनिक तंत्र को बचाना है, तो पारदर्शिता, जवाबदेही और निष्पक्षता ही उसके आधार होना चाहिए। वरना केवल पद और सत्ता का खेल बच जाएगा, और जनता का भरोसा पूरी तरह टूट जाएगा।

किराये का घर ही नहीं

किराये का घर ही नहीं,
छूटा-छूटा है बहुत कुछ —
लोग, कोने, बच्चे, पेड़,
पार्क की बेंच पर बची हँसी,
खिड़की से झाँकती दोपहरें,
सब किसी पुराने पते पर रह गए।

दीवारों पर उभर आई थीं उँगलियों की छाप,
सपनों की धूल में लिपटी तस्वीरें,
रसोई के कोने में रोटियों की गर्म यादें,
अब सब किसी और की साँसों में बस गईं।

हर बार घर बदलने के साथ,
थोड़ा-थोड़ा हम भी बदल जाते हैं —
कुछ रिश्ते डिब्बों में पैक रह जाते हैं,
कुछ मुस्कुराहटें रास्ते में गिर पड़ती हैं।

कभी सोचता हूँ —
क्या इंसान सच में बसता है किसी घर में?
या घर बसता है उसके भीतर,
जहाँ भी जाए, वही किरायेदार बनकर।

-डॉ० सत्यवान सौरभ

दीपावली: प्रकाशों और जीवन के गहरे पाठ

विजय गर्ग

आंतरिक प्रकाश : यह विजय केवल बाहरी नहीं बल्कि व्यक्तिगत है। हर घर में जो अनगिनत दीपक जलाए जाते हैं, वे अपने आंतरिक राक्षसों पर विजय पाने के लिए एक अनुस्मारक होते हैं - जैसे अहंकार, लालच और भय - तथा आंतरिक ज्ञान और भलाई की रोशनी चमकने दें। यह उत्सव अज्ञानता के अंधेरे पर विजय पाने के लिए ज्ञान की निरंतर खोज को प्रोत्साहित करता है।

दिवाली, या दीपावली, रोशनी, पटाखे और मिठाई का एक शानदार त्योहार से कहीं अधिक है; यह एक गहरा उत्सव है जो मानवता के कुछ सबसे अस्थायी और आवश्यक जीवन पाठों को समेटता है। गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक कथाओं में जड़ रखने वाला यह पांच दिवसीय त्यौहार आत्मनिरीक्षण, नवीनीकरण और सार्वभौमिक मूल्यों की पुष्टि के लिए एक वार्षिक आह्वान है।

प्रकाशों के त्योहार से सबसे उज्ज्वल सबक यहां दिए गए हैं

1। अंधकार पर प्रकाश की विजय (बुरे पर अच्छा)

दीपावली अपने मूल में अंधेरे पर प्रकाश की विजय, अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर भलाई का शक्तिशाली प्रतीक है।

आध्यात्मिक विजयः दिवाली से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध किंवदंती यह है कि भगवान राम रावण को पराजित करने के बाद अयोध्या लौट आए। अयोध्या के लोगों द्वारा उनके मार्ग को उजागर करने के लिए दीया (तेल की लैंप) जलाए जाने से अंधेरा दूर हो जाता है और धर्म की विजय होती है।

आंतरिक प्रकाशः यह विजय केवल बाहरी नहीं बल्कि व्यक्तिगत है। हर घर में जो अनगिनत दीपक जलाए जाते हैं, वे अपने आंतरिक राक्षसों पर विजय पाने के लिए एक अनुस्मारक होते हैं - जैसे अहंकार, लालच और भय - तथा आंतरिक ज्ञान और भलाई की रोशनी चमकने दें। यह उत्सव अज्ञानता के अंधेरे पर विजय पाने के लिए ज्ञान की निरंतर खोज को प्रोत्साहित करता है।

नई शुरुआत और नवीनीकरण की शक्ति

दिवाली को अक्सर वर्ष के लिए 'पुनर्सेट बटन' दबाकर भौतिक और आध्यात्मिक सफाई का अवसर दिया जाता है।

सफाई और तैयारीः त्योहार से पहले पुरानी या अवांछित वस्तुओं (सफाई) को गहराई से साफ करने और फेंकने की परंपरा अतीत को साफ करने, नकारात्मक विचारों को छोड़ने और सकारात्मक नई शुरुआत का स्वागत करने के लिए तैयार होने का प्रतीक है।

एक स्वच्छ स्लेटः जैसे-जैसे कुछ क्षेत्रों में व्यवसाय दिवाली के साथ नया वित्तीय वर्ष मनाते हैं, त्यौहार नई

शुरुआत को प्रेरित करता है। यह हमें पिछली गलतियों को दूर करने, हर चुनौती से आशावादी तरीके से निपटने और खुले दिल के साथ नए सीखने के अनुभवों को अपनाने सिखाता है।

परिवार, एकता और देने का महत्व

दिवाली एक ऐसा समय है जो समुदाय, पारिवारिक बंधन और निस्वार्थ योगदान के महत्व पर जोर देता है।

एकजुटता और सामंजस्यः बहुदिवसीय उत्सव अनुष्ठानों, त्यौहारों और उपहार विनिमय के लिए परिवारों और समुदायों को एक साथ लाता है। यह एकता, वफादारी और बिना शर्त प्रेम के मूल्य को मजबूत करता है, जैसा कि उनके निर्वासन के दौरान भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के बीच गहरे बंधन से दर्शाया गया था।

देने का आनंद (दान): मिठाई साझा करने, उपहार आदान-प्रदान करने और देवी लक्ष्मी (समृद्धि की देवता) को प्रार्थना करने की परंपरा उदारता और कृतज्ञता की भावना पर प्रकाश डालती है। यह हमें याद दिलाता है कि वास्तविक धन केवल जमा होने के बारे में नहीं है बल्कि दूसरों, विशेष रूप से कम भाग्यशाली लोगों के साथ अपना समय, समर्थन और दयालुता साझा करने के बारे में भी है।

अखंडता, कर्तव्य और नैतिक नेतृत्व

दिवाली से जुड़ी कहानियां, विशेष रूप से रामायण नैतिक व्यवहार और नेतृत्व के बारे में शक्तिशाली सबक प्रदान करती हैं।

एक के वचन का सम्मान करनाः भगवान राम की अपने पिता के वचन पर अटल प्रतिबद्धता, भले ही इसका मतलब था कि वह अपनी हकदार सिंहासन को त्याग दे और 14 वर्षों तक निर्वासन का सामना कर ले, ईमानदारी का गहन महत्व सिखाती है, अपना वादा निभाती है तथा धर्म (धार्मिक कर्तव्य) को व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर रखती है।

नैतिक आचरणः कथा इस बात पर जोर देती है कि भले ही यह अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है, लेकिन एकमात्र ऐसा मार्ग है जो सच्ची और स्थायी जीत का नेतृत्व करता है।

मूलतः दीपावली स्वयं जीवन का एक सुन्दर रूपण है। दीया को जलाकर, कोई केवल घर के एक कोने को उजागर नहीं करता है; वह अपनी आंतरिक रोशनी से अपने कार्यों का मार्गदर्शन करने की शपथ लेता है, बुराई पर भलाई चुनता है, नवीनीकरण का स्वागत करता है और करुणा और एकता में समृद्ध जीवन जीता है। दीपावली का शाश्वत सबक यह है कि ₹आप दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं, वह बनें₹ और हमेशा अपने अंदर की रोशनी को पोषित करें ताकि वह हमारे आस-पास की दुनिया को उजागर कर सके।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

मानवीय लालच के कारण जंगलों को काटा जा रहा है

विजय गर्ग

प्रकृति में अनेक खाद्य श्रृंखलाएँ और खाद्य जाल हैं। जीवों की जनसंख्या प्राकृतिक रूप से खाद्य श्रृंखलाओं के माध्यम से नियंत्रित रहती है, लेकिन विकास और मनुष्य की लालची प्रवृत्ति के कारण प्रकृति का संतुलन लगातार बिगड़ रहा है।

जंगल सिकुड़ रहे हैं, जिससे जानवर रिहायशी इलाकों की ओर रुख कर रहे हैं। वनों की कटाई के कारण कई जानवरों के आवास नष्ट हो रहे हैं। पशु-पक्षी, पौधे, कीट-पतंगे प्रकृति के अभिन्न अंग हैं। धरती पर रहने वाले हर जीव-जंतु का, चाहे वह छोटा कीट हो या बड़ा जानवर, प्रकृति के संतुलन से गहरा नाता है। मधुमक्खियाँ न केवल शहद प्रदान करती हैं, बल्कि फसलों का परागण करके उपज भी बढ़ाती हैं। पक्षी कीड़े-मकोड़ों को खाकर फसलों की रक्षा करते हैं। जंगली जानवर न केवल प्रकृति की सुंदरता हैं, बल्कि हमारे पर्यावरण का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन दुर्भाग्य से, मानवीय लालच के कारण, जंगल काटे जा रहे हैं। औद्योगीकरण और शहरीकरण तेज़ी से बढ़ रहा है। प्रदूषण और जानवरों के शिकार से कई प्रजातियाँ खतरे में पड़ रही हैं। कई प्रजातियाँ या तो विलुप्त हो चुकी हैं या खतरे में हैं। अगर कई प्रजातियों पर ध्यान नहीं दिया गया, तो वे भविष्य में विलुप्त हो जाएँगी। उदाहरण के लिए, तेंदुआ, शेर, हाथी, गैंडा, बाघ और कस्तूरी मृग आदि।

यदि ये जीव विलुप्त हो गए तो खाद्य श्रृंखला टूट जाएगी और प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा। भारत में हर साल वन्यजीवों की रक्षा के लिए अक्टूबर माह में 2 से 8 अक्टूबर तक वन्यजीव सुरक्षा सप्ताह मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 1952 में भारतीय वन्यजीव बोर्ड ने की थी ताकि लंबे समय तक पूरे भारत में वन्यजीवों की रक्षा की जा सके। इस सप्ताह के दौरान सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा

स्कूलों और कॉलेजों में भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता और कई अन्य गतिविधियों का आयोजन किया जाता है ताकि बच्चों और उनके अभिभावकों को जागरूक किया जा सके। स्कूली बच्चों को प्रकृति से जोड़ने के लिए जंगलों और चिड़ियाघरों का भ्रमण भी कराया जाता है।

वन विभाग लोगों को वन्यजीवों की सुरक्षा के प्रति जागरूक भी करता है। भारत सरकार ने वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए कई कानून बनाए हैं और परियोजनाएँ क्रियान्वित की हैं, जैसे वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972, जिसके तहत जानवरों के शिकार पर प्रतिबंध लगाया गया है।

भारत सरकार ने कई राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य और बायोस्फीयर रिजर्व स्थापित किए हैं। इनमें प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर पक्षी अभयारण्य, गिर राष्ट्रीय उद्यान और सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान हैं।

भारत सरकार ने बाघ परियोजना 1973, परियोजना हाथी, परियोजना मगरमच्छ आदि कई परियोजनाएँ शुरू की हैं। कई राष्ट्रीय उद्यानों को बाघ अभयारण्य भी घोषित किया गया है। वन्यजीवों की सुरक्षा हमारी नैतिक और सामाजिक ज़िम्मेदारी है।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार

संपादकीय

चिंतन-मनन

धूप और छांव

विजय गर्ग

यात्रा में धूप से कठिनाई नहीं होती, बल्कि छाया से घबराना चाहिए, क्योंकि छाया में पथिक सो जाता है।' यह पंक्ति केवल शब्द नहीं हैं बल्कि जीवन में सफलता पाने के लिए मार्गदर्शन भी हैं। धूप और छाया केवल प्राकृतिक घटनाएं नहीं हैं, वे हमारे जीवन के संघर्ष और विश्राम के प्रतीक हैं। जीवन में इन दोनों का संतुलन समझने वाला व्यक्ति ही वास्तविक सफलता और संतोष प्राप्त कर सकता है। धूप का अनुभव जीवन की चुनौतियों, कठिनाइयों और बाधाओं के रूप में होता है। यह धूप कभी तेज होती है, कभी अप्रत्याशित । पर यह हमारी सहनशीलता, धैर्य और आत्मविश्वास की परीक्षा लेती है । एक पथिक अगर धूप में चलता है, तो उसे जलन और थकान होती है, पर उसकी मंजिल की ओर बढ़ने की प्रेरणा और तेज हो जाती है। इसी तरह, जीवन में आने वाले संघर्ष हमें हमारी छिपी हुई क्षमताओं से परिचित कराते हैं।

संघर्ष केवल कठिनाई नहीं है। यह हमारी ऊर्जा का स्तंभ भी है। उदाहरण के लिए, अगर कोई व्यक्ति नौकरी की तलाश में कई बार असफल होता है, तो वह निराश हो सकता है। पर यही असफलताएं उसे अपनी रणनीतियों को सुधारने, अपने कौशल को बढ़ाने और धैर्य सीखने का अवसर देती हैं। संघर्ष हमें आत्मनिर्भर बनाता है और हमें यह सिखाता है कि असली सफलता धैर्य और प्रयास के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

धूप हमें यह भी याद दिलाती है कि जीवन में स्थिरता हमेशा सुखद नहीं होती । अक्सर हम चुनौतियों से बचने के लिए आसान रास्ते ढूंढ़ते हैं। मगर यही आसान रास्ता हमें सीमित कर देता है। अगर हम लगातार आराम और स्थिरता में ही रहेंगे, तो हमारी क्षमताओं का विकास नहीं होगा । संघर्ष और कठिनाइयां हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि हमें क्या सीखना है और हमें किस दिशा में बढ़ना है। वहीं छाया का महत्त्व भी कम नहीं है। जीवन में विश्राम और ठहराव आवश्यक हैं। यह हमें मानसिक और शारीरिक ऊर्जा फिर प्राप्त

करने का समय देती है । पथिक की तरह, जो धूप की तीव्रता से थककर छाया में विश्राम करता है । हमें भी समय-समय पर ठहरकर अपने मन और शरीर को तरोताजा करना चाहिए, लेकिन ध्यान रखने की जरूरत है कि छाया में अधिक समय बिताना आलस्य और निराशा का कारण बन सकता है । अत्यधिक आराम हमारे उद्देश्य से भटका सकता है और आत्मविश्वास को कमजोर कर सकता है।

संतुलन बनाए रखना जीवन की कला है। संघर्ष और विश्राम के बीच सही संतुलन बनाने वाला व्यक्ति ही सच्ची सफलता पा सकता है। अत्यधिक संघर्ष मानसिक थकान पैदा कर सकता है, वहीं अत्यधिक विश्राम प्रगति को धीमा कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक किसान को दिन में खेत की मेहनत करनी होती है और शाम को

विश्राम। अगर वह केवल काम या केवल आराम करे तो फसल सही तरीके से नहीं उग पाएगी। जीवन में भी यही सिद्धांत लागू होता है।

धूप और छाया के बीच संतुलन का मतलब यह है कि हम संघर्ष को नकारात्मक दृष्टि से न देखें, बल्कि उसे सीखने और आगे बढ़ने का अवसर मानें। मानसिक दृष्टि से भी यह महत्त्वपूर्ण है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि कठिनाइयों का सामना करने वाले व्यक्ति में मानसिक दृढ़ता और समस्या सुलझाने की क्षमता अधिक विकसित होती है। वहीं केवल आराम और स्थिरता में रहने वाले व्यक्ति में आलस्य और आत्मविश्वास की कमी देखी जाती है। जीवन में संघर्ष और विश्राम का संतुलन हमें यह भी सिखाता है कि किस समय प्रयास करना है और कब ठहराव लेना है। जैसे एक विद्यार्थी लगातार पढ़ाई करता है, पर बीच-बीच में विश्राम नहीं करता तो उसकी सीखने की क्षमता प्रभावित होती है। वहीं अगर वह केवल आराम करता है और पढ़ाई पर ध्यान नहीं देता, तो उसकी सफलता अधूरी रहती है। इसी तरह, जीवन में धूप और छाया दोनों का उचित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। मसलन, किसी खिलाड़ी की सफलता केवल अभ्यास और मेहनत पर निर्भर नहीं होती, बल्कि पर्याप्त विश्राम और क्षमता को फिर से हासिल करने पर भी निर्भर करती है। अगर वह लगातार प्रशिक्षण लेता रहे और अपने शरीर को आराम न

दे, तो उसकी क्षमता प्रभावित होगी । अगर वह केवल आराम करता रहे

और अभ्यास नहीं करेगा तो वह कभी

खेल में उन्नति नहीं कर पाएगा। जीवन में भी यही सिद्धांत लागू होता है। संतुलन बनाए रखना सफलता की कुंजी है।

संघर्ष हमें जीवन की असली ताकत सिखाता है, जबकि विश्राम हमें ऊर्जा और मानसिक स्पष्टता प्रदान करता है। दोनों का सही प्रबंधन ही व्यक्ति को स्थिर, सशक्त और सफल बनाता है। मसलन, एक लेखक को नए विचारों के साथ लगातार लिखने की आवश्यकता होती है। अगर वह बिना विश्राम के लेखन करता रहे तो उसकी रचनात्मकता कम हो जाएगी।

इस तरह धूप और छाया दोनों हमारे शिक्षक हैं। धूप हमें सिखाती है संघर्षों से लड़ना और आगे बढ़ना । छाया हमें सिखाती है, विश्राम करना और फिर से ऊर्जा प्राप्त

करना। इसलिए यह आवश्यक है कि हम धूप का स्वागत करें । उसकी गर्मी और कठिनाइयों से घबराएं नहीं, बल्कि उन्हें अपनी शक्ति और आत्मविश्वास बढ़ाने का साधन मानें। वहीं छाया को केवल ऊर्जा फिर से प्राप्ति के लिए अपनाएं। उसमें डूबने से बचना चाहिए। जीवन में संतुलन बनाए रखने का यही मंत्र है।

संघर्ष और विश्राम के इस संतुलन को अपनाने वाला व्यक्ति न केवल मानसिक और भावनात्मक रूप से सुदृढ़ बनता है, बल्कि वह अपने जीवन के उद्देश्य को भी स्पष्ट रूप से समझ पाता है। उसकी यात्रा न केवल मंजिल तक पहुंचती है, बल्कि रास्ते में उसे जीवन के अनुभवों का भी सटीक ज्ञान मिलता है। यह संतुलन जीवन को सार्थक बनाता है और हमें यह समझने में मदद करता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी:आमी और मोहिनी

विजय गर्ग

एक घना जंगल था। उसके बीचों- बीच एक सुंदर नदी बहती थी । उसकी जलधारा पूरे वातावरण को मोहक बनाए रखती थी। नदी का नाम मोहिनी था। कल-कल, छल-छल करती इठलाती जलधारा किसी का भी मन अपनी ओर खींच लेती। जंगल के सारे जीव-जंतु सब उसी नदी का मीठा निर्मल नीर पीकर अपनी प्यास बुझाते । जो कोई भी एक बार नदी का जल पी लेता वो मोहिनी की तारीफ करने से खुद को रोक नहीं पाता था। मोहिनी भी सबकी प्यास बुझा कर स्वयं को धन्य समझती थी। वो इसे अपना धर्म मानती, प्यासे की प्यास बुझाने में उसे बड़ा आनंद आता। उसे स्वयं पर बिल्कुल भी घमंड नहीं था ।

मोहिनी के तट पर आम का एक वृक्ष था। उसका नाम आमी आम था। आमी के फल बहुत रसीले और मीठे होते थे । आम के मौसम में जंगल के सभी पशु-पक्षी आमी की टहनियों में चढ़े रहते । आमी भी इस दौरान अपनी टहनियों को झुका कर जंगल के सभी वासियों को फलों का उपहार देता । जंगल के जीव और पक्षी आमी की खूब तारीफ करते थे । इससे आमी को खूब प्रसन्नता होती थी। इस सबके बावजूद आमी ने हमेशा अपनी विनम्रता बनाए रखी।

आमी और मोहिनी में बड़ी गहरी दोस्ती थी। आमी की जड़ें मोहिनी की अंजुरी से मीठा जल सोख कर ही अपनी प्यास बुझाती थीं। मोहिनी के जल की मिठास का कारण आमी के रसीले फल भी थे। जो समय-समय पर मोहिनी की गोद में गिर जाया करते थे । आमी और मोहिनी की मित्रता पूरे जंगल में मशहूर थी ।

जंगल में बहू बंदर भी रहता था। वह आमी और मोहिनी की दोस्ती से बहुत चिढ़ता था । उसने आमी और मोहिनी की दोस्ती खत्म करने के लिए एक चाल चली। एक बार बहू आमी की डाली पर चढ़ा हुआ था। वो जोर-जोर से आमी की टहनियों को हिलाता, और उसके पत्तों को नोच रहा था। इससे आमी को बहुत कष्ट हो रहा था। थोड़ी देर तक परेशान होने के बाद आमी ने कहा, 'ये क्या कर रहे हो। बहू तुम बहुत बुरे हो । तुम्हें फल खाना हो तो खाओ, पर मेरी पत्तियों को इतनी बुरी तरीके से तो ना नोचो।'

'मोहिनी ठीक कहती थी। आमी खुद को बड़ा परोपकारी समझता है। लेकिन वो ऐसा है नहीं। बस दिखावा करता है, दिखावा।' बहू अपनी चाल का पासा फेंकते हुए बोला। 'अच्छा तो ये सब कहती है मोहिनी मेरे बारे में। मैं तो । उसे अपना सबसे अच्छा दोस्त समझता हूं।' आमी ने आश्चर्य करते हुए कहा। बहू मोहिनी की बातों को सुना अनसुना कर वहां से चला गया। लेकिन आमी के मन में मोहिनी के लिए गांठ पड़ चुकी थी ।

उधर बहू मोहिनी के तट पर जाकर पानी पीता है और मोहिनी के आंचल में ही कुल्ला कर देता है। उसमें थूकता है। मोहिनी को बहुत बुरा लगा। इस तरह की हरकत ने उसे बहुत दुखी किया। उसने कहा, 'अरे बहू भैय्या ये सब क्या है। अगर तुम्हें पानी पीना है तो आराम से पियो । पर ये गंदगी तो ना करो।'

'हां ! तो आमी सही था। वो बिल्कुल ठीक ही कह रहा था, कि मोहिनी को अपने मीठे पानी पर बहुत ज्यादा घमंड है। वो एक घमंडी नदी है'। बहू ने अपनी चाल का दूसरा तीर निशाने पर छोड़ते हुए कहा। 'अच्छा ! मेरा दोस्त ये सब कुछ सोचता है मेरे बारे में। मुझे विश्वास नहीं होता है। अभी सबक सिखाती हूं उसको।' मोहिनी ने गुस्से में कहा। बहू मोहिनी के गुस्से को भांप चुका था। वो तुरंत वहां से भाग गया।

अब आमी और मोहिनी एक-दूसरे के आमने-सामने थे । उन दोनों के माथे पर गुस्सा साफ दिखाई दे रहा था। वे एक- दूसरे को भला-बुरा बोल रहे थे। बिना सोचे विचारे वे अपनी

दोस्ती खत्म करने पर तुले थे। ठीक उसी समय वहां से एक साधु महाराज गुजरते हैं। वे दोनों से लड़ने का कारण पूछते हैं। दोनों ही अपनी-अपनी बात साधु महाराज के सामने रखते हैं। उन दोनों की बात सुनकर साधु महाराज मुस्कुराए । थोड़ी देर सोचने के बाद वे बोले, 'आमी और मोहिनी तुम दोनों आपस में लड़ नहीं रहे, बल्कि लड़वाए गए हो ।'

आमी और मोहिनी को साधु की बात सुन कर आश्चर्य हुआ, उन्होंने एक स्वर में प्रश्न किया, 'वो कैसे महाराज'। 'अरे बहू ने तुम दोनों के कान भरे हैं। तुम दोनों से एक-दूसरे के बारे में बुरा-भला कहा, और तुम उसकी बातों में आ गए। क्या तुम दोनों ने एक-दूसरे से ठंडे दिमाग से बात करने की कोशिश की ?'

दोनों ने शर्मिंदा होकर न में जवाब दिया। साधु महाराज ने दोनों के शर्मिंदा भरे स्वर को सुन कर कहा, 'यही तो है दिक्कत। कोई भी आकर हमारे कान भर जाता है और हम लोग आपस में लड़ने लग जाते हैं। बिना विचार किए कि आखिर सच्चाई क्या है।'

अब आमी और मोहिनी को सच का अहसास हुआ। दोनों ने एक-दूसरे से माफी मांगी, और फिर से दोस्ती का हाथ बढ़ा लिया। इसी खुशी में मोहिनी ने साधु महाराज को पीने को मीठा जल दिया। आमी ने रसीले आम भेंट किए। साधु महाराज जल पीकर और मीठे आमों से पेट भर कर अलख निरंजन करते हुए सघन वन की ओर चले गए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आज कल की शादियां- विवाह भावनात्मक कम, दिखावटी ज्यादा लगने लगी हैं

विजय गर्ग

बड़े बजट की शादियों से हर साल साठ हजार करोड़ आभूषण का कारोबार और पांच हजार करोड़ होटल उद्योग का कारोबार होने के साथ-साथ पौने चार लाख करोड़ का शादी उद्योग हो चुका है, जो सालाना पच्चीस से तीस फीसद विकास के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। आमतौर पर ज्यादातर लोगों के आसपास कोई ऐसा मध्यवर्गीय परिवार जरूर होगा, जो अपनी बेटी की शादी के लिए बैंक से उठाए कर्ज या फिर किसी अन्य मद में लिए गए ऋण को किस्तों में चुका रहा होगा। किसी बैंक से कर्ज लेकर चुकाने की कहानी किसी एक परिवार की नहीं, बल्कि ऐसे बहुत सारे परिवारों की है, जो कई बार अपने बच्चों की जिद के आगे रिश्तेदारों और समाज के आगे रुतबा बनाने के लिए या लड़के वालों की मांग के अनुसार अपनी चादर से ज्यादा शादी में खर्च कर देते हैं। इसका खमियाजा कई वर्षों तक उन परिवार को भुगतना पड़ता है।

'शादी का त्योहार' देश का चौथा सबसे बड़ा 'उद्योग' बन गया

बेशक शादी करने का तरीका सभी का अपना निजी निर्णय होता है, लेकिन दुर्भाग्यवश इन दिनों की शादियां भावनात्मक कम, दिखावटी ज्यादा लगने लगी हैं। इस संदर्भ में किसी धारावाहिक फिल्म का एक संवाद है- 'इंडिया में शादी, शादी नहीं, त्योहार है।' इस त्योहार को मनाने में भारतीय कोई कसर नहीं छोड़ रहे। यही कारण है कि आज यह देश का चौथा सबसे बड़ा 'उद्योग' बन गया है। जबकि पिछली सदी के नब्बे के दशक से पहले शादियों में निभाए जाने वाले रीति-रिवाजों को सबसे अधिक तवज्जो दी जाती थी।

रस्म--रिवाज की जगह फोटोग्राफी, सोशल मीडिया पर प्रचार हावी

उबटन से लेकर सात फेरों तक की सभी प्रक्रिया में स्पष्ट विधि, चलन और तौर-तरीकों को उपयुक्त समय दिया जाता था। लेकिन आज वह समय कुछ कम कर फोटोग्राफी, सोशल मीडिया पर प्रचार और अन्य सौंदर्य प्रधान कार्यों को दिया जा रहा है। कई बार ऐसा लगता है कि यह सब हो भी क्यों नहीं ! शादी में सबसे अधिक खर्चा शादी करने वाले स्थान, खानपान, फोटोग्राफी, आभूषण व अन्य प्रदर्शनपूर्ण कामों में हो रहा है तो उस खर्चे की प्रदर्शनी बहुत जरूरी है। एक आंकड़े के मुताबिक, इस प्रकार की बड़े बजट की शादियों से हर साल साठ हजार करोड़ आभूषण का कारोबार और पांच हजार करोड़ होटल उद्योग का कारोबार होने के साथ-साथ पौने चार लाख करोड़ का शादी उद्योग हो चुका है, जो सालाना पच्चीस से तीस फीसद विकास के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है।

खर्च के आधार पर तय होती है शादी की सफलता-असफलता

बेशक इससे लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिल रहा हो, लेकिन फिर वही बात कि शादी में सिर्फ शादी हो, उसे व्यापार नहीं लगना चाहिए। जब इन्हीं शादियों के शुरुआती चरणों में परिवारों के विचार-विमर्श की मेज पर सुनते हैं कि आप कितना खर्च करेंगे, शादी का स्थान कहां होगा, कितने स्टाल लगेंगे और क्या-क्या तोहफे एक दूसरे को दिए जाएंगे ? इन सब मुद्दों पर दोनों परिवारों के एकमत होने पर निर्धारित किया जाता है कि शादी सफल होगी या नहीं। इस बात का कितना औचित्य है ?

शायद दोनों परिवारों की हैसियत तो मिल जाए, लेकिन शादी के लिए जरूरी मूल्य और विचारों पर तो कोई बात ही नहीं करता। ऐसा मान लिया जाता है कि वह तो लड़की को पता ही होगा, लेकिन यह समझना होगा कि लड़की भी संपन्न परिवार से आई हो सकती है, जिसे लड़के वालों ने संपन्नता के कारण अपनाया है। ऐसे मामले में शादी धन देखकर की जाती है, न कि परिवार की अहमियत या कद देखकर। दुर्भाग्यवश दहेज के मामले भी इन्हीं संपन्न परिवारों में सबसे ज्यादा देखने को मिल रहे हैं। हाल में ही पश्चिम बंगाल के एक समृद्ध परिवार की लड़की ने ससुराल वालों की दहेज की प्रताड़ना के कारण आत्महत्या कर ली। हालांकि उसके परिवार ने शादी में लगभग दस करोड़ रुपए खर्च किए थे। एक रपट के मुताबिक, दहेज निषेध अधिनियम, 1961 होने के बावजूद लाखों मुकदमे पंजीकृत हो रहे हैं। यह सोचने का मामला है। एक अन्य पहलू भारत जैसे विकासशील देश के लिए यह भी है कि वैश्विक भुखमरी सूचकांक के मुताबिक भारत एक सौ सत्ताईस देशों में से एक सौ सातवें स्थान पर है। जहां बीस करोड़ लोग रोजाना खाली पेट भूखे सोते हैं, ऐसे देश में समृद्ध शादियों के नाम पर चालीस फीसद बना हुआ खाना शादियों में बर्बाद हो जाता है। देश को वे दिन जरूर याद रखने चाहिए जब कभी हम अनाज के लिए अन्य देशों पर निर्भर थे। आज अन्न की आत्मनिर्भरता विशेषकर संपन्न और मध्यवर्गीय परिवारों को बेलगाम बना रही है।

हमारी इन्हीं अनदेखी के कारण भारतीय शादियों की शानोशौकत की आलोचना की जाती है। शादियों में दिखावे के लिए देश में कोई महंगी अलग जगह चुनने से लेकर विदेश जाकर शादियां करने जैसे मामले सामने आते रहते हैं। लेकिन अब भारतीयों को अपने आसपास के स्थानों, संसाधनों और स्थानीय संस्कृति के माध्यम से शादियों पर ध्यान केंद्रित करना होगा, ताकि कम खर्च में सांस्कृतिक शादियों का आनंद उठाया जा सके। शादी धन का नहीं, आपसी समझ से कायम किया गया रिश्ता है।

जनता बनाम वादे: क्या इस बार सच होगा 'बदलाव'?

बिहार की सियासी रणभूमि पर 2025 का विधानसभा चुनाव एक ऐतिहासिक तूफान लाने को तैयार है, जो न केवल सत्ता का फैसला करेगा, बल्कि बिहार की तकदीर को भी नया रंग देगा। 6 और 11 नवंबर को दो चरणों में होने वाला यह महासंग्राम, 14 नवंबर को नतीजों के साथ, 243 सीटों और 7.42 करोड़ मतदाताओं के दम पर बिहार के भविष्य की दिशा तय करेगा। बेरोजगारी, पलायन, जातिगत जनगणना, महिला सशक्तिकरण और भ्रष्टाचार जैसे ज्वलंत मुद्दों पर एनडीए, महागठबंधन और जन सुराज पार्टी की रणनीतियां न सिर्फ मतदाताओं का दिल जीत रही हैं, बल्कि बिहार की दशकों पुरानी समस्याओं को हल करने का एक नया वादा भी पेश कर रही हैं। यह चुनाव सत्ता की कुर्सी से कहीं बढ़कर है—यह बिहार की उम्मीदों, आकांक्षाओं और बदलाव की जंग है।

बिहार में 15% से अधिक बेरोजगारी दर और लाखों प्रवासी मजदूरों की पीड़ा हर चुनाव को प्रभावित करती है। एनडीए, जिसमें भाजपा और जेडीयू की जोड़ी अहम है, ने अपने संयुक्त घोषणापत्र में 10 लाख नौकरियों, स्किल यूनिवर्सिटी और औद्योगिक निवेश का भरोसा दिलाया है। भाजपा हिंदुत्व, अवैध घुसपैठ और महिला सुरक्षा के मुद्दों को जोड़कर शहरी और ऊपरी जाति के वोटरों को रिझा रही है, जबकि जेडीयू का सुशासन मॉडल सड़कों, बिजली और सिंचाई के दम पर ग्रामीण इलाकों में अपनी पकड़ मजबूत कर रहा है। सर्वे एनडीए को 136-160 सीटों का अनुमान दे रहे हैं, लेकिन 2020 की 125 सीटों (भाजपा 74, जेडीयू 43) के बाद जेडीयू 25-31 सीटों तक सिमट सकती है। अगर एनडीए की रणनीति कामयाब रही, तो भाजपा बिहार में 'गुजरात मॉडल' का परचम लहरा सकती है, लेकिन असफलता नीतीश कुमार की जेडीयू को सियासी हाशिए पर धकेल देगी, खासकर जब प्रशांत किशोर ने दावा किया है कि जेडीयू 25 सीटों से आगे नहीं बढ़ेगी।

तेजस्वी यादव की अगुवाई में महागठबंधन बेरोजगारी को सामाजिक न्याय के साथ जोड़कर एक नई लहर पैदा कर रहा है। आरजेडी का घोषणापत्र 10 लाख सरकारी नौकरियों और जातिगत जनगणना के आधार पर आरक्षण बढ़ाने का वादा करता है, जो 85% ओबीसी-एससी/एसटी आबादी को लुभाने की ताकत रखता है, खासकर तब जब 88% संपत्ति उच्च जातियों के पास है। कांग्रेस का 'अतिपिछड़ा न्याय संकल्प' ईबीसी और दलितों के लिए विशेष पैकेज लेकर आया है, और प्रियंका गांधी की सभाओं में महिलाओं को यह संदेश दिया जा रहा है कि वे एनडीए के लाभ लें, लेकिन वोट महागठबंधन को दें। वामपंथी दल कर्जमाफी और ग्रामीण विकास पर जोर दे रहे हैं। 2020 में 110 सीटें (आरजेडी 75, कांग्रेस 19) जीतने वाला यह गठबंधन अब 100-105 सीटों की उम्मीद कर रहा है, लेकिन कांग्रेस की 55-70 सीटों की मांग से गठबंधन में दरारें साफ दिख रही हैं। अगर ये वादे हकीकत बने, तो तेजस्वी बिहार के सबसे युवा मुख्यमंत्री बनकर सामाजिक न्याय की नई क्रांति ला सकते हैं; वरना, महागठबंधन फिर से विपक्ष की बेंच गर्म करता दिखेगा।

प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने जातिगत जनगणना, शिक्षा सुधार और पलायन रोकथाम जैसे मुद्दों पर ताजा दृष्टिकोण पेश किया है। उनका पांच-सूत्री एजेंडा—शिक्षा, पलायन रोकथाम, महिला-किसान सशक्तिकरण, वृद्ध पेंशन (400 से 2000 रुपये) और उद्योग—5 लाख करोड़ के निवेश और शराबबंदी हटाकर राजस्व जुटाने पर केंद्रित है। 5000 किमी की बिहार बदलाव यात्रा ने युवाओं और ऊपरी जातियों में जोश भरा है। सर्वे में जन सुराज को 40 सीटों का अनुमान है, और सभी 243 सीटों पर 40 महिलाओं सहित 90% नए चेहरों के साथ यह पार्टी बिहार की सियासत को बहुध्रुवीय बनाने की ताकत रखती है। अगर जन सुराज 30-40 सीटें जीत लेती है, तो यह बिहार की राजनीति में भूचाल ला देगी, लेकिन असफलता प्रशांत किशोर की साख को गहरा झटका दे सकती है।

महिला सशक्तिकरण और भ्रष्टाचार इस चुनाव में केंद्रीय मुद्दे हैं। एनडीए की 'महिला रोजगार योजना' महिलाओं को 10,000 रुपये मासिक सहायता और 2 लाख का ऋण प्रदान करती है, जो आर्थिक सशक्तिकरण का वादा करती है। दूसरी ओर, महागठबंधन आरक्षण और सुरक्षा को प्राथमिकता देता है, जबकि जन सुराज महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का दावा करता है। भ्रष्टाचार के मोर्चे पर तेजस्वी यादव का 'संस्थागत भ्रष्टाचार' का आरोप एनडीए पर भारी पड़ रहा है। चुनाव आयोग के 100% वेबकास्टिंग जैसे 17 सुधार पारदर्शिता को बढ़ावा देंगे, लेकिन 3.5 लाख मतदाताओं के नाम हटने का विवाद मतदाता सूची की विश्वसनीयता पर सवाल उठाता है।

छठ पूजा के बाद प्रवासी मतदाताओं की वापसी और 12% वोट लीड एनडीए को बढ़त दे सकती है, लेकिन महागठबंधन की उभरती लहर और जन सुराज की ताजा अपील इसे कड़ी टक्कर दे रही हैं। एनडीए की जीत भाजपा को बिहार का नया राजनीतिक केंद्र बनाएगी, महागठबंधन की विजय सामाजिक न्याय को नई दिशा देगी, और जन सुराज की सफलता बिहार की सियासत को त्रिकोणीय बना देगी। यह चुनाव बिहार की आकांक्षाओं का निर्णायक मोड़ है—क्या यह विकास और न्याय का मार्ग प्रशस्त करेगा, या वादों का धुंधलका यथावत रहेगा?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

जीएसटी : बाल उखाड़कर मुर्दे को हल्का करने की कोशिश

अपने कुकर्म को छिपाकर उसे 'उत्सव' में बदलने की कला में कोई पार्टी माहिर है, तो उस पार्टी का नाम भारतीय जनता पार्टी है। उसे न तो जुमलेबाजी करते शर्म आती है और न ही बड़ा गप्प (झूठ) बोलने में। यही इस पार्टी का चाल, चरित्र, चलन है।

नोएडा में इंडिया एक्सपो मार्ट में बोलते हुए परिधान मंत्री ने महंगाई के लिए कांग्रेस पर दोष लगाया, जबकि वे पिछले 11 सालों से राज कर रहे हैं और इन 11 सालों में कोई भी रोजमर्रा का सामान सस्ता होना तो दूर, बल्कि 2014 की तुलना में उसका दाम कम से कम दुगुना जरूर हो गया है।

उपभोक्ता मामलों के विभाग के अनुसार, 2014/ अगस्त 2025 में दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतें इस प्रकार थीं : मूंग दाल -- 97.26 रुपये/ 112 रूपये प्रति किलोग्राम, उड़द दाल -- 79 रुपये/ 140 रुपये, अरहर दाल -- 75.83 रुपये/ 145 रुपये, आटा -- 21 रूपये/ 37 रुपये, शक्कर -- 26 रूपये/ 50 रुपए प्रति किलोग्राम था। पेट्रोल की कीमत 73.16 रुपये/ 100 से 107 रुपए प्रति लीटर थी और डीजल 55.48 रुपये/ 93 से 96 रुपए प्रति लीटर था।

नॉन-बायोलॉजिकल परिधान मंत्री को अर्थशास्त्र का यह छोटा सा सूत्र भी नहीं मालूम कि महंगाई दर में वृद्धि का कम होना (जिसका दावा अक्सर उपभोक्ता मामलों का विभाग करता रहता है), महंगाई का कम होना नहीं होता। यदि महंगाई कम हुई होती, तो सरकारी कर्मचारियों को महंगाई भत्ता देने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

2017 में भी महंगाई कम होने का जोर-शोर से उस समय ऐलान किया गया था, जब पूरे देश में 'एक देश, एक टैक्स' के रूप में जीएसटी लागू किया गया था। तब इसी भाजपा ने जीएसटी को महंगाई के खिलाफ रामबाण औषधि बताया था। लेकिन 8 साल बाद इसी सरकार को स्वीकार करना पड़ा है कि इस औषधि से महंगाई कम नहीं हुई है। अब चार स्लैबों में लगने वाली जीएसटी को दो स्लैबों तक सीमित करके 'बचत उत्सव' मनाया जा रहा है। इससे कुछ वस्तुओं के मूल्य में कमी जरूर आ सकती है, लेकिन यह आशा करना बेकार है कि महंगाई कम होगी और आम जनता की क्रय शक्ति बढ़ जाएगी।

पिछले 8 सालों में मोदी सरकार ने जीएसटी के रूप में 55 लाख करोड़ रुपयों से ज्यादा टैक्स बटोरा है -- यानी हर साल औसतन 7 लाख करोड़ रूपये। अब संशोधित जीएसटी से सरकार को लगभग 5 लाख करोड़ रुपए मिलेंगे और उसे लगभग 2 लाख करोड़ रुपयों का घाटा होगा। लेकिन यह इतनी बड़ी रकम नहीं है कि आम जनता की क्रय शक्ति में उछाल आ जाएं, क्योंकि यह सकल कर राजस्व का 10% से भी कम है। संशोधित जीएसटी से जिन वस्तुओं के दाम कम होने की आशा की जा रही है, उस पर सेस लगाने का अधिकार तो केंद्र के पास है ही। यदि राजस्व में होने जा रही कमी को वह चुपचाप सेस लगाने के जरिए पूरा करना चाहेगी, तो आम जनता को कुछ भी राहत नहीं मिलेगी। मोदी सरकार का यह मनपसंद रास्ता है, क्योंकि इससे होने वाली आय को राज्यों के साथ बांटना नहीं पड़ता।

'एक देश, एक टैक्स' का नारा लगाने वाली सरकार ने पेट्रोल-डीजल और अन्य पेट्रोलियम पदार्थों को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा है। यदि पेट्रोलियम पदार्थों को जीएसटी के दायरे में लाया जाएं, तो बाजार में इसकी कीमत वर्तमान से आधी ही रह जाएगी। सभी जानते हैं कि बाजार की महंगाई में सबसे बड़ा योगदान पेट्रोल और डीजल की कीमतों का ही है, क्योंकि यह महंगाई में उत्प्रेरक का काम करती हैं। यदि मोदी सरकार महंगाई को कम करने के प्रति थोड़ी भी ईमानदार होती, तो वह पेट्रोल-डीजल को जीएसटी के दायरे में लाती। लेकिन वह ऐसा नहीं करेगी, क्योंकि इन पर अनाप-शनाप टैक्स लगाकर वह हर साल 6 लाख करोड़ रुपयों की कमाई कर रही है और अपने राजस्व घाटे को पूरा कर रही है। इसका अर्थ है कि संशोधित जीएस से आम जनता को जितना राहत मिलने का सरकार दावा कर रही है, पेट्रोल डीजल की बढ़ी चढ़ी कीमतों के जरिए उससे तीन गुना ज्यादा वसूल कर रही है।

जीएसटी से मिलने वाली राहत की तुलना ट्रंप के टैरिफ से होने वाली मुसीबत से की जाए, तो यह राहत भी पानी में जाती नजर आती है, क्योंकि इस टैरिफ से जो महंगाई और बेरोजगारी पैदा हो रही है और आम जनता की क्रय शक्ति में जो भारी गिरावट आने वाली है, उसके मुकाबले राहत के ये छींटे कहीं नजर नहीं आएंगे।

यदि मोदी सरकार अर्थव्यवस्था के इस संकट से जरा भी चिंतित होती, तो बचत उत्सव का नाटक नहीं करती। लेकिन मोदी की चिंता तो वे कॉर्पोरेट हैं, जिन पर वह इस देश की संपदा लुटा रही है।

****

2. जोर का झटका जोर से

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपना घरेलू बाजार बचाने और दूसरों का बाजार हड़पने की जिस नीति पर चल रहे हैं, वह केवल अमेरिकी अर्थव्यवस्था के साथ साथ पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को संकट में डालने वाला है। अब अमेरिका दुनिया से अलग कोई ग्रह तो है नहीं कि दुनिया संकट में फंसे और अमेरिका पर उसका कोई असर ही न पड़े। सभी देश अमेरिका की बाजार हड़प नीति के खिलाफ, दुनिया को संकट से बाहर निकालने के लिए मिल-जुलकर बचाव और सुरक्षा के रास्ते खोज रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि भारत इस सबसे चिंतित है, क्योंकि इसके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बकलौली में ही मस्त है। ऊपर से नीचे तक विदेशी वस्तुओं से लदकर वे देश को स्वदेशी का मंत्र जपने को कह रहे हैं!

जब इधर वे स्वदेशी से आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ा रहे थे, तभी उधर से वार हुआ और ट्रम्प ने अमेरिका फ़र्स्ट का नारा बुलंद करते हुए एच-1 बी वीज़ा पर एक लाख डॉलर (करीब 88 लाख रुपए) की फ़ीस लगाने का ऐलान कर दिया। यह भारी-भरकम फीस अमेरिकी श्रमिकों की रक्षा करने और वीज़ा सिस्टम के ग़लत इस्तेमाल को रोकने, योग्य पेशेवरों को ही अमेरिका में घुसने देने के नाम पर लगाया गया है। अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लटनिक ने अमेरिकी उद्योगपतियों से कहा है कि 'अमेरीकी लोगों को प्रशिक्षित करो। बाहर से लोगों को लाकर हमारी नौकरियां छीनना बंद करो।'

जब वैश्वीकरण की नीति लागू की जा रही थी, तो यही अमेरिका दुनिया को समझा रहा था कि सूचना और प्रौद्योगिकी विकास के चलते पूरी दुनिया एक गांव में तब्दील हो गई हैं और भविष्य में राष्ट्र की सीमाएं भी निरर्थक हो जाएंगी। इसलिए व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को खत्म करने और वस्तुओं की आवाजाही को बेरोकटोक सुनिश्चित करने की जरूरत है, ताकि दुनिया के सभी लोगों की सभी जरूरतें आसानी से पूरी की जा सके। दिखने में यह सिद्धांत तो बड़ा मासूम और निर्दोष लगता था, लेकिन वास्तव में यह तब अमेरिकी पूंजी के लिए मुनाफे का रास्ता खोलने का मंत्र था।

बहरहाल, दुनिया हमेशा एक जैसी नहीं रही है और अमेरिका की मर्जी के हिसाब से ढली भी नहीं है। उसकी स्वतंत्र गति है, जो न ट्रंप की इच्छा से नियंत्रित होती है और न ही मोदी की सदिच्छा से। दोनों की दोस्ती से भी इस गतिकी पर कुछ खास फर्क नहीं पड़ता, और तब तो और नहीं, जब भारत नामक किसी देश के प्रधानमंत्री में अमेरिकी फैसले का प्रतिवाद करने का साहस न हो और इस कायरता को छुपाने के लिए वह बकलौली की वीरता का दिखावा करते हुए घूमे।

एच-1 बी वीज़ा पर एक लाख डॉलर (करीब 88 लाख रुपए) की फ़ीस लगाने के ट्रंप प्रशासन के फैसले से भारत में अफरा तफरी मची हुई है। यह अफरा तफरी जनजीवन से लेकर औद्योगिक जगत तक फैल चुकी है। विभिन्न स्तरों पर हाल-फिलहाल अमेरिका की यात्रा पर न जाने की सलाह दी जा रही है, मशविरे जारी किए जा रहे हैं। अमेरिका में एच-1 बी वीज़ाधारकों में भारतीयों की हिस्सेदारी 70 फ़ीसदी से ज्यादा है। लाखों भारतीय अमेरिका जाकर ही अपना जीवन सुधारने के सपने देखते हैं और अमेरिका में वैध या अवैध प्रवेश के लिए हर तरह का जोखिम उठाने को तैयार रहते हैं। अब लाखों परिवार इस चिंता में हैं कि अमेरिका में रहें या नहीं, या भारत लौटने पर उनकी नौकरी और पढ़ाई की क्या सुविधा रहेगी। वीज़ा नियमों में बदलाव का सीधा असर भारत के टेक सेक्टर और प्रोफेशनल्स पर पड़ने वाला है। सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग अब सोच में पड़ गया है कि कैसे इस चुनौती का सामना करे। लेकिन इन सब को नज़रंदाज़ करते हुए मोदी चुप हैं और स्वदेशी की बकलौली कर रहे हैं।

अब यह साफ हो जाना चाहिए कि ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रवाद का मुकाबला करने की ताकत संघी गिरोह के राष्ट्रवाद में नहीं है। वह अपनी कमजोरी को स्वदेशी की बकलौली में छुपाकर समय काटने की रणनीति पर चल रहा है और उसे आशा है कि भविष्य में अपने आप कुछ ऐसा हो जाएगा, जिससे संकट टल जाएगा और उसके हिंदू राष्ट्रवाद को उछाल मिलेगा। जबकि ऐसा कुछ होने नहीं जा रहा है। संकट तभी टलेगा, जब अमेरिकी साम्राज्यवाद से लड़ने की नीति बनाई जाएगी और इसके लिए विदेश नीति और घरेलू नीति में बड़े सुधार किए जाएंगे। विदेश नीति के क्षेत्र में आज हम अमेरिका की दुम से बंध गए हैं, जबकि घरेलू नीति अडानी अंबानी के मुनाफे से तय हो रही है। इस नीति को अलविदा कहना भाजपा और संघी गिरोह के बस की बात नहीं है। इसलिए यदि देश बचाना है और देश के आत्मसम्मान की रक्षा करना है, तो वोट चोरी पर टिकी इस साम्राज्यवादपरस्त और कॉर्पोरेटपरस्त संघी सरकार को ही अलविदा कहना होगा।

(टिप्पणीकार अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं)

नुआपाड़ा उपचुनाव से पहले सियासत गरमा गई है,आज ढोलकिया बीजेपी मे शामिल हो सकते !

मनोरंजन सासमल ,बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : नुआपाड़ा उपचुनाव से पहले सियासत गरमा गई है। 2,53,624 की आबादी वाली नुआपाड़ा सीट पर उपचुनाव 11 नवंबर को होना है, लेकिन बीजद और भाजपा अपने उम्मीदवारों की घोषणा करने में कांग्रेस से पीछे रह गए हैं। इस बीच, खबर आई है कि दिवंगत राजेंद्र ढोलकिया के बेटे जय ढोलकिया आज भाजपा में शामिल हो सकते हैं। जय ढोलकिया को प्रदेश भाजपा कार्यालय में पद्म सम्मान मिल सकता है। नुआपाड़ा उपचुनाव से पहले राजनीतिक गहमागहमी का दौर जारी है। 2024 के आम चुनावों में यह सीट बीजद के पास थी। बीजद उम्मीदवार राजेंद्र ढोलकिया ने 61,822 वोट हासिल करके जीत हासिल की। निर्दलीय उम्मीदवार गाजीराम माझी 50,941 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। कांग्रेस ने इस उपचुनाव के लिए गाजीराम को पहले ही पार्टी उम्मीदवार घोषित कर दिया है।

पूर्व सांसद बसंत पांडा के बेटे अभिनंदन पांडा भाजपा से 44,814 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर रहे। पिछले महीने की 8 तारीख को राजेंद्र ढोलकिया के निधन के बाद इस सीट पर उपचुनाव होने जा रहा है। दिवंगत ढोलकिया के बेटे जय ढोलकिया के उपचुनाव लड़ने की चर्चा है। लेकिन वह किस पार्टी से चुनाव लड़ेंगे, यह अब सबसे बड़ा चर्चा का विषय बन गया है। कुछ सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, सत्तारूढ़ भाजपा जहां जय को उम्मीदवार बनाने पर विचार कर रही है, वहीं बीजद इसे लेकर चिंतित है। क्योंकि बीजद ढोलकिया के परिवार से उम्मीदवार उतारकर सहानुभूति वोट पाने की उम्मीद कर रही है। लेकिन कहा जा रहा है कि पिछले कुछ दिनों की कुछ घटनाओं के कारण ढोलकिया का परिवार बीजद पर उतना भरोसा नहीं कर रहा है। पार्टी में चर्चा है कि नुआपाड़ा में बीजद द्वारा शुरू की गई पदयात्रा को किस तरह से अंजाम दिया जा रहा है, यह देखने के बाद सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। क्योंकि बीजद ने पदयात्रा के लिए जय ढोलकिया को पार्टी के झंडे, बैनर आदि तो भेज दिए हैं, लेकिन उन्होंने अभी तक कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं किया है। बीजद के कुछ वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि अगर जय ढोलकिया पदयात्रा का सही ढंग से आयोजन नहीं करते हैं, तो सब कुछ साफ हो जाएगा। वहीं दूसरी ओर, राज्य में भाजपा के सत्ता में आने के बाद यह पहला उपचुनाव होने जा रहा है। इसलिए सत्तारूढ़ भाजपा इस उपचुनाव को धमाकेदार तरीके से जीतने की कोशिश करेगी। ऐसे में जय का नई दिल्ली दौरा सभी दलों के बीच चर्चा का विषय बन गया है।

ममता का नेटवर्क कभी कमजोर नहीं होता

कभी रिश्ते दूरी से टूटा करते थे, आज वही दूरी नये अर्थ रच रही है। पहले "दूर रहना" मतलब था बिछड़ जाना, अब यही दूरी "साथ रहने" की नई परिभाषा गढ़ रही है। विदेशी धरती पर बसे बच्चे, जिनकी कामयाबी माता-पिता के सीने में गर्व जगाती है, वही अब उस गर्व के पीछे छिपे सन्नाटे का कारण बन रहे हैं। यह नया युग है—जहाँ भावनाएँ ऑनलाइन सिमटती हैं, मुलाक़ातें ऑफलाइन बिखरती हैं, और अपनापन वाई-फाई के सिग्नल पर टिका है। यह कहानी है उन अनगिनत परिवारों की, जो मीलों की दूरी में भावनात्मक सेतु तलाशते हैं। यह कहानी है बदलते रिश्तों की, जहाँ प्रेम अब मीलों में नहीं, वीडियो कॉल के चंद पलों में साँस लेता है—दिलों को जोड़ता है, पर पूरी तरह पास नहीं लाता।

विदेश गए बच्चे अब सिर्फ़ बेटा-बेटी नहीं, प्रवासी भारतीय बन चुके हैं। वे सपनों की उड़ान में नई ऊँचाइयाँ छू रहे हैं, पर पीछे छूट जाता है वह घर, जहाँ उनकी कहानी शुरू हुई थी। माता-पिता, जो कभी उनके जीवन का केंद्र थे, अब धीरे-धीरे हाशिए पर खिसक रहे हैं। सुबह की चाय के साथ माँ फोन की घंटी का इंतज़ार करती है; पिता टाइम ज़ोन के हिसाब से घड़ी मिलाते हैं। बच्चे, अब विदेशी शहरों की चकाचौंध में रमे, रात की थकान के बाद व्हाट्सऐप पर लिखते हैं, "माँ, अब सो जाओ।" संवाद है, पर उसमें पहले सी गर्माहट नहीं। बातचीत अब समय की कमी, नेटवर्क की उपलब्धता और कैलेंडर की उलझनों में सिमटती है। रिश्ते तकनीक के मोहताज हो गए हैं, जहाँ एक मिस्ड कॉल भी दिल को बेचैन कर देता है।

माता-पिता का जीवन, जो कभी बच्चों की हँसी, शरारतों और ज़रूरतों के इर्द-गिर्द घूमता था, अब वीडियो कॉल के छोटे-छोटे फ्रेम में कैद हो गया है। कैमरे के सामने माँ हँसती है, पर कॉल कटते ही उसकी आँखें खामोश दीवारों से सवाल करती हैं। पिता की आवाज़, जिसमें कभी आदेश की गूँज थी, अब सलाह में बदल गई है—अधिकार नहीं, एक अनकहा इंतज़ार बचा है। वे जानते हैं, बच्चे अब उनके पास नहीं, पर पूरी तरह खोए भी नहीं। रिश्ते अब संवाद से नहीं, स्मृतियों से जीवित हैं। माँ को आज भी याद है, बेटे को नींद न आए तो वह कितने प्यार से लोरी सुनाती थी। पिता को याद है, बेटी की पहली साइकिल सवारी में वह कैसे पीछे-पीछे दौड़ा था। ये स्मृतियाँ ही हैं, जो उन्हें जीवित रखती हैं, जब बच्चे मीलों दूर अपने नए जीवन में मशगूल हैं।

यह दूरी सिर्फ़ किलोमीटरों की नहीं, जीवन की प्राथमिकताओं की भी है। विदेश गए बच्चे अब करियर, सामाजिक दायरे और नए परिवेश में रम चुके हैं। माता-पिता उनके लिए अब "परिवार" से ज़्यादा "बैक होम सपोर्ट सिस्टम" बन गए हैं। माँ-बाप की सलाह अब उतनी प्रासंगिक नहीं लगती। उनका घर अब बच्चों के लिए छुट्टियों की मंज़िल है—जहाँ वे लौटते हैं, पर रुकने की नहीं, सिर्फ़ मुलाक़ात की योजना बनाते हैं। बैंक ट्रांसफर, मेडिकल इंश्योरेंस और सालाना टिकटों के बीच भावनाओं का हिसाब सिमट जाता है। बच्चे कोशिश करते हैं कि माता-पिता के लिए उपलब्ध रहें, पर ज़िंदगी की रफ्तार उन्हें भावनाओं से पीछे छोड़ देती है। "माँ, मैं बिज़ी था" या "पापा, अगले हफ्ते कॉल करता हूँ" जैसे वाक्य अब रिश्तों की ज़ुबान बन गए हैं। प्रेम अब भी है, पर वह "थैंक यू" इमोजी और "मिस यू" मैसेज में सिमट गया है।

माता-पिता भी समय के साथ ढल रहे हैं। नाराज़गी अब दिल में नहीं ठहरती, शिकायतें होंठों तक नहीं आतीं। उन्होंने मान लिया है कि बच्चों की सफलता की कीमत उनकी दूरी है। अकेलापन अब "आज़ादी" का नाम लेता है, और इंतज़ार "रोज़मर्रा" का हिस्सा बन गया है। माँ ने व्हाट्सऐप की डीपी बदलना सीख लिया, पिता ज़ूम कॉल की लिंक खोलने में माहिर हो गए। तकनीक के साथ तालमेल बिठाकर वे बच्चों से जुड़े रहने की जद्दोजहद में हैं। पर इस तालमेल में एक खालीपन है। स्क्रीन पर बच्चों का चेहरा देखकर आँखें चमकती हैं, पर दिल कहीं गहरे में चाहता है—काश यह मुलाक़ात स्क्रीन की बजाय सामने हो। यह रिश्ता समझौते का नहीं, सह-अस्तित्व का है—दूरियाँ हैं, पर दोनों पक्ष उसे टूटने नहीं देना चाहते।

पर इस "दूर रहकर भी साथ" के समीकरण में एक अनकहा सवाल तैरता है—क्या भावनाएँ अब भी उतनी गहरी हैं? विदेश में बच्चे नई संस्कृति, नए मूल्यों और नए ताने-बाने में रच-बस गए हैं। उनकी सोच, तौर-तरीके और प्राथमिकताएँ बदल गई हैं। दूसरी ओर, माता-पिता अब भी पुरानी परंपराओं और अपेक्षाओं से बँधे हैं। यह अंतर इतना सूक्ष्म है कि शुरू में कोई भाँप नहीं पाता। पर धीरे-धीरे संवाद का स्वर बदलता है। "माँ, तुम समझती क्यों नहीं?" और "बेटा, अब तुझे पहचानना मुश्किल है" जैसे वाक्य उस अदृश्य दरार को उजागर करते हैं, जिसे कोई चाहकर भी अनदेखा नहीं कर पाता। बच्चे चाहते हैं कि माता-पिता उनकी नई दुनिया को समझें; माता-पिता चाहते हैं कि बच्चे उनकी पुरानी दुनिया को भूलें नहीं। यह एक ऐसी रस्साकशी है, जो थकाती है, पर प्रेम इसे हारने नहीं देता।

फिर भी, इन दूरियों में अपनापन मिटा नहीं। उसका रूप ज़रूर बदल गया है। अब प्रेम घर की घंटी से नहीं, फोन की घंटी से जागता है। दुआएँ अब पोस्टकार्ड पर नहीं, ईमेल के ड्राफ्ट में सिमटती हैं। पर आश्चर्य यह है कि इस आधुनिक रिश्ते में भी वही पुरानी गंध बसी है—माँ के आँचल की, पिता के मौन गर्व की। माता-पिता जानते हैं कि बच्चे कितने ही दूर क्यों न हों, उनकी हँसी, उनकी आवाज़, उनका वजूद अब भी इस घर की दीवारों में गूँजता है। बच्चे भी समझते हैं कि चाहे वे कितने व्यस्त क्यों न हों, माँ-पिता की दुआएँ हर कदम पर उनके साथ हैं। यह प्रेम अब शब्दों में कम, भावनाओं में ज़्यादा साँस लेता है।

आज का यह भावनात्मक समीकरण एक नए संतुलन की तलाश में है। माता-पिता अब बच्चों की हर पल की मौजूदगी की उम्मीद नहीं करते; वे बस इतना चाहते हैं कि बच्चे उन्हें भूलें नहीं। बच्चे भी चाहते हैं कि उनकी अनुपस्थिति को गलत न समझा जाए। दोनों के बीच अब संवाद से ज़्यादा एक संवेदनशील समझ की ज़रूरत है। यही समझ वह सेतु है, जो मीलों की दूरी को पाटता है। समय बदल गया है, पर ममता का कैलेंडर नहीं बदला। विदेशी धरती पर उगते सूरज के साथ भी, भारत के किसी घर में एक माँ आज भी वही प्रार्थना दोहराती है—"बेटा, जहाँ भी रहो, खुश रहो।" इस एक वाक्य में सिमटा है वह प्रेम, जो दूरी में भी साथ चलता है, समय के साथ फीका नहीं पड़ता। यह वह धागा है, जो कभी टूटता नहीं—बस लंबा होता जाता है, फिर भी दोनों सिरों को जोड़े रखता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

78वें वार्षिक निरंकारी संत समागम की तैयारियाँ व्यापक स्तर पर

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : संत निरंकारी मिशन का 78वां वार्षिक संत समागम, पूर्ववर्ती वर्षों की दिव्यता और गरिमा के अनुरूप, इस वर्ष भी 31 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2025 तक समालखा (हरियाणा) स्थित संत निरंकारी आध्यात्मिक स्थल पर अत्यंत भव्यता, श्रद्धा और आध्यात्मिक उल्लास के साथ आयोजित होने जा रहा है। यह दिव्य आयोजन सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता रमित जी के पावन सान्निध्य में संपन्न होगा, जिसकी शुभ सूचना ने समस्त श्रद्धालु भक्तों के हृदयों में अपार हर्ष और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार कर दिया है।

'आत्ममंथन' विषय पर आधारित इस वर्ष का वार्षिक संत समागम अपने आप में एक अद्भुत एवं अनुपम आध्यात्मिक यात्रा है, जहां श्रद्धालु ब्रह्मज्ञान की आंतरिक ज्योति में सेवा, सिमरन और सत्संग करते हुए आनंद और प्रेमाभक्ति का अनुभव प्राप्त करेंगे।

इस दिव्य उत्सव की तैयारियाँ अत्यंत श्रद्धा, लगन एवं निःस्वार्थ भावना से की जा रही हैं। श्रद्धालु भक्त, चाहे वे वृद्ध हों या युवा, पुरुष हों या महिलाएं, हर पृष्ठभूमि के भक्त सेवा में पूर्ण रूप से रत हैं। प्रातः काल की प्रथम किरण से लेकर संध्या के अंतिम प्रकाश तक, हर ओर भक्ति भाव से समर्पित सेवा का अपूर्व आलोक दिखाई देता है। कोई मिट्टी के तसले ढो रहा है, कोई शामियाने गाढ़ रहा है, तो कोई सफाई, जल प्रबंधन या भोजन व्यवस्था में जुटा है। 78वें वार्षिक संत समागम की भव्यता को प्रकट करता हुआ मुख्य गेट भी आकार लेने लगा है - एक ऐसा प्रवेश-द्वार, जो प्रेम, समरसता और आत्मिक एकत्व की यात्रा का प्रतीक बनेगा।' यह सब कुछ समर्पण की उस भावना का प्रमाण है, जो सतगुरु के ज्ञान से उत्पन्न होती है। जिस प्रकार कहा भी गया है कि 'जहाँ सेवा में समर्पण जुड़ जाता है, वहीं हर क्षण उत्सव बन जाता है।'

सेवा भाव की गरिमा को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि इन सेवकों के मुखमंडलों पर कोई थकान नहीं, अपितु आनंद और उल्लास की आभा झलक रही है। यह वही दिव्य आनंद है, जिसे केवल सतगुरु की छत्रछाया में रहकर, सेवा और भक्ति के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है। सतगुरु माता जी भी अपने प्रवचनों में बारंबार यही प्रेरणा देती हैं कि 'तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र दिये दान, मन पवित्र हरि भजन सों, त्रिबिध होई कल्याण।'

देश के कोने-कोने से ही नहीं, अपितु विदेशों से भी लाखों श्रद्धालु भक्त इस संत समागम में सम्मिलित होने के लिए पधारते हैं। उनके स्वागत एवं सुविधाओं हेतु सभी आवश्यक प्रबंध अत्यंत सुचारू रूप से किए जा रहे हैं। रेलवे स्टेशन, बस अड्डों और हवाई अड्डों पर निरंकारी सेवादल के अनुशासित, मर्यादित एवं सुसज्जित सेवादार अपनी नीली और खाकी वर्दियों में श्रद्धालुओं का हार्दिक अभिनंदन करते हुए उन्हें उनके निर्धारित निवास स्थलों तक ससम्मान पहुँचाने हेतु सतत तत्पर रहेंगे।

निसंदेह यह समागम केवल एक साधारण आयोजन नहीं, अपितु मानवता के उत्थान और समरसता के जागरण का एक अनुपम पर्व है, जहाँ विविध संस्कृतियों, भाषाओं और परिवेशों से आए श्रद्धालु भक्त 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को आत्मसात करते हुए, सतगुरु की अमृतवाणी से अपनी अंतरात्मा को जागृत करते हैं। इस पावन अवसर पर हर उस सज्जन, भाई व बहन का हृदय से स्वागत है, जो प्रेम, शांति, समरसता के इस दिव्य महायज्ञ का हिस्सा बनना चाहती है।

राष्ट्रीय मानकों पर बनेंगे रांची के तीनों बस टर्मिनल मिली 48.72 करोड़ की स्वीकृति

कार्तिक परिच्छा , स्टेट हेड-झारखंड

रांची , राजधानी रांची के तीनों प्रमुख बस टर्मिनलों आइटीआई बस स्टैंड, सरकारी बस डिपो और बिरसा मुंडा बस टर्मिनल खादगढ़ा का कायाकल्प अब राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप किया जाएगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शहरीकरण के कार्यों में तेजी लाने के क्रम में इन सभी टर्मिनलों के आधुनिकीकरण, नवीनीकरण और जीर्णोद्धार का निर्देश दिया है।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर नगर विकास एवं आवास मंत्री सुदिव्य कुमार ने कुल 48.72 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी है। इसमें आइटीआई बस स्टैंड के लिए 24.77 करोड़, सरकारी बस डिपो के लिए 20.19 करोड़ और बिरसा मुंडा बस स्टैंड के लिए 3.76 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। मंत्री ने विभागीय प्रधान सचिव सुनील कुमार को जुडको के माध्यम से कार्य शीघ्र आरंभ कराने का निर्देश दिया है।

वर्तमान में यात्रियों के लिए न्यूनतम सुविधाओं वाले इस बस स्टैंड को आधुनिक रूप में विकसित किया जाएगा।यह तीन एकड़ क्षेत्रफल में बनेगा, जिसमें 2330 वर्गमीटर ग्राउंड फ्लोर और 880 वर्गमीटर प्रथम तल पर टर्मिनल भवन होगा।

यहां ड्राइवर कैंटीन, मेंटेनेंस शेड, गार्ड रूम, स्लाइडिंग प्रवेश द्वार, प्रतीक्षालय, कार, ऑटो और ई-रिक्शा पार्किंग की सुविधा होगी। प्रथम तल पर रेस्टोरेंट, प्रशासनिक भवन, टिकट काउंटर, डॉरमेट्री, लॉकर युक्त गेस्ट रूम तथा हरियाली के लिए लैंडस्केपिंग की व्यवस्था रहेगी।

साल 1962 से 1970 के बीच बना यह डिपो अब जर्जर अवस्था में है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर इसे 20.19 करोड़ रुपये की लागत से इंडियन रोड कांग्रेस मानकों के अनुसार पुनर्निर्मित किया जाएगा।

नए भवन में 1771 वर्गमीटर ग्राउंड फ्लोर और 845 वर्गमीटर प्रथम तल में सुविधाएं विकसित होंगी। यहां गार्ड रूम, मेंटेनेंस क्षेत्र, डॉरमेट्री, प्रतीक्षालय, फूड कियोस्क, शेडयुक्त बस वे, स्लाइडिंग गेट, कार व ऑटो स्टैंड जैसी सुविधाएं होंगी। आठ बस वे के जरिये रोजाना लगभग 512 बसों का परिचालन होगा।

वर्तमान ढांचे को बरकरार रखते हुए इस बस स्टैंड को 3.76 करोड़ रुपये की लागत से और अधिक सुविधाजनक बनाया जाएगा। जहां 11.6 एकड़ में फैले इस परिसर में 31 बस वे, 89 बसों व 70 कारों के लिए पार्किंग, स्मार्ट शेड, 50 बेड की डॉरमेट्री, रेस्टरूम, स्नानागार, गेस्टहाउस, हाइमास्ट लाइट, बाउंड्री वाल और महिला सुरक्षा की विशेष व्यवस्था की जाएगी।

परिसर का लैंडस्केपिंग और सौंदर्यीकरण भी किया जाएगा।

प्रधान सचिव सुनील कुमार ने जुडको को निर्देश दिया है कि तीनों बस टर्मिनलों के टेंडर शीघ्र जारी कर कार्य प्रारंभ किया जाए।

इन परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद रांची के बस टर्मिनल राज्य ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर के मॉडल स्टैंडर्ड पर नजर आएंगे,जहां यात्रियों को सुरक्षा, स्वच्छता और आधुनिक सुविधाओं का बेहतर अनुभव मिलेगा।

झारखंड के मंत्री इरफान के बेटे के 'करामात' पर राचीं उपायुक्त ने लिया संज्ञान

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची ,झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी के बेटे कृष अंसारी एकबार फिर चर्चा में हैं। उनको चलती कार के सनरूफ से बाहर निकलकर खड़े होकर हाथ हिलाने का एक वीडियो तेजी से वायरल होने पर डीसी मंजूनाथ भजंत्री ने इस प्रकरण पर संज्ञान लिया है। उन्होंने जिला परिवहन अधिकारी को ऐक्शन लेने के निर्देश दिए हैं। कृष ने हाल ही में गाड़ियों के काफिले के साथ चलती कार के सनरूफ से खड़ा होकर वीडियो शूट कराया था। यह वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड किया गया था।

वायरल वीडियो में कृष अंसारी को सनरूफ से बाहर खड़े होकर दृश्य को कैद करते देखा गया। इसके बाद यह वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ। प्रशासन ने इसे गंभीर सुरक्षा उल्लंघन माना है। उपायुक्त ने ट्वीट कर कहा है कि उन्होंने इस घटना पर संज्ञान लिया है और जिला परिवहन पदाधिकारी को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। उन्होंने रांची पुलिस को भी टैग करके रिपोर्ट मांगी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, प्रशासन ने मोटर व्हीकल एक्ट 1988 की 179, 177, 190 सहित अन्य धाराओं के तहत कार्रवाई करते हुए स्वास्थ्य मंत्री के बेटे पर 3650 रूपय का चालान काटा है। इनमें सामान्य ट्रैफिक उल्लंघन, असुरक्षित वाहन चलाना, सीट बेल्ट का उल्लंघन जैसे नियमों की अनदेखी शामिल है।

इन्फोसिस ने स्लाइट के 82 छात्रों का नौकरियों के लिए किया चयन

परिवहन विशेष न्यूज

लोंगोवाल, 11 अक्टूबर (जगसीर सिंह)- इंफोसिस ने संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट) में प्लेसमेंट अभियान चलाया, जिसमें कुल 82 छात्रों का चयन हुआ। स्लेट के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट विभाग के डीन (पूर्व छात्र एवं औद्योगिक संबंध) प्रोफेसर रविकांत मिश्रा ने कहा कि स्लाइट के इतिहास में किसी भी कंपनी द्वारा किया गया यह अब तक का सबसे बड़ा चयन है। इससे पहले 2018 में, जब डॉ. मिश्रा स्लाइट के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट विभाग के प्रमुख थे, तब इंफोसिस ने 58 छात्रों का चयन किया था। उन्होंने बताया कि संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मणिकांत पासवान के नेतृत्व में प्रोफेसर मेजर सिंह (विभागाध्यक्ष, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट), प्रोफेसर अश्वनी अग्रवाल (प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट अधिकारी), डॉ. दिवेश भारती, डॉ. सुबिता भगत, डॉ. तजिंदर सिंह, डॉ. जगदीप सिंह (एटीपीओ), श्री नवनीत (एपी, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट), श्री सलीम खान (ओएस, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट), श्री गुरजंट सिंह, श्री बलकार सिंह, श्री केशव, श्री फरहान, एसपीआरएस टीम और पूर्वछात्रों के सहयोग से यह महत्वपूर्ण उपलब्धि संभव हो पाई है। गौरतलब है कि 20 से अधिक देशों में कार्यरत एक अग्रणी भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी इंफोसिस, आईटी सेवाओं और परामर्श क्षेत्र में अपनी वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए जानी जाती है। इतनी बड़ी कंपनी में चयन स्लाइट के नए स्नातकों के लिए करियर की एक मजबूत और शानदार शुरुआत का अवसर है। स्लाइट के निदेशक प्रोफेसर मणिकांत पासवान ने प्रोफेसर रवि कांत मिश्रा के नेतृत्व में कार्यरत पूरी प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट टीम को बधाई दी। उन्होंने इस बार चयनित न हो पाने वाले छात्रों का भी उत्साहवर्धन किया और कहा कि आने वाले महीनों में और भी नामी कंपनियाँ स्लाइट परिसर में आ रही हैं। उन्होंने छात्रों को तैयारी पर ध्यान केंद्रित रखने की सलाह दी। इस अवसर पर प्रोफेसर कमलेश प्रसाद (डीन), श्री हरिमोहन अरोड़ा (रजिस्ट्रार), प्रोफेसर सुरिंदर सिंह (डीन), संकाय सदस्यों और अधिकारियों ने स्लाइट की प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट टीम और चयनित छात्रों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई दी।

सारंडा आईईडी ब्लास्ट में हेड कांस्टेबल शहीद तथा जवान घायल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा , शुक्रवार की देर रात झारखंड के चाईबासा जिले में नक्सलियों द्वारा किए गए आईईडी विस्फोट में घायल सीआरपीएफ के हेड कांस्टेबल महेंद्र लश्कर शहीद हुए हैं . नक्सलियों के द्वारा किए गए हमले में शुक्रवार की रात सीआरपीएफ के इंस्पेक्टर सहित तीन जवान घायल हुए थे. शाहिद हेड कांस्टेबल महेंद्र लस्कर असम के नौगांव के रहने वाले थे. उनका पार्थिव शरीर रांची में पोस्टमार्टम के बाद सीआरपीएफ कैंप में सलामी दी गयी .

नक्सलियों ने प्रतिरोध सप्ताह के दौरान बड़ी वारदात को अंजाम दिया है शुक्रवार की रात नक्सलियों के द्वारा किए गए विस्फोट में सीआरपीएफ के हेड कांस्टेबल महेंद्र लश्कर शहीद हो गए हैं. पुलिस मुख्यालय के द्वारा महेंद्र लश्कर के शहीद होने की पुष्टि की गई है.विस्फोट में सीआरपीएफ बटालियन के इंस्पेक्टर कौशल कुमार मिश्रा और सब इंस्पेक्टर रामचंद्र गोगी भी गंभीर रूप से घायल हैं. दोनों का अस्पताल में इलाज चल रहा है.

पुलिस मुख्यालय के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार शुक्रवार की देर रात चाईबासा के मनोहरपुर प्रखंड के सारंडा जंगल में नक्सलियों के द्वारा किए गए आईईडी विस्फोट में सीआरपीएफ 60 बटालियन के इंस्पेक्टर सहित तीन जवान घायल हो गए थे. जिसमें इलाज के दौरान ही हेड कांस्टेबल महेंद्र लश्कर वीरगति को प्राप्त हुए.

मामले को लेकर चाईबासा एसपी अमित रेणू ने बताया कि सारंडा में सुरक्षा बलों के द्वारा चलाए जा रहे नक्सल विरोधी अभियान के दौरान दो आईईडी ब्लास्ट हुआ था. जिसमें सुरक्षा बल के अधिकारी समेत तीन जवान घायल हुए हुए थे. घायलों को निकट उड़ीसा राज्य के राउरकेला ओपोलो अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती करवाया गया है.

(राजनीतिक विश्लेषण) आजम दरबार में क्यों पहुँचे अखिलेश यादव?

प्रभुनाथ शुक्ल

प्रदेश की राजनीति में नए क्षितिज उभर रहे हैं। राज्य विधानसभा चुनाव 2027 को लेकर सत्ता और विपक्ष अपनी-अपनी कमर कसता दिख रहा है। हालांकि अभी चुनाव में वक्त है लेकिन राजनैतिक दलों ने माहौल बनाना शुरू कर दिया है। भाजपा जहां सत्ता खोना नहीं चाहती, वहीं उत्तर प्रदेश का मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी पीडीए को साधने में जुटा है। लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का बेहतर प्रदर्शन रहा था। इस प्रदर्शन ने भारतीय जनता पार्टी की नींद उड़ा दी थी । समाजवादी पार्टी अगर यही प्रदर्शन दोहराती है तो विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए मुश्किल खड़ी हो सकती है।

अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी को मजबूत करने के लिए जुटे हैं और सत्ता पक्ष के काम का अक्सर विरोध करते दिखते हैं। आजम खान की जेल से रिहाई के बाद अखिलेश यादव खुद रामपुर जाकर उनसे मिले। इसके पीछे तर्क दिया जा रहा था कि आजम खान समाजवादी पार्टी से नाराज है और वह बसपा में जा सकते हैं। इन सब अटकलों को देखकर अखिलेश यादव को आखिर आजम खान के दरबार में माथा टेकना पड़ा।

आजम खान की सियासी शरण में जाना अखिलेश यादव की मजबूरी है क्योंकि उत्तर प्रदेश में मुस्लिम और पिछड़ा वर्ग ही उनका जनाधार है। पिछड़ा वर्ग में भी सभी जातियों को हम शामिल नहीं कर सकते लेकिन यादव और मुसलमान अखिलेश के साथ खड़े रहते हैं। आजम खान समाजवादी पार्टी के बड़े चेहरे हैं। समाजवादी पार्टी से अगर आजम खान किनारा करते तो अखिलेश यादव की राजनीतिक पकड़ बेहद कमजोर हो जाती। ऐसी स्थिति में मुस्लिम वोट बैंक को साधने के लिए आजम शरणम गच्छामि होना पड़ा।

आजम का प्रभाव पश्चिमी यूपी में मजबूत है। यूपी में 2011 जनगणना के अनुसार, मुसलमानों की कुल आबादी तकरीबन 20 फीसदी है। 2025 अनुमान है कि यह आबादी तकरीबन साढ़े चार करोड़ पहुंच जाएगी। सबसे अहम सवाल उठता है कि क्या मुसलमान आजम खान को अपना नेता मानता है हालांकि यह कहना पूरी तरह से गलत होगा कि यूपी का मुसलमान आजम के साथ पूरी तरह खड़ा है। मुसलमानों में कई नेता है और सबके अपने-अपने समर्थक। सिर्फ आजम खान के इशारे पर मुसलमान नहीं खड़ा होगा।

हालांकि उत्तर प्रदेश की राजनीति में मुसलमानों की अहमियत को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता । इसकी वजह है कि प्रदेश के सभी राजनीतिक दल मुसलमान वोट बैंक साधने के लिए उनके साथ खड़े रहते हैं। हालांकि यह भी सच है मुसलमान भारतीय जनता पार्टी को भी बड़े पैमाने पर वोटिंग करता है। भाजपा साल 2017 के चुनाव में पश्चिम के मुस्लिम बहुल इलाकों में भी अपना परचम लहरा चुकी है।

उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटों में तकरीबन 55 से 60 सीटों के आसपास मुसलमानों का दबदबा है। साल 2017 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने यहां कल 82 सीटों में 62 पर विजय हासिल की थी । यह चौंकाने वाला आंकड़ा था और राजनीतिक विश्लेषकों को चक्कर में डाल दिया था. मुस्लिम सभी सियासी मिथक को तोड़ते हुए भारतीय जनता पार्टी के साथ खड़े मिले।

उत्तर प्रदेश की लोकसभा में 80 सीटों में तकरीबन 20 से 22 सीटों पर मुसलमानों का प्रभाव है। इसमें सहारनपुर बिजनौर, मुरादाबाद, अमरोहा, संभल और मुजफ्फरनगर एवं रामपुर जैसे संसदीय इलाके शामिल हैं । यही कारण है कि अखिलेश यादव को आजम खान से मिलने रामपुर हवेली जाना पड़ा। समाजवादी पार्टी से अगर मुस्लिम नाराज होता है तो उसके लिए बड़ी चुनौती होगी। सवाल यह भी है कि वह नाराज होकर भी कहाँ जाएगा लेकिन पूरा मुसलमान सिर्फ समाजवादी पार्टी के साथ है, ऐसा कहना भी मुश्किल है। वह मायावती की बहुजन समाज पार्टी और भाजपा के साथ भी खड़ा मिलता है। चुनाव में यह भी ट्रेंड देखा गया है कि मुसलमान परिस्थितियों को देखते हुए अपनी वोटिंग करता है।

उत्तर प्रदेश में उधर एक और सियासी घटना ने सपा के लिए नई चुनौती का जन्म दिया है। लखनऊ में काशीराम परिनिर्वाण दिवस पर बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती की तरफ से आयोजित रैली से समाजवादी पार्टी की नींद उड़ गई है। उधर दलितों का मसीहा बनने की कोशिश कर रहे चंद्रशेखर आजाद रावण भी उलझन में हैं क्योंकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी कमजोर स्थिति में नहीं। तकरीबन 10 साल बाद मायावती की राजनीतिक सक्रियता ने उनके सपने पर पानी डाल दिया है। लखनऊ में उमड़ी दलितों की भीड़ ने साबित कर दिया है कि मायावती में दलित पूरी तरह आस्था रखता है। बसपा कैडर बेस पार्टी है. बगैर प्रचार के इतनी भारी भीड़ ने सब की नींद उड़ा दी है।

मायावती ने जहां भाजपा की जमकर प्रशंसा की, वहीं अखिलेश यादव पर निशाना साधा. उनकी सरकार में किए गए कार्यों को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि दलितों के साथ समाजवादी पार्टी सरकार ने दोगली राजनीति की। उत्तर प्रदेश में एक बार फिर मायावती की सक्रियता ने अखिलेश यादव के पीडीएफ फार्मूले को झटका दिया है। मायावती की कुछ वर्षों की निष्क्रियता से भाजपा केंद्र और राज्य सरकार की नीतियों के बदौलत दलितों को अपनी तरफ मोड़ने में कुछ कामयाब दिखीं।

हालांकि जमीनी सच्चाई यही है इस भीड़ से बसपा और दलित भले खुश हों कि बसपा तेजी से उभर रहीं है लेकिन सिर्फ दलित वोट से वह राजनीति में वापसी नहीं कर सकती क्योंकि मौजूदा वक्त गठबंधन का दौर है और भारतीय जनता पार्टी इसमें सबसे सशक्त दिखाई पड़ती है। केंद्र और राज्य में उसकी सत्ता होने से इसका सीधा लाभ मिल रहा है। छोटे दल भाजपा की सत्ता में सहभागी बनकर मलाई काट रहे हैं।

राजनीतिक गलियारों में यह भी माना जा रहा है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा की पकड़ कमजोर हो रही थी। माना जा रहा था कि 2027 के चुनाव में भाजपा की राह आसान नहीं होगी जिसकी वजह से भाजपा ने मायावती को री-लांच किया है क्योंकि मायावती ने इस रैली के दौरान भाजपा और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जमकर तारीफ की जबकि अखिलेश यादव पर खूब बरसी। रैली ने समाजवादी पार्टी के लिए चुनौती बढ़ा दी है और बसपा जितना उत्तर प्रदेश में मजबूत होगी, आने वाले 2027 के चुनाव में भाजपा की राह उतनी ही आसान होगी।

धड़ल्ले चल रहा सरायकेला के ईचागढ़ में अवैध बालू कारोबार

के 0के0 परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

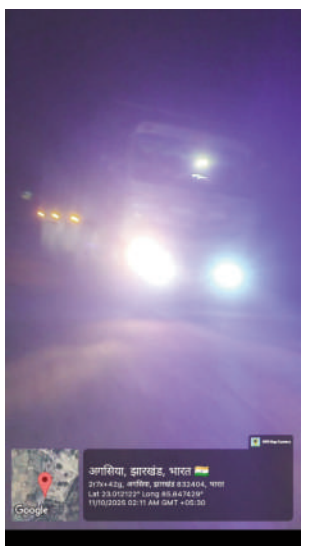

ईचागढ़ (जारगोडीह) , सरायकेला खरसावां जिले के ईचागढ़ अनुमंडल के विभिन्न इलाकों में बालू का अवैध व्यापार का खेल जारी है । एन जी टी रोक के बावजूद यह कारोबार माफिआओं के जरिये जोर-शोर से किया जा रहा है ।

बालू का मुख्य उठाव स्थल रांगामाटी - सिल्ली मार्ग होते हुए मिलन -चौक बालु घाट से इचागढ़ थाना नजदीक से सभी गाड़ियां निकल रही है । इस क्रम में विभाग की सक्रियता तो बनी रहती है पर पर पुलिस की कार्यप्रणाली स्वतंत्र एजेंसी की जांच के दायरे में बनता नजर आ रहा है ।

इस इलाके से रोज करीबन 100 से ऊपर हाईवा यहां देर रात को बालू लेकर निकलती है । अवैध बालू लोड लिए हुए हाईवा पकड़े जाने पर उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वली कहावत चरितार्थ होते देखा गया है । आश्चर्य की बात ये सभी गाड़ियां इचागढ़ थाने के मुख्य दरवाजे से हो करगुजराती है।

बताया जाता है कि सभी गाड़ियों की गिनती और वसूली थाना के एक मुंशी इस कार्य में नियोजित है। जो वर्दी की ईमानदारी उच्चस्तरीय जांच का विषय है । इस अवैध कारोबार में चोर पुलिस की भाईचारा आश्चर्य की नई बात नहीं यहां सरकार को प्रतिदिन करोड़ों रूपये का चुना लग जाय परवाह किसी को नहीं । सरकारी राजस्व को चुना लगना जहां आम बात बन चुकी है ।

भुखमरी भरा जीवन जीने को मजबूर 4 करोड़ निर्माण श्रमिकों की सुध लेने की मांग

संगरूर,11 अक्टूबर (जगसीर लोगोंवाल)- भारतीय निर्माण मिस्त्री मजदूर यूनियन (सीटू) की तहसील स्तरीय बैठक को संबोधित करते हुए सीटू के प्रांतीय महासचिव चंद्र शेखर, मनरेगा मजदूर यूनियन के प्रांतीय महासचिव अमरनाथ कूमकलां और सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन (सीटू) के जिला सचिव हनुमान प्रसाद दुबे ने कहा कि आजाद भारत को बड़े-बड़े बांध, महलों जैसी इमारतें, नदियां-नहरें सहित बड़ी सरकारी इमारतें और पांच सितारा होटल बनाने वाले देश के 4 करोड़ निर्माण मजदूरों के करीब 20 करोड़ पारिवारिक सदस्य भुखमरी जैसे हालात में जीवन बिता रहे हैं। जबकि केंद्र और राज्य सरकारों की नीतियों के कारण भवन निर्माण कंपनियों और कॉरपोरेट घरानों की आय आसमान छूने लगी है।

गुरमुख सिंह बस्सियां की अध्यक्षता में हुई बैठक में 30 अक्टूबर को रायकोट में होने वाले प्रांतीय सम्मेलन की रणनीति बनाई गई। प्रांतीय आयोजन की तैयारी के लिए प्रांतीय अध्यक्ष दलजीत कुमार गोरा, प्रकाश सिंह बरम्ही, गुरदीप सिंह बुरज हकीमां, प्रीतपाल सिंह बिट्टा, राजजस्वंत सिंह तलवंडी, हरप्रीत सिद्धू, कर्मजीत संही रायकोट, भूपिंदर सिंह गोबिंदगढ़ की अगुवाई में विभिन्न कमेटियों का गठन किया गया। मजदूर नेताओं ने निर्माण श्रमिकों के लिए 1996 में बने कानून को लागू करने, लाभार्थी कार्ड बनाने और निर्माण श्रमिकों की बेटियों के विवाह के लिए राशि तुरंत जारी करने की मांग की। उन्होंने मजदूरों की भलाई के लिए खर्च होने वाले करोड़ों रुपये के निर्माण कंपनियों पर बकाया वसूलने में सरकारों की ढिलाई की जोरदार निंदा की।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**